सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा
वार्षिक चन्दा ... ... ८) रु०
छः माही चन्दा ... ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≈)
Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा की कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए।

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; १२ फ़रवरी, १६३१ | संख्या ८, पूर्ण संख्या २०

अब तो कोई तुम्हें मलाल नहीं? अब तो खुश हो, कि मर गया कोई!!

जो न करना था, कर गया कोई!
वक़्त से पहिले मर गया कोई!
इश्क़ में नाम कर गया कोई!
आ गई मौत, मर गया कोई!!
अब तो कोई तुम्हें मलाल नहीं?
अब तो ख़ुश हो, कि मर गया कोई!
जी उठा कोई देख कर तुमको!
देख कर तुमको मर गया कोई!

पूछते हैं वह, किस तग़ाफ़ुल से
हम यह सुनते हैं, मर गया कोई!!
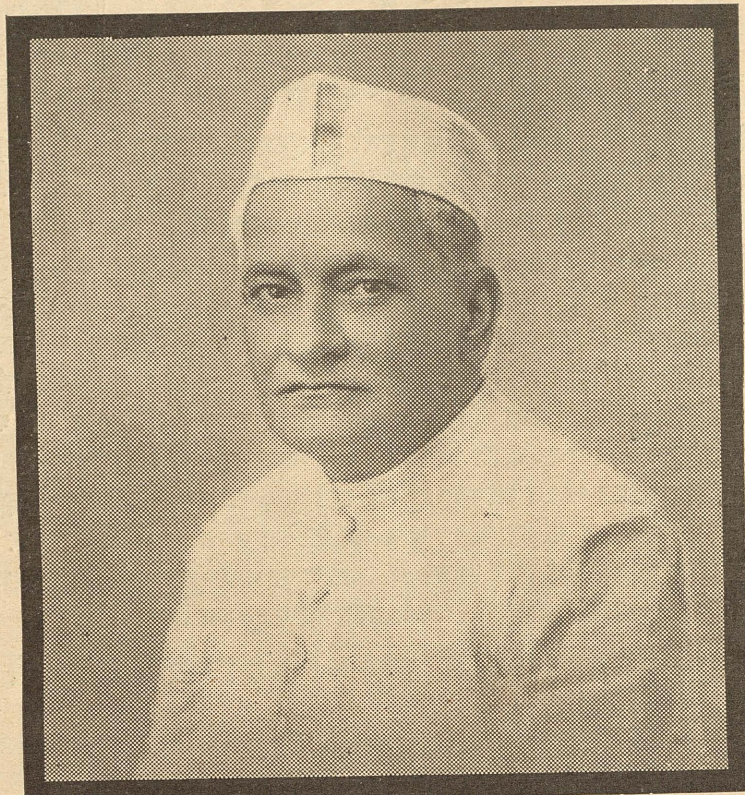
—"बिस्मिल"

थे स्वदेश-सीपी के द्युतिमय—
मोती, थे लालों में लाल,
भरतखण्ड के गहन सिन्धु के—
थे तुम एक रत्न सुविशाल,
तुम नीतिज्ञों के गौरव थे,
राजनीति पटु जन की आन,
भोग-त्याग दोनों की सीमा,
जीवित सरल आत्म-सम्मान!

कारागार-यन्त्रणा पाकर
हुए देश पर तुम बलिदान!

—आ० प्र० श्री०
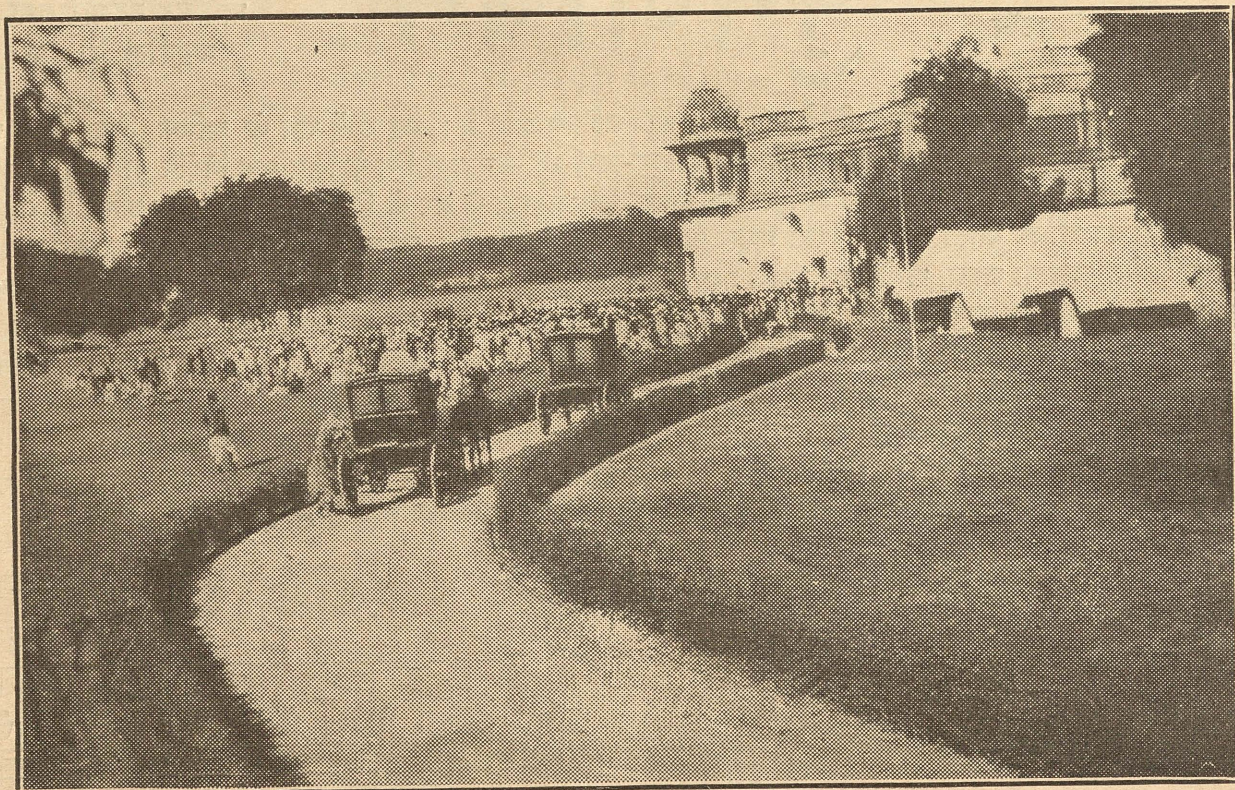
राजा साहब कालाकाँकर के लखनऊ का राजमहल—
जहाँ स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू की मृत्यु उन्हें बर्बस खींच कर ले गई थी

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—१२ फ़रवरी, १६३१ | संख्या ८, पूर्ण संख्या २०

लॉर्ड इर्विन पुलिस के नृशंस अत्याचारों की जाँच नहीं करेंगे !

नेहरू जी के श्राद्ध के दिन भारतवासियों को क्या करना चाहिए ?

"बर्मा-विद्रोह में क्रान्तिकारियों का भी हाथ था"

लाहौर षड्यन्त्रकारियों की प्राण-रक्षा का विशाल आयोजन

क्या वास्तव में प्रधान-सचिव भारतीय नेताओं से मिलने आ रहे हैं ?

बनारस में विलायती कपड़ा बेचने वाले एक मुसलमान का ख़ून

—लाहौर का समाचार है कि वहाँ के प्रमुख नागरिकों, नवजवान भारत-सभा, कॉङ्ग्रेस और अन्य संस्थाओं ने मिल कर 'भगतसिंह कमिटी' की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य लाहौर षड्यन्त्र केस के तीन अभियुक्तों—भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव की फाँसी की सज़ा रद्द करवाने की आयोजना करना है। उनकी फाँसी की सज़ा रद्द करवाने के दो कारण हैं। एक तो यह कि संसार फाँसी की सज़ा को घृणा की दृष्टि से देखने लगा है और वह बर्बरता का चिह्न समझता है और दूसरा यह कि देश में जो सन्धि-चर्चा चल रही है, उसकी सफलता के लिए उनकी मुक्ति अतीव आवश्यक है।

—'हिन्दुस्तान-टाइम्स' के एक विशेष प्रतिनिधि को पता चला है कि इस बात की गर्म अफ़वाह है कि सेक्रेटरी ऑफ़ इण्डिया के कॉङ्ग्रेस-नेताओं से मिलने के सम्बन्ध में, बहुत शीघ्र ही एक सरकारी घोषणा निकाली जायगी। इस अफ़वाह की पुष्टि मि० बेन के, हाउस ऑफ़ कॉमन्स के समक्ष इस कथन से भी होती है कि, गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के कार्यों के विषय में सरकार कुछ दिनों के भीतर ही अपनी नीति प्रकाशित करेगी।

—'हिन्दुस्तान-टाइम्स' के लाहौर के एक सम्वाददाता को विश्वस्तसूत्र से पता चला है कि लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री० जयदेव कपूर और महाबीरसिंह, जिन्हें भगतसिंह के साथ ही सज़ा की आज्ञा सुना दी गई है, ६वीं या १०वीं जनवरी की रात को मुलतान सेण्ट्रल जेल से हटा कर किसी अज्ञात स्थान में भेज दिए गए हैं।

इसी प्रकार न्यू सेण्ट्रल जेल से भी, श्री० विजयकुमार सिंह, श्री० किशोरीलाल, श्री० शिव वर्मा और डॉ० गयाप्रसाद, इन अभियुक्तों में से तीन व्यक्ति हटा कर किसी अज्ञात स्थान में भेज दिए गए हैं। पुराने सेण्ट्रल जेल में केवल कमलनाथ तिवारी ही रह गए हैं।

—आगरे का समाचार है, कि रतौली (फ़िरोज़ाबाद) के ज़मींदार श्री० नारायणसिंह और श्री० महीपालसिंह ने अपनी रैयतों को लगान के लिए सताने अथवा स्वयं सरकारी कर देने के बजाय, घर छोड़ देना ही मुनासिब समझा है। पण्डित एस० के० दत्त पालीवाल की पत्नी श्रीमती सुखदेवी पालीवाल ने भी सरकारी कर नहीं दिया, जिसके फल-स्वरूप पण्डित जी के भाई पं० ईश्वरीप्रसाद की जायदाद ज़ब्त कर ली गई है। लोगों का विश्वास है कि सरकार अब स्वयं किसानों से कर वसूल करेगी।

इतमादपुर तहसील के शेरूपुरा नामक गाँव के किसानों ने एक पाई भी कर न देने का निश्चय कर लिया है। उनका कहना है कि बिना कॉङ्ग्रेस के कहे कर न देंगे।

—धारवाड़ का समाचार है, कि अनकोला ताल्लुके के ६ अन्य पटेलों ने भी इस्तीफ़ा दे दिया है। जिन पटेलों ने अभी तक इस्तीफ़ा दाख़िल नहीं किया है, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जा रहा है। गाँवों में मर्दुमशुमारी का पूर्णरूप से बहिष्कार किया गया है। कहा जाता है, कि सरकार लगान न देने वालों की जायदाद की ज़ब्ती का विचार कर रही है।

लाखों मोती हैं, मगर उस आब का मोती नहीं !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

काम करने वाले उससे काम करना सीख जाएँ,
पाँव मैदाने-सियासत में वह धरना सीख जाएँ !
यूँ निडर होकर, किसी से भी न डरना सीख जाएँ,
देश पर मरना किसे कहते हैं, मरना सीख जाएँ !
जानते हैं अच्छे-अच्छे काम मोतीलाल का
रहती दुनिया तक रहेगा नाम मोतीलाल का !

बाँकपन के साथ थी हर आन मोतीलाल की,
थी समुन्दर पार भी क्या शान मोतीलाल की !
दौलते-दुनिया रही मेहमान मोतीलाल की,
देश-सेवा के लिए थी जान मोतीलाल की !
यूँ तो दुनिया के समुन्दर में कमी होती नहीं !
लाखों मोती हैं मगर उस आब का मोती नहीं !!

एक स्पेशल सब-इन्सपेक्टर ३० पुलिस के जवानों के साथ अनकोला में डेरा डाले हुए है। अब तक केवल एक कार्यकर्ता गिरफ़्तार किया गया है।

—वायसराय ने महात्मा जी के पत्र का जो उत्तर दिया है, उससे नेताओं में निराशा फैल रही है; यद्यपि पत्र अभी गुप्त है तो भी पता चला है कि वायसराय के उत्तर ने सारा गुड़ गोबर कर दिया है। उन्होंने पुलिस के अत्याचारों के सम्बन्ध में जाँच करने से साफ़ इन्कार कर दिया है। कॉङ्ग्रेस के एक ज़वाबदेह व्यक्ति का कहना है कि "वायसराय के उत्तर ने सारा खेल बिगाड़ दिया है।" कहा जाता है कि महात्मा जी इस उत्तर से बड़े असन्तुष्ट हुए हैं।

—बम्बई में कुछ पत्रकारों के समक्ष, सभी सत्याग्रही क़ैदियों के छोड़ दिए जाने के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करते हुए महात्मा जी ने कहा है कि, "सरकार यह नहीं देख रही है, कि वर्तमान आन्दोलन का प्रभाव साधारण जनता पर इतने ज़ोरों से पड़ा है, कि किसी भी नेता का—चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो—उनके लिए एक विशेष कार्यक्रम तैयार करना कठिन है। मेरी समझ में साधारण सत्याग्रही क़ैदियों की रिहाई के बिना, केवल नेताओं की रिहाई बेकार है; और यदि दमन-चक्र को न रोका गया, तो इन साधारण सत्याग्रही क़ैदियों को भी छोड़ने से कोई लाभ नहीं।" भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में आपने कहा कि, "मैं यह साफ़-साफ़ कह देना चाहता हूँ, कि गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में गए हुए अपने मित्रों से सलाह लेने पर यदि इस बात का निश्चय भी हो जाय, कि कॉङ्ग्रेस प्रधान-मन्त्री की घोषणा के आधार पर सरकार के साथ समझौता कर सकती है, तो भी धरना देने के तथा नमक बनाने के अधिकारों को नहीं छोड़ा जा सकता है। दो देशों में, विशेषकर ग्रेट ब्रिटेन और भारत में, कितना ही मेल क्यों न हो, यह सहानुभूति, मादक द्रव्यों का व्यवहार करने के लिए, विदेशी वस्त्र पहनने के लिए, तथा नमक बनाना छोड़ देने के लिए जनता को प्रेरित नहीं कर सकती।"

समझौते के विषय में आपने कहा कि, "यदि सम्मानपूर्वक समझौता हो सके तो मैं समझौते के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मैं उस समझौते से अलग रहूँगा, जिसमें (ऊपर कहे गए) तीनों प्रश्नों को हल नहीं किया जायगा। इसलिए मैं गोलमेज़ परिषद् रूपी वृक्ष की पहचान फल से करूँगा। मैं वास्तविक स्वतन्त्रता चाहता हूँ, उसकी छाया-मात्र नहीं चाहता। और जिस प्रकार डॉक्टर, रोग को अच्छी तरह पहचान करने के बाद तब उसका नाम बतलाता है, उसी प्रकार, गोलमेज़-परिषद् रूपी वृक्ष के फल को, अपनी साधारण ११ शर्तों के प्रकाश में जाँच करने पर, उसके सम्बन्ध में कुछ कहूँगा।"

—काशी का तार है, कि विलायती कपड़ा बेचने वाले श्री० मोहम्मद जान ख़ाँनगा नामक एक पठान को घर जाते समय गोली मार दी गई। उसने अपने मरणासन्न वक्तव्य में एक कॉङ्ग्रेस वालण्टियर को दोषी बतलाया, फल-स्वरूप वालण्टियरों के कप्तान गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ठीक पता नहीं चला है।

—सूरत का समाचार है कि सूरत के ६ ठे डिक्टेटर श्री० छगनलाल झावेरी, एक सभा में डिक्टेटर चुने जाने के बाद ही गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बालासोर का समाचार है कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर, भाषण देने के अभियोग में श्री० घनश्याम महन्ती गिरफ़्तार कर लिए गए।

—उत्कल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सेक्रेटरी श्री० नवकृष्ण चक्रवर्ती को १७ (१) के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—जगदीशपुर (शाहाबाद) का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर वहाँ ८ कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मुज़फ़्फ़रपुर का समाचार है कि मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में ४ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—आरा का समाचार है, कि वहाँ के प्रमुख कार्यकर्त्ता बाबू रामायणप्रसाद और बाबू विन्ध्याचलप्रसाद जो हाल ही में जेल से छूट कर आए हैं, स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में फिर गिरफ़्तार किए गए हैं।

—चाँदनी चौक (कटक) का समाचार है, कि वहाँ की अफ़ीम की दूकान पर धरना देते समय २८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नौगाँव का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर, राष्ट्रीय झण्डा फहराने तथा अन्य प्रकार से समारोह करने के अपराध में ५० स्वयंसेवकों पर लाठी की वर्षा की गई, जिसके फल-स्वरूप अनेक स्वयंसेवक घायल हुए। ७० कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए, जिनमें ६ महिलाएँ भी शामिल हैं। श्रीमती हबीबुन्निसा भी, जिस समय राष्ट्रीय पताका फहराने का प्रयत्न कर रही थीं, गिरफ़्तार कर ली गईं!

—सूरत का समाचार है, कि वहाँ के चौथे सञ्चालक श्री० ईश्वरलाल देसाई गिरफ़्तार कर लिए गए। उनकी गिरफ़्तारी पर श्री० चन्दूलाल कान्तलीवाला ५वें सञ्चालक बनाए गए। किन्तु वे भी ३६ घण्टे के अन्दर ही गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कहवा (बर्दवान) का समाचार है, कि स्वतन्त्रता-दिवस सम्बन्धी एक जुलूस में नारे लगाने के अपराध में दो व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

—दिल्ली का समाचार है, कि वहाँ के बरुआ मोटर वर्क्स पर पिकेटिङ्ग करते समय ५ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—कलकत्ते का समाचार है, कि श्याम बाज़ार के बाबू देवकुमार गुप्त, बाबू सुधीरकुमार घोष तथा श्रीमान धीरेन्द्र नाथ ठाकुर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बोलपुर का समाचार है कि गत २८वीं जनवरी को पुलिस ने श्री० निशापति कानजी के मकान को, जो रवीन्द्र आश्रम से सटा हुआ है, घेर लिया और श्री० सुरेन्द्रचन्द्र मुकर्जी को गिरफ़्तार कर लिया। गिरफ़्तारी का कारण अविदित है।

—कुमिल्ला का समाचार है, कि वहाँ, श्री० सुभाष बोस की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में सभा होने की घोषणा करते समय ३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—झाँसी ज़िले के 'डिक्टेटर' पं० भगवतनारायण भार्गव, श्री० कुञ्जबिहारीलाल वकील, श्री० रुस्तम जी और श्री० कृष्णचन्द्र जी को उकसाहट ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। प्रथम दो पर ३००)-३००) रुपया और दूसरे दो पर ५०)-५०) रुपया जुर्माना भी हुआ है।

ख़बर है कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान-मन्त्री बा० विश्वम्भरदयाल भी गिरफ़्तार कर लिए गए। इनके अतिरिक्त ७ अन्य व्यक्ति भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मद्रास का समाचार है, कि श्री० रामचन्द्र शर्मा की मृत्यु जनरल हॉपिस्पटल में हो गई। वे गत १० वर्षों से पाण्डिचेरी में रहते थे। आप मद्रास जाते समय विल्लुपुरम् में पञ्जाब-षड्यन्त्र सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे।

—मद्रास का समाचार है, कि गोडाउन स्ट्रीट पर १० स्वयंसेवकों ने धरना दिया। कहा जाता है कि पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर उन स्वयंसेवकों को बलपूर्वक हटाया। दो स्वयंसेवकों को चोट आई। वे अस्पताल भेजे गए।

—बाबरपुर (इटावा) के कार्यकर्त्ता श्री० गौरीशङ्कर और श्री० काशीप्रसाद गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

फिर भी उनको बड़ी ज़रूरत थी

[नाख़ुदाए सुख़न हज़रत "नूह" नारवी]

इस जगह भी निशान उनका था,
दिल हमारा मकान उनका था!
प्यारी-प्यारी ज़बान उनकी थी,
साफ़-सुथरा ब्यान उनका था!
थे वह पीराना साल कहने को,
दिल मगर नौजवान उनका था!
दोनों आलम से था निराला रङ्ग,
तीसरा एक जहान उनका था!
उनको एक-एक से ब्बत थी,
उनकी एक-एक को मुरौवत थी!
सारे आलम में, सारी दुनिया में,
उनका शोहरा था, उनकी शोहरत थी!
रह चुके ख़ल्क़ में वह मुद्दत तक,
फिर भी उनकी बड़ी ज़रूरत थी!

* * *

—मेरठ का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि ग़ैर-क़ानूनी संस्था को सहायता पहुँचाने के अभियोग में वहाँ के १६ व्यक्तियों को ६६ माह की कड़ी क़ैद और २०) से २५) रुपए तक जुर्माने की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० देवराज खन्ना तथा श्री० जमुना को विदेशी वस्त्र की गाँठें रोकने के अपराध में १००)-१००) रुपए जुर्माने या ४-४ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। ०राम पाल को बिना प्रकाशक तथा मुद्रक के नाम के पर्चे बाँटने के अभियोग में १ माह की क़ैद की सज़ा हुई है।

—मद्रास का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि मद्रास-सरकार ने "लठैती का मुक़ाबिला कैसे किया जाता है" (How to face lathi charge) नामक एक पुस्तिका को तथा उसके अनुवादों को ज़ब्त कर लिया है।

—सूरत का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि भद्र अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में, बारडोली के कुछ व्यक्तियों को १ से ३ माह तक की सज़ाएँ दी गई हैं। इसके अतिरिक्त सिकर के १, स्याडाला के ३, सेजवाड़ा के ३ तथा मानिकपुर के ६ व्यक्तियों को भी भद्र अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में सज़ाएँ दी गई हैं।

डॉ० हार्डिकर के लेफ़्टिनेण्ट को १०॥ माह की सज़ा

सूरत का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० एकाम्बर अय्यर को, जो हिन्दुस्तानी सेवा-दल के सर्वस्व डॉ० हार्डिकर के लेफ़्टिनेण्ट कहे जाते हैं, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) तथा १७ (२) अभियोगों के अनुसार पृथक-पृथक सज़ाएँ दी गई हैं।

१७ (१) के अनुसार आपको ६ माह की सादी क़ैद और १००) रुपए जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त सज़ा, और १७ (२) के अनुसार ६ माह की सादी क़ैद और ३००) रुपए जुर्माने अथवा ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी। इस प्रकार जुर्माना न देने पर आपको १०॥ मास तक सज़ा भुगतनी पड़ेगी। इस समय आप बीमार हैं, और ये सज़ाएँ बीमारी की हालत में ही दी गई हैं।

—उलुबरिया (बङ्गाल) का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए वहाँ के ६ स्वयंसेवकों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—एटा का २री फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने सोरन के मामले का फ़ैसला कर दिया। महीनों पहले वहाँ की एक अमन-सभा में कुछ लोगों ने धरना दिया था। उसके सम्बन्ध में पुलिस ने गोलियाँ चलाई थीं, जिससे ५ मरे थे और लगभग ५० घायल हुए थे। उस दङ्गे के सम्बन्ध में जो लोग गिरफ़्तार किए गए थे, ५ महीने तक उनका मामला चलता रहा और अन्त में गत ३०वीं जनवरी को उनका फ़ैसला सुना दिया गया है।

श्री० सुरेन्द्रसिंह पचौरी और श्री० बल्लभ मिश्र को ३-३ वर्ष की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा ३-३ माह की अतिरिक्त कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ६ व्यक्तियों को २-२ वर्ष की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा ३-३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

२ मनुष्यों को, जिनमें एक १४ वर्ष का बालक है, ६-६ माह की कड़ी क़ैद, और बाबू पुरुषोत्तमलाल एम० ए० की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती देवी को ६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। बाक़ी ५ छोड़ दिए गए हैं।

—मद्रास का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती लक्ष्मी अम्मल और श्रीमती कमला बाई नाम की दो स्वयंसेविका महिलाओं को १५१ वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—लखीमपुर (खीरी) का २री फ़रवरी का समाचार है, कि उन १४ मनुष्यों में से, जो गत ६ ठीं जनवरी को, दण्ड-विधान की १४३वीं और ३४वीं धाराओं के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, ८ मनुष्यों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) जुर्माने अथवा १-१ माह की अतिरिक्त-क़ैद की सज़ा दी गई।

—अमृतसर का ४ थी फ़रवरी का समाचार है, कि सरदार पूरनसिंह, सरदार कृपालसिंह और कॉमरेड तेजराम को १७ (२) धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—मुज़फ़्फ़रनगर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि बाबू महाबीरप्रसाद को उकसाव-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और २५) रुपए जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ४ महिलाओं को १७ (१) धारा के अनुसार २-२ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

ज़मानत देने की अपेक्षा जेल स्वीकार

लाहौर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि कुलशी-बहिनों को तथा मिस शकुन्तला, मिस अविनाश कुमारी, श्रीमती शकुन्तला चावला और श्री० रामविलास शर्मा को वहाँ के प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट ने, दण्ड-विधान की १०७वीं धारा के अनुसार १०००)-१०००) रुपए की ज़मानत अदा करने की आज्ञा दी। ज़मानत १ वर्ष तक शान्तिपूर्वक रहने के लिए माँगी गई थी। किन्तु अभियुक्तों ने ज़मानत न देकर, जेल ही जाना अच्छा समझा।

प्रत्येक को १-१ साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। सभी महिलाएँ 'ए' श्रेणी में रक्खी गई हैं, पर शर्मा जी को 'बी'श्रेणी में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की गई है।

—चाँदपुर का समाचार है, कि वहाँ के डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने, कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता डॉ० रसिकचन्द्र दे, श्री० हरेन्द्र राउत और श्री० इद्रिस मियाँ को, एक शराब की दूकान के सामने, शराब का बोतल फोड़ने के अभियोग में ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। अभियुक्त इद्रिस मियाँ को एक अलग अभियोग में २ माह की और सज़ा दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी।

—आगरे का १ली फ़रवरी का समाचार है, कि पं० रेवतीशरण शर्मा को, जो जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, दण्ड-विधान की १०८वीं धारा के अनुसार १ साल की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'सी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—बालासोर का समाचार है, कि उत्कल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सेक्रेटरी श्री० नवकृष्ण चक्रवर्ती को १७ (१) धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि सत्याग्रह समिति के डिक्टेटर श्री० नागन्द्रनाथ मुखर्जी को जोड़ाबगान के ४थे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने प्रेस-एक्ट की १२वीं धारा के अनुसार उन्हें ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी है।

—कानपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि बिल्हौर तहसील के श्री० गङ्गाधर और फ़तहचन्द, तहसील अकबरपुर के श्री० रञ्जीतसिंह, श्री० पुत्तूसिंह और श्री० लालसिंह उकसाव-ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कानपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, श्रीमती सरला देवी को, जिन्हें हाल ही में जेल में बच्चा उत्पन्न हुआ था, जो वहीं मर गया, फिर ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

—कानपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि डॉ० धीरेन्द्रनाथ बनर्जी को १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा और १००) रुपए जुर्माने अथवा २ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० रामप्रसाद, श्री० सूरजबली शर्मा, श्री० जगदीशप्रसाद तिवारी, श्री० उमाशङ्कर और श्री० द्वारकानाथ टण्डन को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और ५०)-५०) रुपए जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

५ व्यक्तियों को केवल ३ माह की कड़ी क़ैद, और १३ व्यक्तियों को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और १००)-१००) रुपए जुर्माने की सज़ा अथवा ४-४ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—राजकोट का ५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० प्रभादास अम्बावीदास, श्री०चीनूभाई आत्माराम और श्री० शान्तिलाल भीखाभाई को ६-६ माह की तथा श्री० जेठालाल पुरुषोत्तम, श्री० घनश्याम शुक्ल और श्री० बाबूलाल वेनचन्द को ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

जेल में तकली छीन ली गई

—हलाल (पञ्चमहाल) का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि हलाल तालुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० पन्नालाल मानिकलाल पारिख डिकवा के भद्र-अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में, आधी-रात के समय गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है, कि जिस समय यह आन्दोलन वहाँ शुरू हुआ उस समय आप कहीं दूसरे स्थान को गए हुए थे।

पञ्चमहाल के दूसरे डिक्टेटर श्री० चुन्नीलाल सी० पारिख चनखेड़ा में; लगानबन्दी के विषय में कार्यवाही करते हुए गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तारी के बाद आप हलाल की हिरासत में लाए गए। आप हिरासत में दिन भर तकली कातते रहे। कहा जाता है कि इससे सख़्त नाराज़ होकर सुपरिण्टेण्डेण्ट ने एक कॉन्स्टेबिल को उनसे तकली छीन लेने की आज्ञा दी।

—हलाल तालुक़े का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि 'भील-सेवा मण्डल' के एक प्रमुख सदस्य श्री० अम्बालाल पुरुषोत्तम व्यास डिकवा में आधीरात के समय गिरफ़्तार कर लिए गए। कहा जाता है, कि आपने वहाँ के सत्याग्रह में किसी प्रकार का भाग नहीं लिया है, तो भी आप १४१वीं धारा तोड़ने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—धारवाड़ ४थी फ़रवरी—"बॉम्बे क्रॉनिकल" के एक सम्वाददाता का कहना है, कि धारवाड़ के एक महाराष्ट्री नेता श्री० नृसिंह नारायण भिसे को ६ महीने पहले, एक विद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—सूरत का ५वीं फ़रवरी का समाचार है, कि नमक-क़ानून भङ्ग करने के सम्बन्ध में जलालाबाद के बोदाली नामक एक गाँव का श्री० रामभाई पछाभाई नामक एक किसान गिरफ़्तार किया गया है।

—नागपुर का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि उमरेर के २४ स्वयंसेवकों को ताड़ के वृक्ष काटने के अपराध में ६ महीने से लेकर २½ वर्ष तक की भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दी गई हैं।

—गत २७वीं जनवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि सोराम तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० शिवशङ्कर प्रसाद भारतीय तथा अन्य ५ व्यक्तियों के मामले का फ़ैसला कर दिया गया। श्री० भारतीय और श्री० बृजमोहन को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। रामअवतार नामक एक व्यक्ति को २५) रु० जुर्माना अथवा ६ सप्ताह की क़ैद की सज़ा दी गई। अन्य सभी छोड़ दिए गए।

—कराची का समाचार है, कि कराची सत्याग्रह-समिति के भूतपूर्व डिक्टेटर सेठ हरिदास लालजी को वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट ने क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद और ५००) रुपया जुर्माने की सज़ा दी है।

—झाँसी ज़िले के डिक्टेटर पं० भगवतनारायण भार्गव, श्री० कुञ्जविहारीलाल वकील, श्री० रुस्तम जी और श्री० कृष्णचन्द्र जी को उकसाहट ऑर्डिनेन्स के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। प्रथम दो पर ३००)-३००) रुपए और दूसरे दो पर ५०)-५०) रुपया जुर्माना हुआ है।

—आगरे का समाचार है, कि खुर्जा कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बाबू बालमुकुन्द को ६ माह की सादी क़ैद और २०) रुपया जुर्माना तथा चौधरी बलवन्तसिंह, पं० खानचन्द, श्री० मुकुटलाल, ठा० भोलासिंह तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं को ६-६ माह की कड़ी क़ैद और १०)-१०) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

२७३ गिरफ़्तारियाँ

किशनगञ्ज (पूर्णिया) का एक समाचार है, कि जनवरी के अन्तिम सप्ताहों में वहाँ, २७३ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। ये सभी गिरफ़्तारियाँ लगान मेले के सम्बन्ध में हुई हैं। इनमें २१७ व्यक्ति क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—अहमदाबाद का समाचार है, कि पञ्चमहाल के डिक्टेटर डॉ० मानिकलाल को १ माह की सादी क़ैद की सज़ा और १००) रुपए जुर्माने अथवा १ सप्ताह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ १० स्वयंसेवकों को विदेशी वस्त्र ढोने वाली लॉरी को रोकने के अपराध में ६-६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—गत २८वीं जनवरी का एक स्थानीय समाचार है, कि ग़ैर-क़ानूनी उकसाव के अभियोग में ३ लड़के, जिनकी आयु १३-१४ वर्ष की होगी, मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। इन लोगों पर सोराम पुलिस-स्टेशन के समीप एक सभा में किसानों को उकसाने का अभियोग लगाया गया था।

अभियोग के सम्बन्ध में अदालत के पूछने पर रामखेलावन नामक एक लड़के ने कहा कि, "मैंने सभा में कहा है कि लगान नहीं देना चाहिए। मैं कॉङ्ग्रेस का स्वयंसेवक हूँ, और मेरा विश्वास है कि सरकार को आर्थिक कठिनाइयों में डाल कर स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है।"

आगे उसने कहा कि वह सरकार की आज्ञा मानने के लिए तैयार नहीं है, और क़ानून के विरुद्ध उसने जो कुछ किया है, वह जान-बूझ कर किया है। अन्य लड़कों ने भी यही कहा। मैजिस्ट्रेट ने उनकी अवस्था का विचार कर, केवल अदालत भङ्ग होने तक के लिए, सादी क़ैद की सज़ा दी।

—सोनमगञ्ज का समाचार है, कि वहाँ के सत्याग्रही कार्यकर्त्ता श्री० कृष्णदास दत्त और रमेशरञ्जन दत्त को १७वीं धारा के अनुसार कॉङ्ग्रेस के लिए चन्दे वसूल करने के अपराध में क्रमशः ३ माह और २ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

मैजिस्ट्रेट से कॉङ्ग्रेस के लिए चन्दा माँगने के अपराध में हरकुमार राय नामक एक स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किया गया है।

—आरा का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के सम्बन्ध में वहाँ अनेक गिरफ़्तारियाँ की गईं। डॉ० रघुवरदयाल और श्री० देवरत्न उपाध्याय गत २६वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए। डॉ० रघुवरदयाल के मकान की तलाशी भी ली गई। इसके अतिरिक्त बाबू विन्ध्याचल प्रसाद के मकान की तथा कॉङ्ग्रेस-शिविर और बाल-हिन्दी पुस्तकालय की भी तलाशियाँ ली गईं।

श्री० केदारनाथ वर्मा, श्री० कैलाशपति पाण्डे, श्री० उदयालखराम, श्री० बचालाल और श्री० जगन्नाथसिंह को १७ (१) के अनुसार ४-४ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है।

अस्पताल से ज़बर्दस्ती एक राजनैतिक क़ैदी के मृत शरीर को ले जाने के अभियोग में, बाबू शिवशङ्कर लाल अग्रवाल, बाबू नन्दलाल गुप्त, मौलवी मुहम्मद हसन तथा १२ अन्य व्यक्तियों को १४७वीं धारा के अनुसार १ साल की तथा ४५४वीं धारा के अनुसार ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को २५) रुपया जुर्माना भी हुआ है, जिसके न देने पर १ माह की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

१४ वर्षीय बालक को २ माह की कड़ी क़ैद

अहमदाबाद ६ठी फ़रवरी—'बॉम्बे क्रॉनिकल' का एक सम्बाददाता लिखता है, श्री० चन्द्रवदन चिम्मनलाल नामक एक १४ वर्षीय बालक को, जो 'सत्याग्रह समाचार' बेचने से अभियोग में गिरफ़्तार किया गया था, १० वें ऑर्डिनेन्स के अनुसार २ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

सर माधवराव की पोती गिरफ़्तार

मद्रास का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि रतन-बाज़ार की विदेशी कपड़े की दूकानों पर ८ स्वयंसेवकों ने सदा की भाँति धरना दिया। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर ४ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। जिनमें श्रीमती लक्ष्मणराव और स्वर्गीय सर माधवराव की पौत्री श्रीमती हरिराव भी शामिल हैं। अन्य स्वयंसेवकों को बलपूर्वक हटाया गया।

—अहमदाबाद का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि शराब की दूकानों पर धरना देते समय ६ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए।

—मोतिहारी का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में श्री० विश्वनाथप्रसाद, चन्द्रिकाप्रसाद, मधुसूदनप्रसाद, हरिनन्दनप्रसाद, विद्यानन्द, रामिखाप्रसाद, नथुनीप्रसाद, जमनाप्रसाद, ठाकुरप्रसाद, सरजूप्रसाद, बलीराम, लक्ष्मीप्रसाद, ब्रह्मदेवप्रसाद, मोहनप्रसाद, कामताप्रसाद राय, जगतपति, कृष्णदेवप्रसाद और बेनीमाधव को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। शुकदेवप्रसाद, मिश्रीप्रसाद और बलदेवप्रसाद को ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कानपुर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० कुञ्जबिहारीलाल अग्रवाल, श्री० माखनलाल, श्री० अजयकुमार घोष और श्री० राधामोहन बाजपेयी को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

श्री० कालिकाप्रसाद और श्री० कञ्चनसिंह को पिकेटिङ्ग के लिए ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—छपरे का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि थाना कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी पं० रघुनाथ आचारी, श्री० राजारामसिंह, श्री० मथुरासिंह तथा सात अन्य स्वयंसेवकों को, जो स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, १६ (१) धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नई दिल्ली का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि हिन्दी दैनिक 'अर्जुन' के सम्पादक श्री० रामगोपाल को १२४ 'ए' धारा के अनुसार ६ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

—पेशावर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एक सभा में ख़ुफ़िया पुलिस के एक रिपोर्टर को पीटने के अभियोग में ११ व्यक्तियों को १-१ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—फ़रीदपुर का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि द्विजेन्द्रनाथ बनर्जी नामक एक कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक, जो हाल ही में ६ माह की क़ैद काट कर छूटे थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—सिलहट का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि दक्षिणी सिलहट कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० हेमन्तकुमार गुप्त गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस ने मौलवी बाज़ार में उनके घर की तलाशी ली। कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं पाई गई।

—बर्दवान का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० नृपेन्द्रभूषण भट्टाचार्य, एक आबकारी की दूकान जल जाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

आश्रम जला दिया गया

मोतिहारी का ३री फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ के ६ठे 'डिक्टेटर' बाबू मुकुटधारी सिंह को ८ माह की, श्री० रामवचनसिंह, श्री० गोपाल जी मिश्र, श्री० रामारशी देव, श्री० रघुनाथ सिंह, श्री० महाराजसिंह, श्री० नागेश्वरप्रसाद को ६-६ माह की तथा श्री० चुन्नी साह को २ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। सबों को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार सज़ाएँ दी गई हैं। कहा जाता है कि रघुनाथपुर आश्रम (सुगौली) जला डाला गया है।

—कलकत्ते का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'नायक' के सम्पादक श्री० सुरेन्द्रनाथ सिंह और मुद्रक श्री० के० शोरोदलाल दत्त को एक लेख के सम्बन्ध में १-१ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—वैद्यपुर (बर्दवान) का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वैद्यपुर यूनियन कॉङ्ग्रेस कमिटी के कार्यकर्त्ता श्री० तुलसीचरण बनर्जी और शशिभूषण दास, दण्ड-विधान की ४३६ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। ये मादक द्रव्यों की दूकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बम्बई का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि पीठा स्ट्रीट पर धरना देते समय, रामचन्द्र राघवेन्द्र देसाई और शिवप्पा पावडप्पा नामक दो कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इन लोगों ने दो पियक्कड़ों की आदत छुड़ाने की कोशिश की थी। इन्हें १७ (१) धारा के अनुसार ४-४ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—बम्बई का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि उर्दू दैनिक 'हिलाल' के मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक श्री० ग़ुलाम अहमद 'आरज़ू' को, जो २३वीं जनवरी को गिरफ़्तार किए गए थे, राजद्रोह के अभियोग में १॥ वर्ष की कड़ी क़ैद और ६००) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई है।

आपने अपने पत्र में 'बरबादी की आग' और 'सहनशीलता का अन्त' नामक दो लेख निकाले थे।

आपने अपने बयान में कहा, कि उन लेखों में, जो राजद्रोहात्मक बताए जाते हैं, उन्होंने केवल सच्ची बातों का बयान किया है। देश में दमन जारी है और पुलिस भारत के कोने-कोने में लाठी का प्रहार कर रही है, इस सम्बन्ध में उन्होंने दो मुसलमान स्वयंसेवकों का उदाहरण दिया, जो बाबू गेनू के शव के जुलूस में पीटे गए थे और जो अस्पताल में मर गए।

—जलगाँव का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ श्री० अन्ना साहब दस्ता ने, श्री० मुरली धरवन्त दस्ता ने और भुसावल के एक वकील श्री० गोगाते, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७ (१) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कराची का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि 'कराची कॉङ्ग्रेस बुलेटिन' के सम्पादक श्री० कुमार लालचन्द को, जो एक सप्ताह पहले गिरफ़्तार किए गए थे, ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—ढोलका का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि अहमदाबाद ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० नवनीतलाल चोकशी, ढोलेरा सत्याग्रह-समिति के १४वें 'डिक्टेटर' श्री० गोकुलदास गोवर्धनदास, भारतीय दण्ड-विधान की ११७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ढोलका ताल्लुक़ा समिति ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई है, और पुलिस ने उस पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

—लखनऊ का समाचार है, कि पण्डित जयदयाल अवस्थी की धर्मपत्नी श्रीमती कान्ति अवस्थी को ६ माह की सादी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने अथवा १ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

लगानबन्दी के लिए मैजिस्ट्रेट गिरफ़्तार

पेशावर का ६ठी फ़रवरी का समाचार है, कि चारसदा के अन्तर्गत बुट्टाधरान नामक गाँव के जेलदार और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, ख़ाँ साहब अब्दुल्लाशाह, भूमि-कर न देने के कारण गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—बैरीसाल का ६ ठी फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीयुत पुलिनबिहारी सेन के घर पर पुलिस ने धावा किया। कहा जाता है कि तलाशी के बाद, पुलिस ने उन्हें बङ्गाल-ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिया है।

—अहमदाबाद का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ ३ व्यक्तियों को १०वें ऑर्डिनेन्स की १८वीं धारा के अनुसार ५-५ माह की क़ैद की सज़ा दी गई है। इनमें से एक को १००) रुपया जुर्माना भी किया गया है, जिसके न देने पर १ माह की अतिरिक्त सज़ा उसे भुगतनी पड़ेगी।

—मद्रास का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीमती हीराराव और श्रीमती कमला बाई को जो, पहले ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट थीं, ग़ैर-क़ानूनी संस्थाओं की सदस्या होने के अपराध में ६-६ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० सुन्दरम् को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अलीगढ़ का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि कोरियागञ्ज में विदेशी वस्त्र की दूकानों पर धरना देते समय २८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं। जेल में ही इनके मामले का फ़ैसला किया जायगा।

—कानपुर का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्रीयुत गौरीशङ्कर, श्री० शिवविलास, श्री० गयाप्रसाद और श्री० जानकीप्रसाद को ३-३ माह की कड़ी क़ैद और २०)-२०) रुपए जुर्माने अथवा १-१ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० रामभरोस और श्री० परशुराम को ३-३ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कानपुर का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० सरदारसिंह, श्री० अशर्फ़ीलाल, श्री० मन्नालाल और श्री० छेदीलाल, बिलहौर तहसील में, क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। इस एक्ट के अनुसार १९३१ में अब तक यहाँ ५८ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

कानपुर का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि डेरापुर में गोली चलने के सम्बन्ध में, होरीलाल, कन्हैयालाल, बद्रीप्रसाद, चन्द्रिकाप्रसाद, रामाधार, गुलजारीलाल, मदारीलाल, केदारनाथ, छेदीलाल, घसीटे और बाट को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

कानपुर, ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि श्री० सोहनलाल, जगत नारायण, अर्जुन, रामेश्वर, नन्हू, लल्लू, रामभरोसे, और हरप्रसाद, बिलहौर तहसील के सहबासू नामक गाँव में, झण्डा सत्याग्रह के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बम्बई का समाचार है, कि प्रोफ़ेसर जी० आर० घरपुरे को, जो २८वीं जनवरी को १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए थे, प्रत्येक अभियोग के लिए ९ माह की कड़ी क़ैद और ३००) रुपए जुर्माने अथवा ३ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा, उनके दो भाषणों के सम्बन्ध में दी गई है। दोनों सज़ाएँ साथ-साथ चलेंगी।

—बेतिया का समाचार है, कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी बाबू प्यारेलाल को १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर वहाँ २२ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं, जिनमें दो छोटे-छोटे लड़के भी हैं।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

षड्यन्त्रकारियों को गोली से उड़ाने की विकट योजना

पुलिस वालों ने ज़बर्दस्ती शनाख़्त कराने की चेष्टा की

इक़बाली-गवाह की स्त्री गवाहों के कटहरे में

"यदि मैं शनाख़्त न करता, तो पुलिस वाले मार-मार कर मेरा कचूमर निकाल देते !!"

—इन्द्रपाल

श्रीयुत सज्जनसिंह को फाँसी-दण्ड :: "मैं अपील नहीं करना चाहता"

लाहौर षड्यन्त्र-केस

लाहौर २री फ़रवरी का समाचार है, कि आज सेण्ट्रल जेल में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने नए षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों को पेश किया गया। अभियुक्तों ने कचहरी में आकर राष्ट्रीय गीत गाए और क्रान्तिकारी नारे लगाए।

श्री० इन्द्रपाल का बयान

इक़बाली गवाह इन्द्रपाल ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि जब श्रीयुत यशपाल कराची से वापस आया तो वह मुझे श्रीयुत गुलाबसिंह की बैठक पर मिला। उसके पास एक सूट-केस था, जिसमें बहुत सी शीशियाँ थीं। मुझे श्रीयुत यशपाल ने बताया, कि यह सामान इस्लामिया कॉलेज से चुराया गया है।

कुछ समय के बाद श्रीयुत यशपाल, श्रीयुत अमीरचन्द तथा एक और नवयुवक एक मोटर-साइकल लाए। श्रीयुत यशपाल ने कहा कि इस मोटर-साइकल को मरम्मत करवाना है। श्री० अमीरचन्द वह मोटर साइकल मरम्मत के लिए मिस्त्री को दे आया।

फ़रवरी के अन्त में श्री० यशपाल ने मुझे लायलपुर भेजा। मैं वहाँ जाकर पुरानी सराय में ठहरा। रात के समय मुझसे श्री० हंसराज मिलने आया।

मैंने एक बण्डल, जो श्री० यशपाल ने मुझे दिया था, श्री० हंसराज को दे दिया। मैंने श्री० हंसराज को यह भी बताया कि श्री० यशपाल ने गैस बनाने वाली दवाई का प्रबन्ध कर लिया है। श्री० हंसराज के साथ एक और नवयुवक भी मुझे मिला था, परन्तु वह इस समय अभियुक्तों के कटहरे में नहीं है। मैं जब पुलिस की हिरासत में था तो पुलिस वालों ने मुझे श्री० धर्मवीर अभियुक्त को शनाख़्त करने को कहा था। तब मैंने पुलिस के डर से वैसा ही किया।

जज—क्या तुम्हें कहा गया था, कि श्री० धर्मवीर की शनाख़्त करो?

गवाह—हाँ, मुझे पुलिस अफ़सरों ने कहा था, कि इसकी शनाख़्त करनी है।

जज—आपने ऐसा क्यों किया!

गवाह—मुझे वादा-मुआफ़ी का लालच दिया गया था। इसलिए मैंने ऐसा किया।

मैंने इक़बाली गवाह बनना, इसलिए स्वीकार नहीं किया था, कि मैं झूठी गवाही देकर निर्दोष नवयुवकों का ख़ून कराऊँ। परन्तु उस समय यदि मैं शनाख़्त न करता तो मेरी शामत आ जाती। पुलिस वाले मार-मार कर मेरा कचूमर निकाल देते।

जज—क्या आपने गिरफ़्तारी से पहले कभी श्री० धर्मवीर अभियुक्त को देखा था?

गवाह—नहीं।

जज—आपने श्री० धर्मवीर अभियुक्त को कब देखा?

गवाह—पहले-पहल मुझे श्री० धर्मवीर क़िलाशाही में बड़ी दूर से दिखाया गया। वहाँ से मैं उसे अच्छी तरह से नहीं देख सका। इसलिए मैंने पुलिस-अफ़सरों को कहा कि इसे मेरे पास लाया जाए। चुनाँचे पुलिस वाले उसे मेरे पास ले आए। और मैंने उसे सहज ही में शनाख़्त कर लिया।

जज—क्या आपने तकलीफ़ों से डर कर यह बयान दिया था?

गवाह—मैंने तकलीफ़ों से डर कर बयान नहीं दिया था, बल्कि मेरे साथ वादामुआफ़ी की प्रतिज्ञा की गई थी, इसलिए मैंने ठीक-ठीक बयान दे दिया था। मुझे यह कदापि ज्ञात नहीं था, कि प्रतिज्ञा करने पर भी मुझे झूठ बोलने को विवश किया जाएगा।

वकील सफ़ाई—अभियुक्त श्री० धर्मवीर का बयान भी ले लिया जाय। जिससे यह सिद्ध हो सके, कि वहाँ पर अभियुक्त को इक़बाली गवाह को दिखाया गया था।

सरकारी वकील—इस समय अभियुक्त का बयान लेना उचित नहीं। इक़बाली-गवाह पर जिरह करके यह सिद्ध किया जा सकता है कि उसने अभियुक्त श्री० धर्मवीर को देखा था।

श्री० धर्मवीर का बयान

इक़बाली गवाह को कचहरी से बाहर भेज दिया गया और अभियुक्त श्री० धर्मवीर का बयान आरम्भ हुआ।

अभियुक्त ने कहा कि मैं वह स्थान दिखा सकता हूँ, जहाँ पर मुझे इक़बाली गवाह को दिखाया गया था। क़िले में एक बेरी का वृक्ष है, पास ही एक घर है, जहाँ पर लोग निमाज़ पढ़ते हैं। उसके दाहिनी ओर शौचालय है। मुझे सैयद अहमदशाह, हथकड़ी लगा कर ले गया था।

इक़बाली गवाह ने अभियुक्त के इस बयान का समर्थन किया। अपना बयान जारी रखते हुए गवाह ने कहा—श्री० प्रेमनाथ फ़रार अभियुक्त मेरे मकान पर आया करता था। वह प्रायः वैज्ञानिक यन्त्र तथा दवाइयाँ ख़रीद कर लाया करता था। कई बार गैस बनाने का उद्योग किया गया, परन्तु सफलता नहीं हुई।

एक दिन एक व्यक्ति, जिसका पार्टी-नाम 'आसफ़' था, मेरे मकान पर आया। आसफ़ का असली नाम मुझे विदित नहीं। श्रीयुत भगवतीचरण तथा हंसराज उस समय मेरे मकान पर थे। आसफ़ को एक सप्ताह पहले मैंने अपनी बैठक पर देखा था। वह व्यक्ति मुसलमान नहीं था। क्योंकि मैंने कभी उसे अल्लाह का नाम लेते नहीं सुना था। इसकी आयु २४, २५ वर्ष के लगभग थी। वह पञ्जाबी और उर्दू अच्छी तरह नहीं बोल सकता था, अङ्गरेज़ी बहुत तेज़ी से बोलता था। वह श्री० यशपाल के लिए चाय पीने के बर्तन लाया था।

३री फ़रवरी को इक़बाली गवाह ने बयान जारी रखते हुए कहा, कि मार्च के अन्तिम सप्ताह में यशपाल मुझे लायलपुर ले गया। वहाँ पर हम हंसराज से मिले। हंसराज ने हमको एक गुलदस्ता दिखाया और बताया, कि इस गुलदस्ते का ऊपर का भाग काट कर नीचे के भाग से बम का खोल बनाया जायगा। इस खोल को सात भागों में विभाजित किया जायगा। जब बम चलेंगे तो इसके सात टुकड़े हो जायँगे। हमने गुलदस्ते की स्कीम को पसन्द किया और दूसरे दिन लाहौर वापस आ गए।

सरदार भगतसिंह को छुड़ाने का उद्योग

इन दिनों भी यशपाल मेरे ही साथ रहता था। एक दिन यशपाल ने मुझे कहा कि पार्टी ने जेल-एक्शन करने की आयोजना की है! जेल-एक्शन का अर्थ यशपाल ने मुझे बताया, कि सरदार भगतसिंह, श्रीयुत दत्त और इनके अन्य साथियों को छुड़ाना है। इस एक्शन के लिए एक ऐसी गैस तैयार करनी थी, जिससे सारे पहरेदार, सिपाही और जेल लोग बेहोश हो जायँ। अभियुक्तों को दूसरी गैस सुँघा कर होश में रखने का विचार था।

"गोली से उड़ाया जायगा"

यशपाल ने मुझे बताया, कि उन अभियुक्तों को, जिन्होंने लाहौर षड्यन्त्र केस में इक़बाली बयान दिए हैं या किसी दूसरे प्रकार से पुलिस की तफ़तीश में सहायता की है, उनको गोली से उड़ा दिया जायगा। जिन अभियुक्तों को प्राण-दण्ड दिया जाना था, उनमें श्रीयुत सुखदेव, जिनको फाँसी का दण्ड मिला है, उनका नाम उल्लेखनीय है। अमीरचन्द अभियुक्त को कचहरी का निरीक्षण करने के लिए, कई बार भेजा गया। मैं भी प्रायः उसके साथ जाया करता था। हमने कचहरी का एक नक़शा तैयार किया। परन्तु गैस बनाने में असफलता हुई। इसलिए जेल-एक्शन कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया। गवाह ने कहा कि निम्न-लिखित अभियुक्तों को छुड़ाने का निश्चय था। सरदार भगतसिंह

उर्फ़ रणजीत, श्री० प्रतापसिंह उर्फ़ कुन्दनलाल, श्री० डॉक्टर गयाप्रसाद, श्री० कमलनाथ तिवारी, श्री० जितेन्द्रनाथ सान्याल, श्री० अजय कुमार घोष, मास्टर आज्ञाराम, श्री० विजय कुमार सिन्हा, श्री० किशोरीलाल, श्री० प्रेमदत्त, श्री० महाबीर सिंह, श्री० राजगुरु, श्री० बटुकेश्वर दत्त। बाक़ी अभियुक्तों को गोलियों से उड़ाने का निश्चय किया गया था।

एक दिन श्री० हंसराज मेरे पास आया और उसने कहा कि यशपाल मुझ पर कुछ नाराज़ है। इसलिए मुझे किसी सीनियर मेम्बर से मिलाओ। मैंने उसे श्री० भगवतीचरण से मिला दिया। यशपाल मुझ पर बहुत नाराज़ हुआ और मुझे गोली से उड़ा देने की धमकी दी।

सरदार भगतसिंह को विप्लव-दल का वचन

श्री० भगवतीचरण ने हमें एक दिन बताया, कि जब श्री० सरदार भगतसिंह तथा श्री० बटुकेश्वर दत्त को एसेम्बली में एक्शन के लिए भेजा था तो उनसे कहा गया था, कि तुमको बलपूर्वक पुलिस के क़ब्ज़े से निकाल लिया जायगा। पार्टी जो वचन दे चुकी है, उसे पूरा करने का विचार कर रही है। इसलिए यह कार्य शीघ्र ही किया जायगा।

४थी फ़रवरी को इक़बाली गवाह ने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, कि मेरे मकान पर श्री० भगवतीचरण, यशपाल, शिव तथा मेरा छोटा भाई दीनानाथ रहते थे। कभी-कभी श्री० दुर्गादेवी, श्री० धनवन्तरी तथा सिराजउद्दौला आया करते थे। सिराजउद्दौला श्री० सुखदेवराज का पार्टी-नाम था। श्री० प्रेमनाथ भी कभी-कभी वहाँ आया करता था। मैंने उस मकान पर आना-जाना बन्द कर दिया, क्योंकि वहाँ सारा दिन साइकलों का ताँता लगा रहता था।

एक दिन मैंने उस मकान पर एक लड़की को देखा। यशपाल ने कहा, इस लड़की को बहुत छुपा कर लाहौर के बाहर कहीं रक्खा जायगा। मैं प्रेम के साथ रावलपिण्डी लड़की का प्रबन्ध करने गया, परन्तु सफल न हुआ। एक दिन मैंने एक और अपरिचित लड़का, जिसकी आयु १६-१७ वर्ष की होगी, मकान पर देखा। उसको "लॉट" के नाम से पुकारा जाता था। यह लड़का श्री० सुखदेवराज के साथ आया था। कुछ दिनों, बाद श्री० भगवतीचरण के आदेशानुसार मैं लायलपुर श्री० हंसराज से बम के खोल लेने के लिए गया। श्री० हंसराज, श्री० अमीरचन्द और मैं तीन बक्सों में सामान बन्द करके लाहौर लाए। उस समय मकान पर श्री० भगवतीचरण तथा अन्य मेम्बर उपस्थित थे। सब ने बम के खोल देखे और पसन्द किए।

६वीं फ़रवरी को ट्रिब्यूनल के सम्मुख लाहौर षड्यन्त्र-केस की कार्यवाही प्रारम्भ होने पर इन्द्रपाल ने कहा, कि हंसराज ने मुझसे कहा, कि मुझे चन्द्रशेखर आज़ाद और भगवतीचरण ने पञ्जाब का सञ्चालक नियुक्त किया है।

पुलिस ने अभियुक्तों के बयान लिखे

कुछ दिनों के बाद हरिराम और कृष्णगोपाल अभियुक्त लाहौर आए और मुझसे मिले। मैंने जो यह बयान दिया था, कि वे पार्टी सम्बन्धी कार्य से लाहौर आए थे, ग़लत है। बात यह थी, कि पुलिस ने बयान लिखे थे और मैंने वे ही मैजिस्ट्रेट के सामने दुहरा दिए थे।

मि० सलीम—क्या तुम्हारा मतलब यह है कि कृष्णगोपाल, हरिराम, जहाँगीरीलाल और महराजकिशन पार्टी के मेम्बर नहीं थे ?

मुख़बिर ने कहा कि बाद में जहाँगीरीलाल पार्टी में सम्मिलित हो गए थे। मैं महराजकिशन को नहीं जानता। हरिराम और कृष्णगोपाल पार्टी के सदस्य नहीं थे। क्योंकि वे पार्टी के नियमों के अनुसार उसमें सम्मिलित नहीं किए जा सकते थे।

प्र०—फिर वे गिरफ़्तार क्यों किए गए थे ?

उ०—पुलिस ने ऐसे ही एक व्यक्ति को अपने जाल में फँसाने की कोशिश की थी, जिसका थोड़ा भी सम्बन्ध पार्टी के किसी सदस्य से था।

मि० सलीम—पुलिस ने तुम्हारे और रूपचन्द के भाई को क्यों गिरफ़्तार नहीं किया ?

उ०—मेरा भाई सरकारी गवाह बना लिया गया था और इस प्रकार वह पुलिस का मतलब सिद्ध कर सकता था। रूपचन्द का भाई उम्र में बहुत छोटा था।

प्र०—तुम यह किस प्रकार कहते हो कि हरिराम और कृष्णगोपाल पार्टी के सदस्य नहीं बनाए जा सकते थे ?

उ०—पार्टी में सम्मिलित होने के लिए सदस्य की आयु १८ और २५ वर्ष के अन्दर होनी चाहिए, परन्तु हरिराम की उमर उससे ज़्यादा थी। एक नियम यह भी था कि कोई सरकारी नौकर पार्टी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता था। कृष्णगोपाल सरकारी नौकर था और इसलिए वह पार्टी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता था।

इसके बाद मुख़बिर ने कहा, कि कोई भी सदस्य पार्टी में ३५ वर्ष की आयु तक रह सकता था। नियम प्रकाशित नहीं किए गए थे, सञ्चालक के पास रहते थे। लाहौर षड्यन्त्र-केस के बाद नियमों में परिवर्तन किया गया था और उन परिवर्तित नियमों के अनुसार कोई भी सदस्य उन्हीं बातों के सम्बन्ध में जान सकता था, जिनका उससे ख़ास सम्बन्ध था। यह नियम इसलिए बनाया गया था कि यदि कोई सदस्य गिरफ़्तार हो जाय तो वह पार्टी के अन्य सदस्यों को कार्यवाही का भण्डा न फोड़ सके, जैसा कि पहले षड्यन्त्र केस में हंसराज और फणीन्द्रनाथ मुख़बिरों ने किया था। नियम बड़ी सख़्ती से पाले जाते थे।

इसके बाद मुख़बिर ने कहा कि शिव, जो लापता है, मेरे पास आया, मुझसे बम और रिवॉल्वर लाने के लिए कहा। मैं जहाँगीरीलाल के घर गया और मैंने एक ट्रङ्क में एक रिवॉल्वर और आठ बम बन्द कर, वह शिव को दे दिया। २८ वीं मई को जब मैं एस० डी० स्कूल अपने भाई को देखने जा रहा था, तब शिव रास्ते में मुझसे मिला और उसने मुझसे कहा कि भगवतीचरण, सुखदेवराज और शिव के साथ रावी के तट पर एक बम की परीक्षा करने गया था। बम भगवतीचरण के हाथों में ही फट पड़ा था और वह उससे सख़्त घायल हो गया था। सुखदेव को भी चोट पहुँची थी। मैं शिव के साथ रावी के उस पार ६७ नम्बर के पत्थर (सीमा) के पास गया और वहाँ भगवतीचरण को हाथ में एक पिस्तौल लिए घायल पड़ा देखा। भगवतीचरण ने अपने चङ्गे होने की निराशा प्रकट की। मैं शिव की बाईसिकल पर भगवतीचरण के लिए दवाई और रुई लेने शहर आया ! मैंने अपनी आत्म-रक्षा के लिए शिव से एक रिवॉल्वर भी ले ली थी। गुलाबसिंह, हंसराज और अन्य व्यक्ति बैठक में थे और शिव से घटना का हाल सुन चुके थे। आवश्यक सामान लेकर मैं गुलाबसिंह और रूपचन्द के साथ वापस गया। हंसराज पार्टी का सञ्चालक था और इसलिए वह मेरे साथ नहीं गया।

जलपान के पश्चात् अपना बयान प्रारम्भ करते हुए इन्द्रपाल ने कहा, कि एक दिन मैंने दो ऑफ़िसरों को हरिराम के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए सुना। एक ऑफ़िसर ने कहा कि हरिराम हिन्दू-मुस्लिम दङ्गे में बच गया था, उसे इस मामले में अब अवश्य फँसाना चाहिए। फिर उसने उपर्युक्त घटना के सम्बन्ध में कहा, कि मेरे साथी भूल कर मिण्टो-पार्क में चले गए। जब मैं वहाँ पहुँचा तब एक कॉन्स्टेबिल ने उनसे उनके वहाँ बैठने का कारण पूछा। मैंने उसे एक सिगरेट देकर वहाँ से हटा दिया। सवेरे शिव मेरे पास आया और उसने कहा, कि मेरे आने के एक घण्टे बाद भगवतीचरण की मृत्यु हो गई। शिव ने यह भी कहा कि उसका शव जङ्गल में दफ़ना दिया गया है। उसने यह भी कहा कि भगवतीचरण के साथ सुखदेव रावी गए थे और दोनों ने अपनी साइकिलें मल्लाह के पास छोड़ दी थीं। सुखदेवराज का नाम सुनने का यह मेरा पहला अवसर था। शिव ने मुझसे मल्लाह के पास से साइकिलें लाने और उसे कुछ इनाम देने के लिए कहा। मैंने साइकिलें लाकर सुखदेव को दे दीं। मैं जहाँगीरीलाल के यहाँ गया और उसे भगवतीचरण की मृत्यु का सारा हाल सुना दिया।

इसके बाद केस स्थगित कर दिया गया।

* * *

श्री० सज्जनसिंह को फाँसी की सज़ा

लाहौर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि आज मि० गोरडन वाकर, सेशन्स जज ने श्री० सज्जनसिंह को मिसेज़ कर्टिस की हत्या के अपराध में फाँसी की सज़ा सुना दी।

अभियुक्त को कहा गया, कि यदि वह चाहे तो हाईकोर्ट में एक सप्ताह के भीतर अपील कर सकता है। परन्तु अभियुक्त ने मुस्कुराते हुए कहा, कि वह अपील करना नहीं चाहता।

पाठकों को याद होगा, कि गत १३ जनवरी को अभियुक्त ने दो बजे दोपहर के कैप्टन कर्टिस के बँगले में घुस कर मिसेज़ कर्टिस तथा उसके दो बच्चों पर तलवार से आक्रमण किया था। सुना गया है, कि अभियुक्त ने बँगले में घुस कर कहा था कि मैं 'कॉङ्ग्रेस बाबा' हूँ और मैं जनरल की हत्या करने को आया हूँ। आक्रमण के फल-स्वरूप मिसेज़ कर्टिस का तो देहान्त हो गया, परन्तु उनके दोनों बच्चे बच गए। कैप्टन कर्टिस अपने बच्चों सहित इङ्गलैण्ड को रवाना हो गए हैं।

* * *

"हमने हारना नहीं सीखा"

सरदार टहलसिंह को सात वर्ष की कड़ी सज़ा

लाहौर का समाचार है, कि सरदार टहलसिंह को पुलिस ऑफ़िसर की हत्या के प्रयत्न के अभियोग में एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० ई० एस० लुईस ने सात वर्ष का कठिन कारावास का दण्ड दिया है। घटना का सार इस प्रकार है : ४थी नवम्बर को पुलिस को इस बात की इत्तिला मिली कि धरमपुर गाँव में कुछ षड्यन्त्रकारी ठहरे हुए हैं। यह समाचार पाकर पुलिस के बहुत से कॉनिस्टबिलों और ऑफ़िसरों ने गाँव को घेर लिया। गाँव में उस समय विश्वेश्वरनाथ और सरदार टहलसिंह थे, जिन्हें गवर्नमेण्ट षड्यन्त्रकारी दल का समझती थी। विश्वेश्वरनाथ की गिरफ़्तारी के लिए गवर्नमेण्ट ने पाँच सौ रुपयों के पुरस्कार की घोषणा की थी और सरदार टहलसिंह को वह नए षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में गिरफ़्तार करना चाहती थी। दोनों अपने हाथों में पिस्तौल और चाक़ू लेकर बाहर निकल आए। और जब उनसे अपने आपको पुलिस के हवाले करने के लिए कहा गया, तब टहलसिंह ने उत्तर दिया कि 'हमने हारना नहीं सीखा'। यह उत्तर सुन कर पुलिस ने गोली चला दी और विश्वेश्वरनाथ की वहीं मृत्यु हो गई और सरदार टहलसिंह घायल हो गए। उन पर हत्या के प्रयत्न और बिना लाइसेन्स के अस्त्र रखने के अभियोग लगाए गए थे और उन्हीं के अनुसार उन्हें उपर्युक्त दण्ड दिया गया है।

* * *

बम्बई षड्यन्त्र-केस

बम्बई ३१वीं जनवरी का समाचार है, कि आज षड्यन्त्र-केस के निम्न-लिखित अभियुक्तों को श्री० एच० पी० एच० दस्तूर चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। (१) श्री० गणेश रघुनाथ वैशम्पायन, (२) श्री० जनार्दन बापट, (३) श्री० पुरुषोत्तम बरवे, (४) श्री० शिवराम देवधर, (५) श्री० सदाशिव के० उपाध्याय, (६) श्री० विष्णु जी धामनकर तथा (७) श्री० शङ्कर जेशिन्दे। इस मामले में निम्न-लिखित अभियुक्त अभी तक फ़रार हैं (१) श्री० सुखदेवराज उर्फ़ बुद्धिमान उर्फ़ अर्जुन, (२) श्रीमती दुर्गादेवी उर्फ़ शारदा, (३) श्री० स्वामी राव उर्फ़ एस० एम० राव उर्फ़ नाना साहब, (४) श्री० विश्वनाथ राव वैशम्पायन, और (५) श्री० पुरुषोत्तम सुत्तर!

मि० गर्वे ने गवाही देते हुए कहा, कि मैं फ़ोर्ट-विभाग का Excise Inspector हूँ। मुझे याद है, कि नौ अक्टूबर १९३० की रात को लमिङ्गटन रोड की पुलिस-चौकी पर गोली चली थी। मैं सिनिमा के अन्तिम खेल से लौट रहा था। १२ बजे आधी रात का समय था। मैं फ़ुट-पाथ पर चल रहा था कि एक मोटर मेरे पास से गुज़री। उसके पीछे मि० टेलर बैठा हुआ था। मोटर पुलिस-स्टेशन के सामने रुकी। सार्जेण्ट टेलर मोटर से उतरा और मोटर में बैठी हुई महिलाओं को उतरने में सहायता करने लगा कि इतने में फ़ायर की आवाज़ हुई। मैंने देखा कि सार्जेण्ट की कार के सामने, सड़क के दूसरी ओर एक और कार खड़ी है। मैं आक्रमणकारियों की मोटर से गोली चलने के समय सात-आठ फ़ीट के फ़ासले पर था। आक्रमणकारियों की मोटर का मुँह जेकब-सरकस की ओर था। मैंने देखा कि आक्रमणकारियों की मोटर में तीन व्यक्ति और एक ड्राइवर है। दो पिछली सीट पर थे और एक ड्राइवर के पास बैठा था। गोली चला कर आक्रमणकारियों की कार वहाँ से रफ़ूचक्कर हुई। मैं उसके पीछे भागा और देखा कि उसका नं० X 813 है।

"लम्बे बालों वाला व्यक्ति"

मैंने देखा कि पिछली सीट पर एक व्यक्ति बैठा है, जिसके बड़े लम्बे-लम्बे बाल हैं। उस व्यक्ति को एक काला कपड़ा सिर पर ओढ़ते हुए, मैंने देखा। फिर मैं पुलिस-स्टेशन में गया और वहाँ पर मि० और मिसेज़ टेलर को ख़ून में लथपथ देखा। मैंने पुलिस वालों को मोटरकार का नम्बर बता दिया। जो नोट कर लिया गया।

दूसरी फ़रवरी को कल्याण रेलवे-स्टेशन के क्लर्क मि० राजकिशोर त्रिवेदी ने गवाही देते हुए कहा कि ११ अक्टूबर को कल्याण से चालीसगाँव तक की ढाई टिकटें एक सज्जन ने ख़रीदी थीं, क्योंकि इण्टर का टिकट जो उसने माँगा, वहाँ न मिलता था। कल्याण स्टेशन के दो क़ुलियों ने गवाही देते हुए कहा, कि एक दिन एक व्यक्ति जिसने कि यूरोपियन ढङ्ग के कपड़े पहिने हुए थे, एक महिला तथा एक बालक के साथ रेलवे-स्टेशन पर टैक्सी में आए। हमने उनका सामान सेकेण्ड क्लास वेटिङ्ग रूम में रख दिया। साहब ने कहा था कि हम नागपुर मेल से जायँगे। परन्तु वह गए पञ्जाब मेल से।

मोटर ड्राइवर की गवाही

जोज़फ़ पिण्टो मोटर-ड्राइवर ने गवाही देते हुए कहा, कि किसी महीने की ११ तारीख़ को (महीना ठीक याद नहीं है) उसकी टैक्सी एक सज्जन ने किराए पर ली। थोड़ी दूर चल कर एक व्यक्ति एक महिला तथा एक बालक के साथ मिले। फिर वह सान्ताक्रुज़ गए। जिस सज्जन ने मोटर किराए पर ली थी, वह खार ही उतर गया। नवागत व्यक्ति ने सान्ताक्रुज़ से कुछ सामान लिया। सामान लेकर दादर लौटे। वहाँ उस व्यक्ति ने एक लड़के से कुछ बातें कीं। इसके बाद उन्होंने बाज़ार से कुछ चीज़ें ख़रीदीं और फिर टैक्सी में ही कल्याण स्टेशन गए। गवाह ने उस व्यक्ति की फ़ोटो शनाख़्त की।

इक़बाली गवाह की स्त्री कटहरे में

श्री० खण्डुलाल ने गवाही देते हुए कहा, कि मैं मि० जोज़फ़ पिण्टो की मोटर का क्लीनर हूँ। बुद्धिमान तथा श्रीमती शारदा को हम कल्याण स्टेशन पर छोड़ कर आए थे। गवाह ने जोज़फ़ पिण्टो की गवाही का समर्थन किया।

श्रीमती मोघे ने गवाही देते हुए कहा, कि श्री० वैशम्पायन से हमारा परिचय बहुत पुराना है। वे हमारी लड़की के ब्याह पर भी आए थे। गिरफ़्तारी से एक दिन पहिले श्री० वैशम्पायन हमारे घर आए थे और मेरे पति से बहुत देर तक बातें करते रहे थे। मैंने उन्हें चाय पिलाई थी।

दूसरे दिन मेरा पति गिरफ़्तार हो गया। दोपहर के समय मेरा पुत्र एक छोटे से बालक को लाया। एक घण्टा बाद एक और व्यक्ति आया, जो उस बालक को अपने साथ लेता गया।

(क्रमशः)

* * *

"बर्मा-विद्रोह में क्रान्तिकारियों का भी हाथ था"

बर्मा-विद्रोह का संक्षिप्त इतिहास

जेम्स क्रेरर का वक्तव्य

श्री० गयाप्रसाद सिंह के प्रश्न करने पर सर जेम्स क्रेरर ने असेम्बली में बर्मा-विद्रोह के विषय में निम्न-लिखित बयान पेश किया है :—

गत २२वीं दिसम्बर, १९३० को यह विद्रोह थारावड्डी से दक्षिण-पूर्व की ओर एकाएक उठ खड़ा हुआ। इसके पहले इसकी कोई आशङ्का नहीं की जाती थी। उस समय विद्रोहियों में काफ़ी सङ्गठन था। इन लोगों ने रात के समय दो गाँवों पर धावा किया, दो मुखियों को तथा एक फ़ॉरेस्ट-रेञ्जर को मार डाला और ५ बन्दूक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उसी दिन पुलिस के एक छोटे दल के साथ क़रीब ४००-५०० विद्रोहियों का मुक़ाबला हुआ। २३वीं तारीख़ को सन्ध्या समय यह ख़बर मिली कि थारावड्डी के समीप ही इनसीन ज़िले में, विद्रोहियों ने दो गाँवों पर धावा किया है और कुछ बन्दूक़ों को लूट लिया है। उसी रात को क़रीब ६०-७० विद्रोहियों ने इनीवा गाँव तथा वहाँ के स्टेशन पर धावा किया, तार के यन्त्रों को तोड़-फोड़ डाला, स्टेशन-मास्टर को पीटा तथा गाँव में आग लगा दी। उन लोगों ने वहाँ के दो दूकानदारों को मार डाला।

२५वीं तारीख़ को उन लोगों ने जङ्गल-विभाग के इञ्जीनियर मि० फ़ील्डस क्लार्क को मार डाला। उसी दिन मिलिटरी-पुलिस के एक दल का विद्रोहियों से सामना हुआ, जिसके फल-स्वरूप अनेक विद्रोही मरे और घायल हुए। उसी दिन रात्रि के समय कई सौ विद्रोहियों ने ५० मिलिटरी-पुलिस के एक पोस्ट पर हमला किया, जिसमें सिविल-पुलिस के एक सब-डिविज़नल अफ़सर मारे गए। इस अवस्था में मिलिटरी की सहायता अनिवार्य हो गई और मिलिटरी के आ जाने से विद्रोहियों पर उसका अच्छा असर हुआ; किन्तु प्राकृतिक अड़चनों के कारण इनके लिए, विद्रोहियों की एक बड़ी संख्या को खोज निकालना कठिन हो गया, क्योंकि ये प्रायः रात्रि में ही निकलते थे और बन्दूक़ तथा अन्य प्रकार के सामान लूटा करते थे। २९वीं तारीख़ को पञ्जाबियों के एक दल से २०० बलवाइयों का उदकवीन के समीप सामना हुआ। दूसरे दिन विद्रोहियों ने ओखन के फ़ॉरेस्ट कैम्प पर धावा किया तथा पञ्जाबियों के एक दल ने सिरकवीन के समीप, विद्रोहियों पर आक्रमण किया। ३०वीं तारीख़ को विद्रोहियों ने इनीवा के रेलवे पुल को उड़ा देने का असफल-प्रयास किया। ३१वीं को, विद्रोहियों के तीन दलों के साथ सेना का सामना हुआ। विद्रोहियों की संख्या ५०० के लगभग थी। विद्रोहियों को बहुत क्षति पहुँची। उसी दिन बर्मा राइफ़िल ने अलान्तुङ्ग के हेडक्वॉर्टर पर धावा मारा और मकान को जला डाला। इस बार भी अनेकों विद्रोही मारे गए। हेड-क्वॉर्टर पर सेना का अधिकार हो जाने से अनेकों विद्रोहियों पर इसका प्रभाव बहुत अधिक पड़ा। ये गाँवों को लौटने लगे। किन्तु तो भी विद्रोहियों का छोटा-छोटा दल उत्पात मचाता रहा। २री जनवरी को ५० विद्रोहियों के एक दल का पञ्जाबियों से सामना हुआ, जिसमें विद्रोहियों को अधिक क्षति पहुँची। ३री जनवरी की रात में लगभग १०० विद्रोहियों ने एक गाँव पर धावा किया, किन्तु सिविल-पुलिस ने उन्हें हटा दिया।

इसी समय यामेथिन ज़िले में एक नया विद्रोह उठ खड़ा हुआ। यहाँ ४०-५० विद्रोहियों ने, अनेकों गाँवों पर धावा किया। इन लोगों ने एक मुखिया और एक पुलिस कॉन्स्टेबिल को मार डाला, दो बन्दूक़ लूट लीं और घरों में आग लगा दी। किन्तु इन विद्रोहियों ने, अपने नेता के साथ शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर दिया, और इस प्रकार यह झगड़ा शान्त हो गया।

७वीं जनवरी को प्यापोन ज़िले में भी एक विद्रोह हुआ। पुलिस का क़रीब ६०० विद्रोहियों के साथ सामना हुआ। विद्रोही अपने झण्डे फहराते हुए पुलिस वालों से भिड़े, किन्तु वे हार कर भाग गए।

वर्तमान परिस्थिति के विषय में, मालूम पड़ता है कि विद्रोही अनेक छोटे-छोटे दलों में विभक्त हो गए हैं, किन्तु तो भी, थारावड्डी ज़िले में खुल्लमखुल्ला उत्पात कर रहे हैं। विद्रोह को दमन करने का प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु भय है कि, यह विद्रोह, अन्य ज़िलों में भी कहीं न फैल जाय।

इस विद्रोह में, बर्मा के पुराने विद्रोहों की छाप मौजूद है। किन्तु पहले विद्रोहों की अपेक्षा इसका सङ्गठन बहुत विस्तृत रहा है। इस विद्रोह का उद्देश्य वर्तमान सरकार को उलट देना है। पता चलता है, कि इसके लिए बहुत दिनों से गुप्त तैयारियाँ हो रही थीं। इस विद्रोह का सम्बन्ध सारे प्रदेश से था। विद्रोही बर्मा के कोने-कोने में, इसी प्रकार का सङ्गठन करना चाहते थे। ऐसा विश्वास करने का कारण मौजूद है, कि क्रान्तिकारी दल का भी इसमें हाथ है। क़रीब २,६०० मनुष्यों ने इस विद्रोह में भाग लिया था। विद्रोहियों की ओर के ३०० या इससे अधिक व्यक्ति मारे गए, १३० घायल हुए तथा १,१५० अथवा १,२५० व्यक्ति पकड़े गए। पुलिस और सेना के ३ मारे गए और ७ घायल हुए। इसके अतिरिक्त १ जङ्गल विभाग के इञ्जीनियर तथा १० मुखिए और सरकारी मुलाज़िम मारे गए। इस विद्रोह में अधिकतर मिलिटरी पुलिस से काम लिया गया है, किन्तु सेना की भी आवश्यकता बराबर बनी रही है।

—अहमदाबाद का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ढोलका तालुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है।

—अहमदाबाद का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वीरमगाँव की तालुक़ा कॉङ्ग्रेस कमिटी, सत्याग्रह कैम्प के साथ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है। पुलिस ने इन ऑफ़िसों पर सील कर दिया है।

—बम्बई का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ मादक द्रव्यों की दूकानों पर पिकेटिङ्ग ज़ोरों से जारी है। लगभग ५०० स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग में भाग ले रहे हैं।

—हैदराबाद (सिन्ध) का ९ वीं फ़रवरी का समाचार है, कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय स्वयंसेवकों को उन दूकानों के मालिकों ने पीटा। इसके फल-स्वरूप लगभग १२ स्वयंसेवक घायल हुए।

—सूरत का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि जलालपुर के अनेक गाँवों में नमक-सत्याग्रह फिर शुरू हो गया है। करादी नामक गाँव में, जहाँ महात्मा जी ठहरे थे, प्रायः नित्य ही नमक-क़ानून भङ्ग किया जा रहा है। कहा जाता है कि १ली फ़रवरी को करादी और मतवाद के क़रीब ५०० लोग, जिनमें स्त्री और बच्चे भी शामिल थे, लागन नामक स्थान पर गए और उन लोगों ने क़रीब ५० मन नमक इकट्ठा किया। घटनास्थल पर पुलिस मौजूद थी, किन्तु उसने किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया। २८वीं जनवरी से १ली फ़रवरी तक इन लोगों ने क़रीब २०० मन गैर-क़ानूनी नमक इकट्ठा किया।

—सूरत का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि जलालपुर तालुक़े में अधिकारीवर्ग लगान वसूल करने की फ़िक्र में हैं। वे दिन भर गाँव-गाँव घूमते हैं, पर बहुत ही कम वसूल कर पाते हैं। कहा जाता है कि शिरोदा के तलाती ने लगान न देने के कारण दो किसानों को बन्द कर रक्खा। उसने उन्हें बहुत डराया-धमकाया, पर वे एक पाई भी देने को तैयार न हुए। अन्त में वे छोड़ दिए गए।

—कानपुर का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि रात के समय गश्त लगाते हुए एक स्वयंसेवक की दृष्टि एक विदेशी कपड़े की गाँठ पर पड़ी। स्वयंसेवक ने उसके हटाए जाने में बाधा पहुँचाई। बुरी तरह पीटे जाने पर भी स्वयंसेवक टस से मस नहीं हुआ। किन्तु उसके विरोधी अधिक संख्या में थे, इसलिए उन लोगों ने इसे क़ाबू में कर लिया और इस प्रकार वह गाँठ बल-पूर्वक हटाई गई।

—काशीपुर का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि वहाँ 'प्यूनिटिव' पुलिस-टैक्स वसूल किया जा रहा है। अनेक लोगों ने यह टैक्स नहीं दिया है, इस कारण उनके विरुद्ध वारण्ट निकाले गए हैं। वहाँ के एक प्रसिद्ध ज़मींदार पं० लक्ष्मणदत्त भट्ट की एक रिस्टवाच और १ फ़ाउन्टेन पेन इसी सम्बन्ध में ज़ब्त कर ली गई है।

—कराची का ६ठीं फ़रवरी का समाचार है, कि कुछ सत्याग्रहियों ने विदेशी वस्त्र की गाँठों को मालगोदाम से स्टेशन पर ले जाने में बाधा पहुँचाई। पुलिस ने उन्हें हटाने के लिए लाठी का व्यवहार न कर, बेंत का व्यवहार किया।

नागपुर में कॉङ्ग्रेस कार्य

नागपुर का ४थी फ़रवरी का समाचार है, कि शराब की दूकान पर धरना देते समय ३ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

कहा जाता है कि जबलपुर में विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देते समय, स्वयंसेवकों को दूकानदारों ने बुरी तरह पीटा। एक स्वयंसेवक बेहोश हो गया, वह अस्पताल पहुँचाया गया।

डॉ० के० सी० बाघल ने सरकारी नौकरी छोड़ कर कॉङ्ग्रेस कार्य में भाग लेना आरम्भ किया है। आप रायपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर' चुने गए हैं।

१४४वीं धारा जारी की गई

धारवाड़ का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि बेलगाँव ज़िले के बादकुन्दरी नामक एक गाँव में दण्ड-विधान की १४४वीं धारा जारी की गई है। इसके अनुसार वहाँ के वार्षिक मेले में, सभाएँ करने, धरना देने आदि कार्यों की मनाही की गई है। इस धारा की अवहेलना की जा रही है, और इस सम्बन्ध में अब तक ४ व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए हैं।

'भारतीय क्रान्ति की विशेषता'

डॉ० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ३०वीं जनवरी को बम्बई आ गए। आपने प्रेस-प्रतिनिधि से कहा है कि, "भारत ने संसार का ध्यान अपने स्वातन्त्र्य-युद्ध के द्वारा नहीं, बल्कि उन नैतिक उपायों के द्वारा, जिन्हें वह अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त कर रहा है, अपनी ओर आकर्षित किया है। क्रान्ति के इतिहास में भारत ने एक नई विशेषता उत्पन्न कर दी है; और यह विशेषता देश की आध्यात्मिक परम्परा के अनुकूल ही है।"

—१ली फ़रवरी को हेतसिंह और गिरन्दसिंह शमशाबाद में गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है, उन्हें बेत लगाए गए और बेड़ियाँ पहना दी गईं। जिन लोगों ने उन्हें हार पहनाया था, कहा जाता है, उनकी भी बेतों से ख़बर ली गई। इनमें एक बुरी तरह घायल हो गया है।

—मोतिहारी का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि चौकीदारी टैक्स न देने के कारण श्री० लालीसाह नामक एक व्यक्ति का बैल, जिसका दाम ३६) के लगभग था, नीलामी पर चढ़ा दिया गया और ६) पर बेचा गया।

मुसाफ़िर मियाँ की एक बैलगाड़ी, बाबू अलीमर्दन प्रसाद का एक बैल और बाबू गजाधर पाण्डे का १ जोड़ी बैल चौकीदारी टैक्स न देने के कारण ज़ब्त कर लिया गया है।

—ढाके का ७वीं फ़रवरी का समाचार है, कि ढाका सदर के सब-डिविज़नल-अफ़सर ने बरनाखाली यूनियन में १४४वीं धारा जारी की है। ३ अन्य यूनियनों के लिए भी यह धारा जारी की गई है।

—आगरे का ८वीं फ़रवरी का समाचार है, कि सहयोगी 'सैनिक' से ४,०००) रुपए की ज़मानत माँगी गई है। २०००) पत्र के लिए, और २०००) प्रेस के लिए। विरोध-स्वरूप पत्र का प्रकाशन स्थगित कर दिया गया है।

राजनैतिक क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार

कानपुर २८वीं जनवरी—हरदोई जेल से एक राजनैतिक क़ैदी लिखता है कि वहाँ 'सी' श्रेणी के राजनैतिक क़ैदियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं हो रहा है। कहा जाता है, कि श्री० बाक़रअली को एक वार्डर ने पीटा। इससे सभी राजनैतिक क़ैदियों में ज़ोरों की सनसनी फैली। उन सबों की ओर से स्वामी ब्रह्मानन्द ने जेल के अधिकारियों से इस बात की शिकायत की। किन्तु उनकी शिकायतों को दूर करने के बदले, सभी क़ैदियों को अपने-अपने बैरकों में बन्द किए जाने की आज्ञा दी गई। क़ैदियों ने इस बात का विरोध किया। कहा जाता है, इस पर वे घसीटे और पीटे गए। अनेकों को, जिनमें कुछ लड़के भी हैं, गहरी चोट आई है।

मैजिस्ट्रेट पर जूता चलाया गया

बम्बई का ९वीं फ़रवरी का समाचार है, कि एस्प्लेनेड पुलिस कोर्ट में, एक मुसलमान विचाराधीन क़ैदी ने मैजिस्ट्रेट मि० आस्कर ब्राउन पर जूता चला दिया। किन्तु जूता मैजिस्ट्रेट को न लगा। वह बाल-बाल बच गए।

वह मनुष्य पुलिसवालों से घिरा था। उसने किस समय जूता निकाला, यह किसी ने नहीं देखा। पुलिस किंकर्तव्य-विमूढ़वत् खड़ी रही। जूता फेंके जाने के बाद अभियुक्त हिरासत भेज दिया गया।

(४थे पृष्ठ का शेषांश)

—कलकत्ते का ६ठी फ़रवरी का समाचार है कि ईस्ट इण्डियन जूट एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री० एच० पी० बागरिया गिरफ़्तार किए गए हैं। आपने, महिला पिकेटरों के प्रति पुलिस के व्यवहार के सम्बन्ध में, टाउन हॉल में एक भाषण दिया था। इसी भाषण के सम्बन्ध में १२४-ए धारा के अनुसार आप गिरफ़्तार किए गए हैं। बीमार होने के कारण आप ज़मानत पर छोड़े गए हैं। १३वीं फ़रवरी से आपका मामला चलेगा।

—अलीगढ़ का समाचार है, कि स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर वहाँ २८ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। इनमें २१ क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ड एक्ट की १७ वीं धारा के अनुसार दोषी पाए गए और उन्हें ३-३ माह की कड़ी क़ैद और २५)-२५) रुपए जुर्माने की सज़ा दी गई। ७ व्यक्ति प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिए गए।

—मदुरा का एक समाचार है कि श्री० आर० श्रीनिवासवरध ऐयङ्गर नामक एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता को १२४-ए धारा के अनुसार गत जून और सितम्बर के उनके दो भाषणों के सम्बन्ध में प्रत्येक अभियोग के लिए डेढ़-डेढ़ वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। इस प्रकार उन्हें ३ वर्ष तक सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

—किशोरगञ्ज का समाचार है कि वहाँ के डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने श्री० नवेन्द्रदत्त मज़ुमदार नामक एक एम० ए० के विद्यार्थी को ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० ग्राहम के सामने बन्देमातरम् चिल्लाने के अपराध में दण्डविधान की ५०४ वीं धारा के अनुसार ४ मास की कड़ी क़ैद और २००) रुपए जुर्माने अथवा २ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी है।

—हाबड़ा का एक समाचार है कि वहाँ के डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने श्री० ज्ञान और श्री० शरत को गैर-क़ानूनी संस्था के सदस्य होने के अभियोग में ६०)-६०) रुपए जुर्माने अथवा ६ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

कुछ अन्य व्यक्तियों को भी इसी अभियोग में २५) २५) जुर्माने अथवा २ सप्ताह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

देश पर भयङ्कर वज्रपात !

त्यागमूर्ति पण्डित मोतीलाल नेहरू का स्वर्गवास !!

गत ६ठीं फ़रवरी को प्रातःकाल ६॥ बजे पण्डित मोतीलाल नेहरू का लखनऊ में, राजा कालाकाँकर की कोठी में, स्वर्गवास हो गया। पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि कुछ दिनों से पण्डित जी का स्वास्थ्य बहुत ख़राब हो गया था। आनन्द भवन में उनके स्वास्थ्य की जाँच के लिए जो डॉक्टर एकत्रित हुए थे उन्होंने यह निश्चय किया था कि एक्स-रे परीक्षा के लिए उन्हें फिर कलकत्ता ले जाया जाय। परन्तु स्वास्थ्य अधिक चिन्ताजनक हो जाने के कारण डॉक्टरों को अपना निश्चय बदलना पड़ा और वे उन्हें कलकत्ते न ले जाकर एक्स-रे परीक्षा के लिए लखनऊ ले गए। इस निश्चय के अनुसार आप ४थी फ़रवरी को प्रयाग से ३॥ बजे मोटर द्वारा लखनऊ रवाना हुए। आपके साथ महात्मा गाँधी, डॉक्टर विधानचन्द्र राय और सारा नेहरू-परिवार भी अन्य मोटरों में लखनऊ गया। लखनऊ में वे राजा साहब कालाकाँकर की कोठी में ठहरे। वहाँ उनकी दशा अन्य दिनों से अधिक चिन्ताजनक हो गई और एक्स-रे परीक्षा होने के पहले ही उनका ६ठीं फ़रवरी को ६॥ बजे प्रातःकाल देहावसान हो गया।

"मैं मोतीलाल नेहरू को खोकर विधवा से भी अधिक असहाय हो गया हूँ।"

—महात्मा गाँधी

"यदि पण्डित मोतीलाल नेहरू गवर्नमेण्ट के दुश्मन थे, किन्तु वे उन दुश्मनों में से थे, जिन्हें वह आदर और सम्मान की दृष्टि से देखती है।"

—"डेली हेरल्ड"

उनकी मृत्यु का समाचार क्षण भर में बिजली की नाईं शहर भर में फैल गया। अपने मनोनीत नेता के अन्तिम दर्शनों के लिए जनता व्याकुल हो उठी और थोड़े ही समय में राजा कालाकाँकर की कोठी के सामने जन-समुद्र उमड़ पड़ा। मृत्यु के उपरान्त पण्डित जी का शव कोठी के केन्द्रीय हॉल में रख दिया गया था। वहीं शहर के सम्माननीय व्यक्ति और दर्शकों ने पण्डित जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। ११ बजे शव राष्ट्रीय पताका में लपेट कर मोटर में क़ैसर बाग़ और शहर के मुख्य-मुख्य रास्तों में घुमाया गया। मोटर के साथ हज़ारों व्यक्तियों की भीड़ थी जो शव पर पुष्प-वर्षा कर अपनी अन्तिम श्रद्धाञ्जलि भेंट कर रही थी। इस भीड़ के अतिरिक्त घरों के बरण्डों और छतों पर से स्त्रियाँ और बच्चे शव पर पुष्प-वर्षा कर रहे थे। पण्डित जी के शव के साथ पण्डित जवाहरलाल और मोहनलाल सक्सेना थे और उनके दामाद श्री० आर० एस० पण्डित आगे बैठे हुए थे। उनकी मोटर के पीछे साथ ही एक मोटर में महात्मा गाँधी, श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू और मीराबेन थीं। उनके पीछे मोटरों का एक ताँता लगा हुआ था। उनमें से बहुत सी मोटरें तो इलाहाबाद तक शव के साथ उसकी अन्त्येष्टि क्रिया के लिए आईं।

इलाहाबाद में जैसे ही पण्डित जी की मृत्यु के समाचार पहुँचे सारी जनता उन्मत्त सी हो उठी। शहर भर में अपने आप हड़ताल हो गई और आनन्द भवन के सामने क्षण भर में हज़ारों की भीड़ एकत्रित हो गई। कुछ देर बाद यह ख़बर आई कि पण्डित जी का शव ५ बजे मोटर से प्रयाग आएगा। दोपहर से ही भीड़ बढ़ चली थी और चार बजे तक ६० हज़ार से अधिक स्त्री-पुरुष और बच्चे आनन्द भवन के सामने एकत्रित हो गए और सभी बड़ी उत्सुकता से उनके शव की प्रतीक्षा करने लगे। अन्त में उन्हें वह सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग ४॥ बजे इस जन-समुद्र के बीच से मन्द गति से एक मोटर निकली; उसमें राष्ट्रीय झण्डे में लिपटा हुआ पण्डित जी का शव था। मोटर में भी सामने एक राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था। शव के सिरहाने राष्ट्रपति जवाहरलाल बैठे थे। शव आते ही 'पण्डित मोतीलाल की जय' के घोष से आकाश गूँज उठा। जिस समय शव अन्दर ले जाने के लिए आनन्द भवन के फाटक खोले गए उस समय मोटर के साथ अन्दर जाने के लिए लोग इतने वेग से आगे बढ़े कि तीन लड़के दब कर बेहोश हो गए। अपनी अन्तिम श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए हाईकोर्ट के सब वकील, सर सुलेमान, मि० जस्टिस मुकर्जी, मि० जस्टिस बनर्जी, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर, कुछ यूरोपियन स्त्रियाँ, एक अमेरिकन पत्रकार और शहर के अन्य गण्य-मान्य सज्जन अन्दर उपस्थित थे। कुछ क्रियाएँ हो चुकने के उपरान्त शव ६ बजे अन्त्येष्टि क्रिया के लिए बाहर निकाला। शव बाहर निकलते ही उस पर चारों ओर से पुष्प-वृष्टि होने लगी। और लोग हाथ लगाने के लिए उसकी ओर टूट पड़े। इसके कारण उसका फाटक से आगे बढ़ना ही कठिन हो गया। इस कठिनाई के लिए शव मोटर पर रख दिया गया। पहले शव को कटरा, जानसनगञ्ज और बहादुरगञ्ज होते हुए सङ्गम पर ले जाने की योजना की गई थी, परन्तु भीड़ अधिक होने के कारण यह विचार बदल देना पड़ा और आनन्द भवन से शव फ़ोर्ट रोड से सीधा सङ्गम पहुँचाया गया। बाँध के उस पार शव के साथ जो जन-समूह था वह माघ मेले की भीड़ की नाईं प्रतीत होता था। शव सङ्गम पर पहुँचते ही लोगों ने 'इन्क़लाब-ज़िन्दाबाद' और पण्डित मोतीलाल के जय-घोष से आकाश गुँजा दिया। कुछ धार्मिक क्रियाओं के बाद शव चिता पर रख दिया गया। महात्मा गाँधी ने स्वयं चिता पर कुछ लकड़ियाँ जमाई थीं।

महात्मा गाँधी का भाषण

चिता में अग्नि-दान के उपरान्त महात्मा गाँधी ने एक अत्यन्त मार्मिक वक्तृता दी। उस क्षीणकाय तपस्वी ने कहा—"पण्डित जी त्याग की मूर्त्ति थे। स्वाधीनता के महायज्ञ में उन्होंने अपने सारे धन, वैभव, सारे ऐश्वर्य, यहाँ तक कि अपनी पुत्रियों, पुत्र-वधू, दामाद और अपने एक मात्र पुत्र की भी आहुति दे दी। आज स्वाधीनता के संग्राम में अपना शरीर त्याग कर उन्होंने इस महायज्ञ में पूर्णाहुति दी है। संसार में आज ऐसे भाग्यशाली मनुष्य कितने हुए हैं जिन्होंने पण्डित जी की तरह स्वाधीनता की वेदी पर अपना सर्वस्व अर्पण किया हो।" उनके बाद मालवीय जी की भी मार्मिक वक्तृता हुई। बाद में अपना भारी हृदय लेकर लोग वहाँ से अपने-अपने घर वापस गए।

* * *

स्वनामधन्य मोतीलाल नेहरू

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

थे स्वदेश-सीपी के द्युतिमय
मोती, थे लालों में लाल,
भरतखण्ड के गहन सिन्धु के—
थे तुम एक रत्न सुविशाल,
तुम नीतिज्ञों के गौरव थे,
राजनीति-पटु जन की आन,
भोग-त्याग दोनों की सीमा,
जीवित सरल आत्म-सम्मान !
मनोयोग के परम पुजारी,
जनक जवाहिर के द्युतिमान,
और कहें क्या तुमको, तुम थे
मूर्तिमान भारत की शान,
तुम गाँधी के दक्षिण कर थे,
भारतीय जन के अभिमान,
कारागार यन्त्रणा पाकर
हुए देश पर तुम बलिदान।
भारत-माता के प्यारे, अग-
णित आँखों के तारे तुम !
हाय, छोड़ कर साथ हमारा
क्यों किस लोक सिधारे तुम ?
लालच क्या थी तुम्हें स्वर्ग की;
भवन तुम्हारा तो था स्वर्ग,
भारत के हित से बढ़ कर तुम—
नहीं समझते थे अपवर्ग,
फिर क्यों जाना हुआ तुम्हारा
भारत की विपत्ति के काल,
कौन समझ सकता है जग में
महज्जनों के मन का हाल,
करना था क्या तुम्हें स्वर्ग में—
जाकर प्रजातन्त्र स्थापन,
पर इस कारण से भी भारत
त्याग न सकता था तव मन !
भारत के गुरु प्रजातन्त्र के
अधिपति का भावी शुभस्थान
कितना शोभित होता तुमसे—
तुम थे, सभी गुणों की खान।
चले गए तुम हाय छोड़ कर
रोता भारत जन-समुदाय,
नाता हमसे सभी तोड़ कर
बहु विधि से करके निरुपाय।
कौन करावेगा भारत में
शुभातङ्क से न्याय-विधान ?
कौन करेगा अब स्वतन्त्र-
भारत का शासन-विधि-निर्माण ?
हुआ भाग्य का जो निर्णय था,
कुटिल काल की गति का रोध,
किसके किए हुआ, उसका तो
हो सकता न प्रथम है बोध !

* * *

गोलमेज़ के बादल और गाँधी की आँधी

"जिस शासन-प्रणाली को कॉङ्ग्रेस स्वीकार न करेगी, वह भारत में किसी तरह भी नहीं टिक सकती ××× भारत का वास्तविक इतिहास सेण्ट जेम्स के महल में नहीं, बल्कि भारत की जेलों में बन रहा है।"

—फ़ेनर ब्रॉकवे

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के समर्थक श्रीयुत फ़ेनर ब्रॉकवे ने "न्यू लीडर" में निम्न-लिखित लेख दिया है। इसके पढ़ने से यह साफ़ मालूम हो जावेगा कि ब्रिटिश नेता महात्मा गाँधी को अपनी-अपनी ओर खींचने के लिए क्यों उत्सुक हो रहे हैं।

"गोलमेज़ परिषद् के सामने आज बड़ी महत्वपूर्ण समस्याएँ उपस्थित हैं। थोड़े ही दिनों में लोगों को मालूम हो जावेगा कि ब्रिटिश तथा भारतीय नेताओं में किसी तरह की सुलह होने की सम्भावना है या नहीं। हम यहाँ पर केवल उस कार्य की समालोचना करने का प्रयत्न करेंगे, जो इस समय तक समाप्त हो चुका है। परिषद् के आरम्भ में प्रमुख भारतीय नेताओं के भाषण हुए। इनको सुन कर ब्रिटिश जनता तथा भारतनिवासी दोनों को बहुत आश्चर्य हुआ। ब्रिटिश जनता को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि यह भारत का नरम दल होने पर भी स्वराज्य के लिए इतना उतावला हो रहा है! इस बात की मानो उन्हें ख़बर ही न थी। भारतनिवासियों को भी उनकी दृढ़ता से कुछ आश्चर्य अवश्य हुआ। क्योंकि वे उन्हें देशद्रोही समझते थे।

"इन भाषणों के उत्तर में ब्रिटिश नेताओं ने भी गोलमटोल बातें कहीं। प्रधान-मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड ने कोई बात साफ़ न कही। लॉर्ड पील तथा लॉर्ड रीडिङ्ग ने भी अधिकतर स्वराज्य की माँग का विरोध ही किया। इसी झमेले में बिना कुछ निश्चय हुए परिषद का कार्य छोटी-छोटी उपसमितियों को सौंप दिया गया। केवल एक बात निश्चित थी कि भारत की भावी शासन-प्रणाली विभाजन-सिद्धान्त (Federal principle) पर निर्धारित होगी।

"अभी तक इन उपसमितियों में से केवल एक की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। वह प्रान्तीय शासन के सम्बन्ध में है। परन्तु इसमें भी कोई बात निश्चित रूप से तय नहीं हो पाई है। अधिकतर ब्रिटिश नेता चाहते हैं कि प्रान्तीय गवर्नरों के विशेष अधिकार ज्यों के त्यों रहें, शान्ति-रक्षा का भार अङ्गरेज़ों के हाथ में रहे और शासन-सभा (Cabinet) में केवल सरकारी सदस्य ही रहें। एक बात अवश्य तय हो चुकी है और वह यह है कि ब्रह्म-देश भारत से अलग कर दिया जाय।

"ऊपर से तो बस केवल इन्हीं बातों का पता चलता है। परन्तु जिन सज्जनों का परिषद् के कार्य से सम्बन्ध है, वे और बहुत सी बातें बता सकेंगे। पहिली बात तो यह है कि हिन्दू-मुस्लिम समस्या ज़रा भी हल नहीं हो पाई है। दूसरी यह कि भारतीय नेताओं ने यह प्रयत्न किया कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों को केन्द्रीय शासन की ज़िम्मेदारी देने का वचन दे। परन्तु वे इस कार्य में सफल न हुए। इस विषय में अधिकतर ब्रिटिश नेता भारतीय प्रतिनिधियों से ज़रा भी सहमत न हुए। इसलिए ब्रिटिश नेताओं में भी इस विषय में आपस में मतभेद हो गया। कन्ज़रवेटिव दल के नेता चाहते थे कि भारत की सेना, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजनैतिक कार्य तथा आर्थिक नीति पर ब्रिटिशों का पूर्ण अधिकार रहे। मज़दूर-दल वाले आर्थिक नीति में भारतीयों को कुछ अधिकार देने को तैयार थे। लिबरल-दल के कुछ नेता मज़दूर-दल का साथ दे रहे थे और कुछ कन्ज़रवेटिव दल की बातों का समर्थन कर रहे थे। भारत के सब नेता एक होकर यह कह रहे थे कि इन सब विषयों के शासन का भार भारतीयों को दिया जाय।

"आशा है कि इस लेख के प्रकाशित होने के पूर्व कुछ समझौता अवश्य हो जावेगा। सम्भव है, ब्रिटिश नेता भारतीयों को केन्द्रीय शासन की सारी ज़िम्मेदारी देने का सिद्धान्त स्वीकार कर लें, परन्तु इस समय तो वे केवल आर्थिक नीति में भारतीयों को थोड़ा सा अधिकार देने के अतिरिक्त और कुछ न देंगे। इससे अधिकतर भारतीय नेता बहुत असन्तुष्ट हैं। यदि इन बातों पर किसी तरह का समझौता न हो सका, तो यह तय है कि भारत और इङ्गलैण्ड में और भी भेद-भाव उत्पन्न हो जायगा। क्योंकि समझौता न होने पर यह भी सम्भव है कि बहुत से निराश नेता महात्मा गाँधी तथा राष्ट्रवादी कॉङ्ग्रेस से जा मिलें। यद्यपि इससे कॉङ्ग्रेस को विशेष लाभ न होगा, क्योंकि भारत में इनके अनुयायियों की संख्या बहुत थोड़ी है। तथापि इससे उसकी प्रतिष्ठा अवश्य बढ़ जायगी।

"यदि इन नरम दल के नेताओं ने ब्रिटिश नेताओं से समझौता कर भी लिया, तो इस समय हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल नहीं हो सकती। यह सम्भव है कि बाद में इस सम्बन्ध में कुछ निश्चय हो सके, परन्तु जब तक स्वराज्य का प्रश्न हल नहीं हो जाता, तब तक इस सम्बन्ध में कोई ठीक समझौता होने की सम्भावना नहीं है। यदि भारत को "स्वतन्त्रता का सार" दिया गया, तो यह निश्चय है कि भारत के हिन्दू हर तरह से मुसलमानों की माँगों को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु केवल कुछ अधिकार मात्र के लिए वे आत्म-बलिदान करने को तैयार न होंगे।

"इसमें सन्देह नहीं कि यदि मुख्य प्रश्न पर कुछ ठीक-ठीक समझौता न हो सका, तो ब्रिटिश नेता इस परिषद् की असफलता का सारा दोष हिन्दू-मुस्लिम समस्या के मत्थे मढ़ देंगे। वे कहेंगे कि हम क्या करें, हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे से मेल करने को तैयार नहीं हैं; ऐसी दशा में स्वराज्य कैसे दिया जा सकता है? परन्तु यह बात बिलकुल ग़लत है। इस परिषद् की बैठक होने के पहिले ही से यह साफ़ मालूम हो गया था कि इसको सफल बनाने का केवल यही एक साधन है कि ब्रिटिश सरकार भारत को स्वराज्य देने की घोषणा कर दे और उसे कार्यरूप में परिणत करने में अपनी सारी शक्ति लगा दे। यदि ब्रिटिश सरकार यह करने को तैयार होती तो हिन्दू-मुस्लिम समस्या बड़ी आसानी से हल हो जाती। जब तक यह वचन नहीं दिया जाता कि यह परिषद् एक स्वाधीन भारत की शासन-प्रणाली का निर्माण करने के उद्देश्य से की गई है, भारत के सदस्य इस विषय में अपनी पूरी शक्ति न लगावेंगे। ब्रिटिश सरकार इस मामले में एकदम चुप है। तिस पर विरोधी दल के नेता उनकी माँगों का विरोध कर रहे हैं। ऐसी दशा में उनका सारा उत्साह ठण्डा क्यों न हो जावे?

"इसके अतिरिक्त भी ब्रिटिश नेताओं को एक बात का ध्यान सदैव रखना चाहिए कि जिस शासन-प्रणाली को कॉङ्ग्रेस स्वीकार नहीं करेगी, वह भारत में किसी तरह भी टिक न सकेगी। गोलमेज़ परिषद् के सारे सदस्यों के हस्ताक्षर होने पर भी, यदि वह कॉङ्ग्रेस को स्वीकार न हुई, तो भारतीयों के किसी भी काम की न होगी। फिर इस परिषद् से यह साफ़ प्रकट होता है कि भारत की स्वराज्य की माँग पूरी न होगी। इसलिए यह तय है कि कॉङ्ग्रेस इसका विरोध अवश्य करेगी। ऐसी दशा में बिना कॉङ्ग्रेस की सहायता के भारत का प्रश्न किसी तरह भी हल नहीं हो सकता।

"गोलमेज़ परिषद् के आरम्भ होने के पूर्व ही महात्मा गाँधी तथा नेहरू पण्डितों ने ब्रिटिश सरकार के सामने अपनी शर्तें पेश की थीं। वे चाहते थे कि केन्द्रीय सरकार में सेना, विदेशी सम्बन्ध, देशी रियासतों का सम्बन्ध तथा आर्थिक नीति का भार हिन्दुस्तानियों को दिया जावे। इसके अतिरिक्त भारत के राष्ट्रीय क़र्ज़ की समस्याएँ भी एक निष्पक्ष दल के सामने रक्खी जावें। परन्तु इसका यह मतलब न था कि वे यह चाहते थे कि ये सभी कार्य एकदम उनके हाथों में सौंप दिए जायँ। वास्तविक बात तो यह थी कि वे चाहते थे कि कनाडा, दक्षिण अफ़्रिका तथा ऑस्ट्रेलिया की तरह उन्हें भी 'स्वतन्त्रता का सार' प्राप्त हो जावे। परन्तु ब्रिटिश सरकार ने ये शर्तें क़बूल न की और इसीलिए कॉङ्ग्रेस के नेताओं ने भी गोलमेज़ परिषद् में भाग लेने से इनकार कर दिया।

"ऐसी दशा में यदि लन्दन में समझौता हो भी गया, तब भी हमें वास्तविक भारतीय नेताओं से फिर समझौता करना पड़ेगा और वही वास्तविक सन्धि होगी। भारतीय राजनैतिक क्षेत्र की सारी महत्वपूर्ण तथा क्रियात्मक शक्ति आज कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन में लगी हुई है। हिन्दू-मुस्लिम समस्या लन्दन में इतनी विकट मालूम हो रही है, परन्तु कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन में उसका नाम तक नहीं है। वहाँ राष्ट्रीयता की लहर सारी जातियों तथा धर्मों को अपने पवित्र अञ्चल से ढक रही है। लन्दन में आए हुए हिन्दू तथा मुस्लिम नेताओं के अनुयायियों की अपेक्षा कॉङ्ग्रेस के हिन्दू तथा मुस्लिम नेताओं के अनुयायियों की संख्या कहीं बड़ी है। अस्तु—

"लन्दन के झगड़ों से अलग होकर हम जब भारत की ओर दृष्टि फेरते हैं, तब कुछ दूसरा ही दृश्य दिखाई पड़ता है। लन्दन में केवल बहस हो रही है, पर भारत में स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ा हुआ है, जिसमें हिन्दू और मुसलमान एक होकर लड़ रहे हैं। भारत के ६०,००० पुरुष तथा स्त्रियाँ अहिंसात्मक सत्याग्रह करने के अपराध में जेलों में पड़ी हैं। वहाँ सभाएँ रोकी जा रही हैं, सम्पादकों पर मुक़दमे चल रहे हैं, धरना देना अपराध ठहराया गया है, कॉङ्ग्रेस ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है और उसकी इमारतें तथा सामान ज़ब्त कर लिया गया है। भारत का वास्तविक इतिहास सेण्ट जेम्स के महल में नहीं, वरन् भारत की जेलों में बन रहा है।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व, सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर
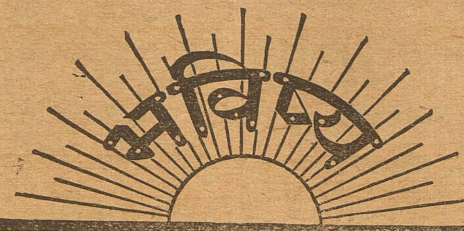
१२ फ़रवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

स्वर्गीय पण्डित जी की स्मृति में क्या-क्या करना चाहिए

महात्मा गाँधी की सम्मति

महात्मा जी ने अपनी निम्न-लिखित सम्मति प्रकाशित की है :—

"आगामी रविवार (१५वीं फ़रवरी) पण्डित मोतीलाल नेहरू के श्राद्ध का पहला दिन है। मेरा विचार है कि पण्डित जी की स्मृति के चिह्न-स्वरूप, तथा देश के प्रति उनके अपूर्व त्याग की यादगारी के लिए, उस दिन सभी कार्य स्थगित रक्खे जायँ। जिन्हें उपवास में विश्वास है वे सारा दिन उपवास करें और सन्ध्या-समय उपवास भङ्ग करें।

सारे देश में इस कार्यक्रम का अनुसरण किया जाय :—

१—देश में सर्वत्र, ३ बजे के लगभग सभाएँ की जायँ, जिससे किसान लोग ठीक समय पर अपने घर पहुँच सकें।

२—सभाओं में, मूक जुलूस के रूप में लोग प्रवेश करें। जुलूस में राष्ट्रीय झण्डे भी हों।

३—सभाओं में पूर्णरूप से शान्ति रक्खी जाय।

सभाओं में निम्न-लिखित घोषणा पढ़ कर सुनाई जाय, और श्रोतागण भी सभापति के साथ-साथ घोषणा के शब्दों का उच्चारण करें—

"हम लोग—जो इस सभा में स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरू के महान त्याग की स्मृति में इकट्ठे हुए हैं—गम्भीरता-पूर्वक पहले की अपेक्षा अधिक उत्साह से अपने को देश के लिए उत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा करते हैं, जिससे हमें शीघ्र पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति हो।"

निम्न-लिखित उपायों द्वारा उत्सर्ग किया जा सकता है :—

(अ) मादक द्रव्यों का व्यवहार स्वयं छोड़ कर तथा दूसरों से छुड़वा कर।

(ब) मादक द्रव्यों का उस समय तक शान्ति-पूर्वक, पिकेटिङ्ग करना जब तक कि इनका व्यवहार पूर्णरूप से बन्द न हो जाय।

(स) विदेशी वस्त्र के सम्बन्ध में भी (अ) और (ब) के नियमों का पालन।

(द) कम से कम परिमाण में भी, नित्य सूत कातने की प्रतिज्ञा।

(क) शुद्ध खादी पहनने की प्रतिज्ञा।

(ख) स्मारक दिवसों में शुद्ध खादी का ख़रीदना और बेचना।

(ग) राष्ट्रीय कार्यों के लिए अपनी हैसियत के अनुसार अथवा दिन भर की कमाई का, दान देना।

अन्य किसी प्रकार का राष्ट्रीय कार्य अथवा उत्सर्ग करना, जो उपर्युक्त कार्यक्रम में शामिल नहीं है।

नोट—(१) यह सब से अधिक महत्वपूर्ण है, कि कार्यों का स्थगित रखना तथा अन्य सभी कार्य, बिना किसी दबाव के, अपनी इच्छा से किए जायँ।

(२) प्रदर्शनों को प्रभावशाली बनाने के लिए, पूर्णरूप से शान्ति रखनी चाहिए।

(३) मर्द, औरत और बच्चों को हज़ारों की संख्या में प्रदर्शनों में भाग लेना चाहिए।

(४) यदि लोग चाहें तो स्मारक दिवस में विदेशी वस्त्रों का सम्पूर्णतया बहिष्कार हो सकता है। यह सब से महान स्मृति-मन्दिर होगा, जिसे जनता एक दिन में, उस देशभक्त के लिए उठा सकती है, जो एक समय स्वयं विदेशी रङ्ग में रँगा हुआ था, किन्तु जब उसे कर्तव्य का ज्ञान हुआ तो उसने अपने बहुमूल्य विदेशी वस्त्रों को ठीक उसी भाँति जला दिया जिस प्रकार हम अपने पुराने कपड़े फेंक देते हैं।

(५) जहाँ तक सम्भव हो, प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से अपने उत्सर्ग और अपनी व्यक्तिगत प्रतिज्ञा की सूचना, सभा को तथा अपने ताल्लुक़े की काङ्ग्रेस कमिटी या सब-कमिटी को दे। हेड क्वार्टरों में सबों का सार भेजा जाय।

* * *

स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल नेहरू

जो न करना था, कर गया कोई ! वक़्त से पहिले मर गया कोई !!

"इस समय देश की समस्या हल करने को कुञ्जी ग्रेट-ब्रिटेन के हाथों में है और उसे भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने का तथा भारत को उसे स्वीकार करने का अवसर आ गया है। यदि ग्रेट-ब्रिटेन इस अवसर से लाभ उठा कर शीघ्र ही समस्या का निरूपण न करेगा, तो वह दिन दूर नहीं है, जब समस्या की कुञ्जी भारत के हाथों में आ जायगी और वह ग्रेट-ब्रिटेन के हाथों से अपनी स्वतन्त्रता ज़बर्दस्ती छीन लेगा (१९२८) ।×××मैं सदैव सम्मानपूर्वक सन्धि करने के लिए तैयार हूँ; परन्तु जब तक किसी जीवित बच्चे में नेहरू-रक्त की एक भी बूँद रहेगी, तब तक वह पराजय स्वीकार नहीं कर सकता (मृत्यु के कुछ दिन पहले)।"

—पं० मोतीलाल नेहरू

इस अभागे देश ने जब-जब स्वतन्त्रता के लिए संग्राम छेड़ा है, तब-तब उसे भीषण क्षति उठानी पड़ी है। ऐसे ही विकट समय में इसने महात्मा गोखले को खोया, ऐसी ही विकट परिस्थिति में लोकमान्य तिलक के नेतृत्व से वञ्चित होना पड़ा, ऐसे ही सङ्कट में उसे देशबन्धु दास और पञ्जाब-केसरी से हाथ धोना पड़ा और वैसी ही, वरन् उससे भी विकटतम अवस्था में उसे अपने महान सेनापति पण्डित मोतीलाल नेहरू के अनन्य सहयोग और अद्वितीय परामर्श से वञ्चित होना पड़ा है। परन्तु इन महान पथ-प्रदर्शकों की मृत्यु से देश की राजनैतिक प्रगति में क्या रुकावटें आई हैं? उनमें से हर एक के जीवन का एक कार्य निश्चित था और उसे पूर्ण करने के उपरान्त ही उन्होंने संसार से कूच किया है। महात्मा गोखले ने मिण्टो-मॉर्ले सुधारों की जड़ उखाड़ कर कूच किया था, लोकमान्य तिलक ने भारत के कोने-कोने में 'स्वराज्य के जन्म-सिद्ध अधिकारों' का मन्त्र फूँक कर विदा ली, श्री० देशबन्धु दास ने मॉण्टेगू चेम्सफ़र्ड-सुधार और उसके द्वैध शासन पर कुठाराघात कर अपनी राह ली, और पञ्जाब-केसरी लाला लाजपतराय ने साइमन के आकाश-महल को ढाकर अपना कार्य पूरा किया। उन्हीं की नाईं पण्डित मोतीलाल भी भारत के भावी शासन-विधान की नींव स्थापित कर संसार से कूच कर गए। उन नेताओं में और पण्डित मोतीलाल में अन्तर केवल इतना ही था, कि वे अपने लगाए हुए पौधों को पल्लवित नहीं देख सके; और पण्डित जी ने उन्हें पल्लवित देख लिया है। जिस शासन-विधान की उन्होंने नींव डाली थी, उसे वे थोड़े समय जीवित और रहते तो, भारत में स्थापित देख लेते। देश के वर्तमान संग्राम के वे प्रमुख जनरल थे और ऐसी विकट अवस्था में उनकी मृत्यु से देश की भीषण क्षति हुई है। उन्होंने अपने जीवन में जिस प्रकार जीवन और मृत्यु से युद्ध किया है, उससे सदियों तक भारत की सन्तान को शिक्षा मिलेगी।

पण्डित मोतीलाल नेहरू ने अपना जीवन राजाओं की नाईं व्यतीत किया है और उनकी मृत्यु भी राजा की नाईं ही हुई है। पण्डित मोतीलाल के पास जो सात्विक और मूल्यवान निधियाँ थीं, वैसी निधियाँ किस राजा या महाराजा को नसीब हुई हैं? पवित्रता और साधुता, सौन्दर्य और शील, कविता और सङ्गीत, स्नेह और प्रेम मूर्तिमान होकर उनके सम्मुख उपस्थित रहे हैं; और मृत्यु के समय उन्होंने भारत को उस सत्य की प्राप्ति के लिए दृढ़तापूर्वक युद्ध करते अपनी आँखों से देख लिया है, जो उसकी सदैव थाती रही है। उन्होंने मृत्यु के समय जिस नवीन-

एसेम्बली की पोशाक में

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू

प्राचीन भारत के दर्शन किए हैं, उसका न तो कोई चित्रकार चित्र ही चित्रित कर सकता और न कोई कवि उस काव्यमय भारत पर अपनी लेखनी उठा सकता है।

पण्डित मोतीलाल जी का जन्म सन् १८६१ के मई में हुआ था। अतएव मृत्यु के समय उनकी आयु लगभग ७० वर्ष की थी। आपके जन्म के चार महीने पूर्व आपके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। आपके पिता दिल्ली के शहर-कोतवाल थे। पिता की मृत्यु के बाद आपके लालन-पालन तथा शिक्षा का भार आपके ज्येष्ठ भ्राता पण्डित नन्दलाल नेहरू ने लिया। घर पर अरबी तथा फ़ारसी की शिक्षा पाने के बाद आपने कानपुर के गवर्नमेण्ट हाई-स्कूल से मेट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास की। इसके पश्चात् आप प्रयाग के म्योर कॉलेज में भरती हुए और यहाँ उन्होंने चार साल तक शिक्षा प्राप्त की, परन्तु कई अनिवार्य कारणों से आप परीक्षा में न बैठ सके। इसके बाद आपने हाईकोर्ट की वकालत की परीक्षा के लिए तैयारी की और उसमें आप सर्व-प्रथम उत्तीर्ण हुए।

परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आपने कानपुर में वकालत आरम्भ की और तीन वर्ष के बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत करने की इच्छा से आप इलाहाबाद में आकर रहने लगे। थोड़े दिनों में ही पण्डित नन्दलाल जी की मृत्यु हो गई। आप भी हाईकोर्ट के वकील थे। अभी तक पण्डित मोतीलाल को इनसे बहुत सहायता मिला करती थी, परन्तु इनकी मृत्यु के बाद गृहस्थी का सारा भार इन्हीं के सिर पर आ पड़ा। थोड़े दिनों में ही पण्डित जी ने अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। आपकी गणना हाईकोर्ट के सर्व-श्रेष्ठ वकीलों में की जाने लगी। अपनी अद्वितीय वक्तृत्व-शक्ति तथा अपूर्व बुद्धिमत्ता से वे अपने विरोधी वकील को चकित कर देते थे। आप में मानसिक कार्य करने की शक्ति अपार थी। अपनी बहस में वे हज़ारों पुराने मुक़दमों को उदाहरणार्थ उपस्थित करते थे। इस विषय में आपकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस सर ग्रिमवुड मियर्स ने कहा था कि "आप लोगों में से बहुतों को वह दिन याद होगा, जब उन्होंने इटावा के मुक़द्दमे में रानी किशोरी की ओर से बहस की थी। संसार में कोई ऐसा वकील नहीं है, जो इस मुक़द्दमे में पं० मोतीलाल से अधिक बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर सकता।"

परन्तु आप अपना सारा समय वकालत ही में नहीं लगाते थे। आरम्भ से ही उन्होंने राजनैतिक कार्यों में दिलचस्पी दिखाई थी। उस समय राष्ट्रीयता का स्रोत बहुत मन्द गति से बहता था, और

भारत का एक आदर्श परिवार

तुम सलामत रहो हज़ार बरस ! हर बरस के हों दिन पचास हज़ार !!
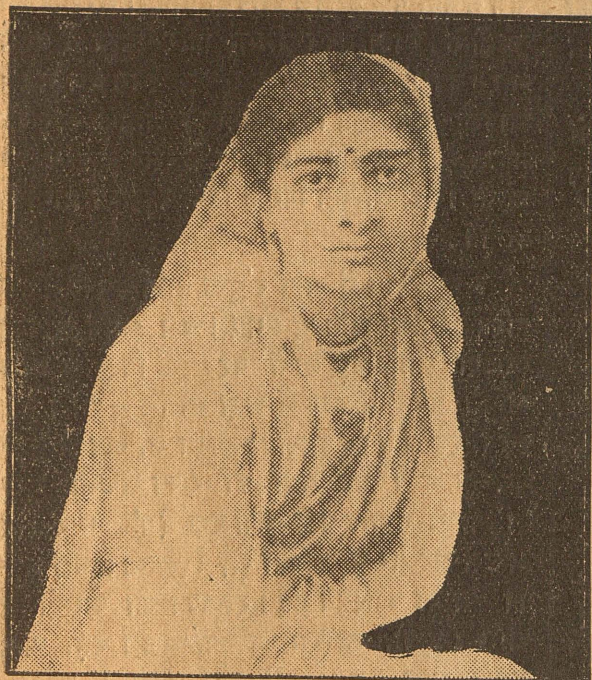
स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू की आदर्श धर्मपत्नी और राष्ट्रपति की जननी—श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू
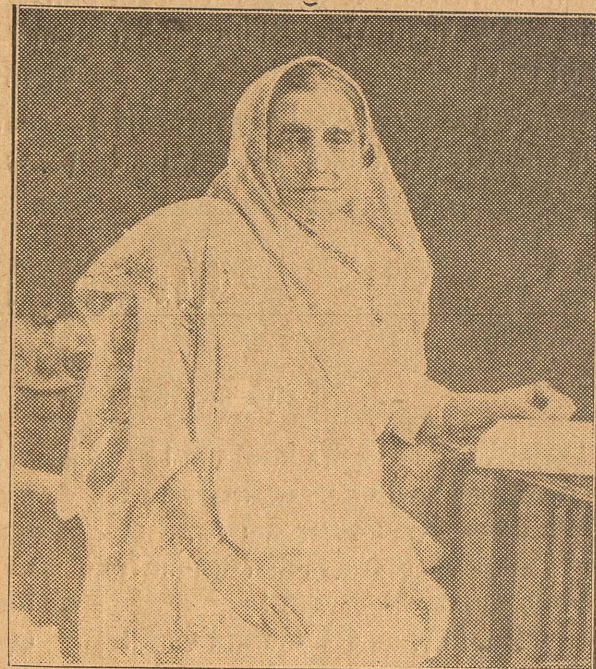
राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की सौभाग्यशालिनी धर्मपत्नी—श्रीमती कमला नेहरू

अपनी .कुर्बानी से है
मशहूर नेहरू ख़ानदान

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू
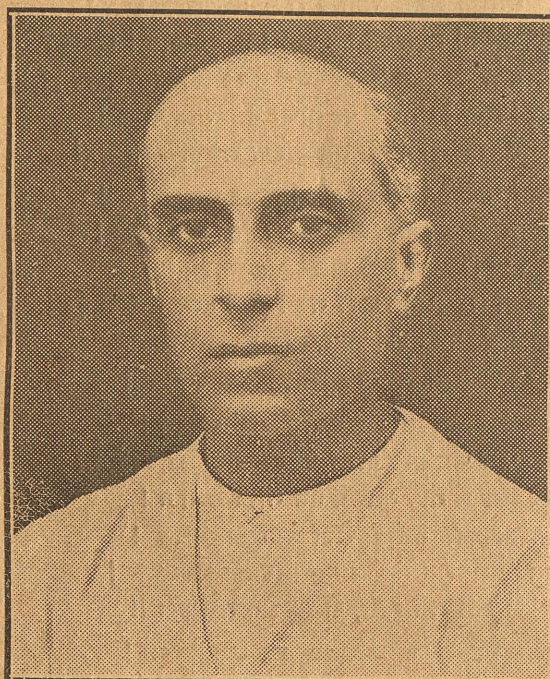
शम्आ-महफ़िल देख ले !
यह घर का घर परवाना है !!

दो आदर्श बहिनें

स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू की ज्येष्ठ कन्या और राष्ट्रपति की सहोदरा—श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

स्वतन्त्रता की दीवानी, राष्ट्रपति की कनिष्ठ सहोदरा—कुमारी कृष्णा नेहरू

भारतीयों को अपनी पराधीनता का पूर्ण बोध न हुआ था। जैसे-जैसे राष्ट्रीय संग्राम ने विशाल रूप धारण किया, वैसे-वैसे पण्डित जी भी उसकी ओर अधिक आकर्षित हुए और अन्त में उन्होंने अपना अमूल्य जीवन राष्ट्रीय संग्राम की वेदी पर चढ़ा दिया।

सन् १९०९ से सन् १९२० तक बराबर आप यू० पी० कौन्सिल के प्रतिनिधि चुने गए। सन् १९२० में असहयोग आन्दोलन के सम्बन्ध में आपने कौन्सिल से त्याग-पत्र दिया था। असहयोग आन्दोलन के स्थगित होने के पश्चात् आप भारतीय एसेम्बली के सदस्य चुने गए। आपने वहाँ स्वर्गीय सी० आर० दास के साथ स्वराज्य-पार्टी की स्थापना की थी।

आपका राजनैतिक जीवन तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। आरम्भ में आप बड़े राजभक्तों में से थे। आपको ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की बातों पर बहुत विश्वास था। परन्तु जैसे-जैसे आप राजनैतिक क्षेत्र में बढ़े, वैसे ही वैसे आपको ब्रिटिश सरकार की कूटनीति का परिचय मिला और अन्त में आप भारत को ब्रिटिश सत्ता के कट्टर दुश्मन बन गए। आपको यह पूर्ण विश्वास हो गया, कि स्वराज्य माँगने से न मिलेगा—स्वराज्य के लिए युद्ध करना पड़ेगा। आत्म-समर्पण के बिना स्वराज्य प्राप्त न होगा।

सन् १९०७ में आप संयुक्त प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् के सभापति चुने गए। उस समय आपको ब्रिटिश लोगों की बातों पर पूर्ण विश्वास था। आपने अपने वक्तव्य में कहा था कि—"मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इङ्गलैण्ड भारत का सब से बड़ा शुभेच्छु है। वह यहाँ का राज्य किसी बुरी कामना से कदापि नहीं चला रहा है।" धीरे-धीरे ब्रिटिश-सरकार ने अपना रङ्ग दिखाया; बङ्ग-भङ्ग की समस्या उपस्थित हुई। स्वराज्य का आन्दोलन आरम्भ हुआ, स्वदेशी का आन्दोलन बढ़ा और उसके साथ दमन ने भी ज़ोर पकड़ा। स्वदेशी आन्दोलन के नेताओं ने विदेशी माल के बहिष्कार का आन्दोलन उठाया, परन्तु पण्डित मोतीलाल जी इससे सहमत न थे। वे स्वदेशी के विरोधी न थे, परन्तु वे नाशकारी नीति द्वारा इङ्गलैण्ड को अप्रसन्न नहीं करना चाहते थे। वे राजनैतिक सत्ता का विरोध नहीं करना चाहते थे और राजक्रान्ति से उन्हें बड़ी घृणा थी।

युद्ध के समय पण्डित जी ने सरकार को भरपूर सहायता दी। संयुक्त प्रान्त में 'इण्डियन डिफ़ेन्स फ़ोर्स' स्थापित करने का सब श्रेय पण्डित जी को ही है। परन्तु ब्रिटिश सरकार की दमन-नीति ने उनके शुद्ध हृदय में अविश्वास का बीज बो दिया। "होमरूल" आन्दोलन की नेत्री श्रीमती बेसेण्ट को कारावास दिया गया और हर तरह से जनता के राष्ट्रीय भावों का दमन करने का प्रयत्न किया जाने लगा। यह पण्डित जी के लिए असह्य था। आप भारत-सरकार के पक्के विरोधी बन गए, परन्तु इस समय भी आप ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की शुभ कामना पर विश्वास करते रहे। सन् १९१७ की प्रान्तीय परिषद् की बैठक में आप ने लखनऊ में कहा था, कि मैं भारत की सरकार पर ज़रा भी विश्वास नहीं करता, वह भारत की राष्ट्रीय कामनाओं का दमन कर रही है, परन्तु फिर भी मैं ब्रिटिश जाति की और ब्रिटिश नेताओं की न्याय-प्रियता पर विश्वास करता हूँ। मुझे आशा है कि ब्रिटिश सरकार हमारी सारी समस्याओं को न्यायोचित रूप से हल करेगी।

परन्तु धीरे-धीरे उन्हें ब्रिटिश नेताओं की भी कूटनीति साफ़ नज़र आने लगी। वे समझ गए कि ब्रिटिश सरकार सदा अपने अधिकारियों का साथ देगी, सदा उनके कार्यों की प्रशंसा करेगी, चाहे वे कितने ही नृशंस तथा घृणित क्यों न हों। पञ्जाब के घोर दमन तथा जलियाँवाला बाग़ की पाशविक घटनाओं से उनकी आँखें खुल गईं। वे समझ गए कि ब्रिटिश नेताओं की वाह्य सहानु-

शोकोद्गार

[श्री० चन्द्रनाथ जी मालवीय "वारीश"]

काल ! काल ! रे क्रूर काल ! रे नीच नारकी काल !
क्या करने को तू आया था, बन कर भीषण व्याल ?
हुआ न था सचमुच सूर्योदय, था वह प्रातःकाल,
हाय ! छीन ले गया किधर तू मोती-सा मणि-माल ??
वृद्धावस्था में भारत-माता के एक सहारे !
कहाँ गए ! तुम छोड़ हमें हा ! मोतीलाल हमारे !!

चारों ओर घटा छाई है, आई विपदा आज !
इस भूतल पर गिरी गगन से कैसी यह गुरु-गाज !
जिसके दुख से दुखी हो रहा है यह सकल समाज !
जाता चला अभूतपूर्व वह भूतपूर्व सरताज !!
कहाँ गया ! हा ! कहाँ गया है ? वह अपूर्व अवतारी !
जो मरते दम तक था भारत का सच्चा हितकारी !!

रोते हैं क्यों मान्य मालवी, गाँधी हुए अधीर !
सपरिवार हा ! धीर खो चुके धीर जवाहर वीर !
सब नेतागण के नयनों से निकल रहा है नीर !
फूट-फूट कर भारत माँ है रही हृदय को चीर !!
विह्वल बेसुध हाय ! हो गए भारतवासी सारे !
कहाँ गए ! हा ! कहाँ गए ? प्यारे नयनों के तारे !!

हाय ! अचानक लगा दिया है किसने भीषण आग !
नाच रहा है आज आँख में किस त्यागी का त्याग ?
फूटा कैसे हाय ! अभागे भारत-भू का भाग।
उठ जा सोते हुए सिंह ! हा ! जाग ! जाग ! फिर जाग !!
जननी के उद्धार हेतु जिसने जीवन था धारा।
कहाँ गया ! हा ! कहाँ गया ? वह नेता पूज्य हमारा ??

देख न सकता था जी कर वह और अधिक अपमान !
देश-हेतु मर मिट जाने को जिसने जाना मान।
तन-मन-धन-जन जिसने सब कुछ, दिया देश को दान !
जीवन व्यर्थ जान, कर डाला जीवन का बलिदान !
भारत को स्वतन्त्र करने की जिसने ज्योति जगाई।
कौन छीन ले गया उसे रे काल दुष्ट दुखदाई ??

कहाँ गए ? कमला के प्रिय-पति के भी हे प्रिय प्राण !
विजय-लक्ष्मि के जनक ! कहाँ हो ? जवाहिरों की खान !
मोती-लाल-रत्न भारत के हाय ! सुनोगे क्या न ?
चले गए ? तुम चले गए ! कर भारत को वीरान !!
ढह जाएगी स्वयम् शीघ्र यह सत्ता ही सरकारी !
लौट पड़ो ? हाँ ! लौट पड़ो न ? स्वराज्य-भवन अधिकारी

हे मणि-माल देश के, हे माता के उन्नत भाल !
निधना-दीना-हीना की गुदड़ी के मोती-लाल !
काल तुल्य स्वयमेव शत्रुओं को थे तुम सब काल !
तब फिर तुमको कैसे कवलित कर सकता था काल !!
लड़े ! लड़े ! हा ! लड़े ! अन्त तक उसे जीत कर हारे !!
पदक-प्राप्ति के हेतु हाय ! क्या तुम हो स्वर्ग सिधारे !

अन्धकारमय दुर्गम पथ के हे अन्धी के दीप !
जगमग सजग जवाहिर से हे नर-रत्नों के सीप !
लोकमान्य ! गोखले ! लाजपत ! किसके हाय ! समीप ?
कहाँ गए ? हा ! कहाँ गए ? तुम मोतीलाल महीप ??
हाय ! तुम्हारे ही बल पर गाँधी ने हिम्मत बाँधी !
कैसी चुप्पी साधी तुमने, देख अचानक आँधी !!

दीन देश के देव ! अरे ! ओ ! विकट साहसी शूर !
ओजमयी-वाणी में थी वह शक्ति भरी भरपूर !
सिंहनाद से कर देते थे अस्मिद चकनाचूर !
कहाँ गए ? हा ! कहाँ गए ? हा ! हमसे कितनी दूर !!
जाग्रत-भारत हो स्वतन्त्र तब सारी जगती जाने !
मर कर जीते रहते हैं आज़ादी के दीवाने !!

रोते ही रोते कितनी सदियाँ हैं हुईं व्यतीत !
फल फलने ही वाला था मनचीता, आशातीत !
जब सुख से गाने वाले थे हम गौरव के गीत !
क्रूर-काल ने छेड़ा कैसा प्रलयङ्कर सङ्गीत !!
भाग्य बराबर भाग्यहीन इस हीन-हिन्द का फूटा !
रोते ही रोते रहते, रोने का तार न टूटा !!

तीस कोटि का कुलिश-कलेजा टूक-टूक है टूक !
भारतवासी मन्त्र-मुग्ध से हाय ! हुए हैं मूक !
हाय ! हाय ! यह हाय ! हृदय में आग रही है फूक !
भूल नहीं सकते हम तेरे आह ! ख़ून के थूक !!!
अरे काल ! याचना अगर हमसे पहले कर लेते !
कटा-कटा अपने-अपने सिर तीस कोटि धर देते !!

स्वतन्त्रता के सच्चे सैनिक ! हे स्वदेश-सरदार !
हे भारत के रत्न ! देश-नौका के खेवनहार !
कहाँ गए ! तुम इसे छोड़ कर, यह तो है मँझधार !
कर देते इस पार इसे, या कर देते उस पार !!
रत्नाकर में रह न गया है मूल्यवान अब मोती !
भारत-माँ के मुकुट ! कि जिससे समता तेरी होती !

भूल गए ? हा ! करुण-कथाएँ, मान भूल औ चूक !
भूल गए ? हम जान-जान कर उनका बुरा सलूक !
भूल गए ? कितनी घटनाएँ बन कर बिलकुल मूक !
भूल गए ? कितने बच्चों की कोयल की सी कूक !!
आज अचानक आग हृदय में फूक रही है फूक !
भूल नहीं सकते ! लाठी के दाग़ ! ख़ून के थूक !!!

सोज़े-उल्फ़त ने जला कर ख़ाक कर डाला मुझे !
मैं नहीं मिलने का अब, ढूँढ़ा करे दुनिया मुझे !!

—'बिस्मिल'

"आनन्द-भवन" के नाम से विख्यात—स्वर्गीय पण्डित जी का राजमहल
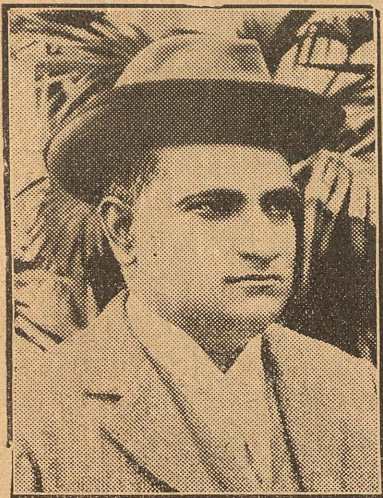
अपनी वकालत प्रारम्भ करने के समय स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू का चित्र

सन् १९१२ का लिया हुआ स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू का चित्र
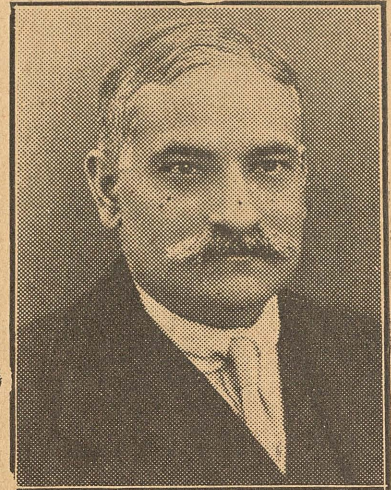
सङ्गम के पुनीत तट पर स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू के दाह-संस्कार का रोमाञ्चकारी दृश्य

बैठे हुए—पं० जवाहरलाल नेहरू—खड़ी हुई—श्रीमती सरोजिनी नायडू तथा ६ठी फ़रवरी को प्रातःकाल ६½ बजे विधवा होने वाली, देवी स्वरूपरानी

भूति एक जाल-मात्र है। सन् १९१९ के सितम्बर में इलाहाबाद की जनता के सामने भाषण देते हुए आपने कहा था कि—"ब्रिटिश जनता को सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि संसार की कोई जाति अपने अत्याचारियों से बदला लिए बिना चुप नहीं रह सकती। इस विषय में हम अभी बदला नहीं चाहते, हम चाहते हैं कि हमारे साथ न्याय किया जावे। हम चाहते हैं कि हमें अपने ऊपर किए गए अत्याचारों का इज़हार करने का मौक़ा दिया जाय और इन अत्याचारों को दूर करने का साधन ढूँढ़ निकाला जाय। इन अत्याचारों की पूर्ति केवल धन से नहीं हो सकती, न केवल कुछ अधिकारों के देने से हो सकती है। इस महान क्षति की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण शासन-प्रणाली को बदलने की आवश्यकता है, जिससे भविष्य में ऐसे अत्याचार न हो सकें। यह कार्य तो केवल स्वराज्य प्राप्त करने पर ही सिद्ध हो सकता है।"

इन शब्दों से पण्डित जी के आन्तरिक परिवर्तन का पूर्ण परिचय मिलता है। उन्होंने स्वतः जलियाँवाले बाग़ के सम्बन्ध में तहक़ीक़ात की थी। उस महान दुर्घटना के सम्बन्ध में उन्होंने जो पाशविक तथा क्रूर कृत्यों की कथा सुनी थी, उससे उनका हृदय बिल्कुल बदल गया और दुर्घटना के समय से वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कट्टर शत्रु बन गए।

जलियाँवाले बाग़ के भयङ्कर हत्या-काण्ड के बाद अमृतसर में कॉङ्ग्रेस का जो अधिवेशन हुआ था, उसके सभापति पण्डित मोतीलाल नेहरू ही हुए थे और उसी में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन की नींव डाली गई थी। इसी समय से पण्डित मोतीलाल महात्मा गाँधी के कट्टर अनुयायी और उनके जबर्दस्त जनरल बन गए।

देश में असहयोग का तुमुल संग्राम छिड़ा। कौन्सिलों, अदालतों और सरकारी स्कूलों तथा कॉलेजों का बहिष्कार हुआ। मालूम होता था, कि यह युद्ध भारतीय स्वतन्त्रता का अन्तिम युद्ध होगा। परन्तु, कहा जाता है, जनता महात्मा गाँधी के अहिंसा के आदर्श पर टिकी न रह सकी और उन्हें आन्दोलन बन्द कर देना पड़ा। यह सार्वजनिक संग्राम बन्द होने पर भी पण्डित मोतीलाल का संग्राम बन्द न हुआ। वे जबर्दस्त योद्धा थे और चैन से बैठना उनके लिए असम्भव था। असहयोग आन्दोलन स्थगित होने पर उन्होंने वर्तमान शासन-प्रणाली की जड़ काटने के अन्य उपाय सोचे। उन्होंने और श्री० देशबन्धु दास ने कौन्सिलों पर अधिकार जमा कर गवर्नमेण्ट का आन्तरिक बहिष्कार करने की ठानी और इसी उद्देश्य से दोनों ने मिल कर स्वराज्य-पार्टी की स्थापना की। श्री० देशबन्धु दास और पण्डित जी स्वराज्य-पार्टी के नेता बने और उनके साथ असहयोग आन्दोलन के समय के
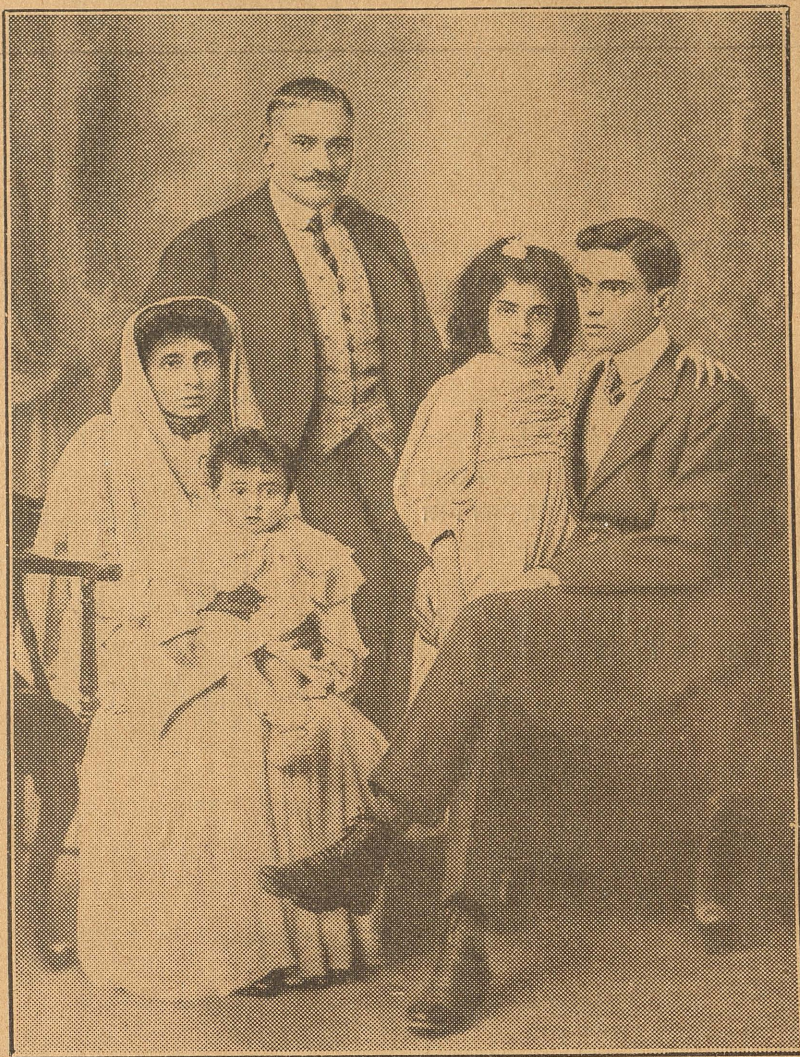
एक पुराना पारिवारिक-चित्र

खड़े हुए—स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू। बैठे हुए—राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू (उनकी गोद में श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित) और उनकी माता (उनकी गोद में कुमारी कृष्णा नेहरू)

कई प्रधान नेताओं ने एसेम्बली तथा कौन्सिलों में प्रवेश कर उन पर अपना आतङ्क छा दिया। और इसके फल-स्वरूप गवर्नमेण्ट को रह-रह कर मुँह की खानी पड़ी। परन्तु भारत के भूतपूर्व सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट्स मि० मॉण्टेगू के इण्डिया ऑफ़िस छोड़ते ही हिन्दू-मुसलमानों का वैमनस्य बढ़ने लगा और देश में जगह-जगह हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों का सूत्रपात्र हो गया। इन झगड़ों के कारण महासभा और तबलीग़ तथा तञ्ज़ीम आन्दोलन की उत्पत्ति हुई और फलतः स्वराज्य पार्टी का प्रभाव कम होने लगा। इसी अवसर पर जनता के घोर विरोध करने पर भी साइमन कमीशन की नियुक्ति हुई। कमीशन की नियुक्ति से देश भर में आग लग गई। गवर्नमेण्ट के हाथों न्याय पाने की उसे बिल्कुल ही आशा न रह गई और भारतीय राष्ट्रीयता और गवर्नमेण्ट के बीच में भेद-भाव का ज्वार-भाटा उमड़ पड़ा। लॉर्ड इर्विन ने सन्, १९२९ की ३१वीं अक्टूबर की घोषणा से इस ज्वार-भाटे को शान्त करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह केवल बाढ़ को तिनके से रोकने का प्रयत्न था। वह घोषणा जनता को सन्तुष्ट न कर सकी। इसके फल-स्वरूप कलकत्ता कॉङ्ग्रेस ने, जो पण्डित जी के सभापतित्व में हुई थी; इस बात की घोषणा कर दी कि यदि एक साल के अन्दर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना न करेगी तो वह पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर देगी। गवर्नमेण्ट इस समय भी जाग्रत सिंह की शक्ति का अन्दाज़ न लगा सकी और उसने कॉङ्ग्रेस की इस चेतावनी को गीदड़भभकी मात्र समझा। कॉङ्ग्रेस के लाहौर के अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी गई और उसमें महात्मा गाँधी को सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ करने का सम्पूर्ण अधिकार दे दिया गया। लाहौर कॉङ्ग्रेस के बाद देश ने जैसी करवट बदली है, उसे लिखने की आवश्यकता नहीं है। १२वीं मार्च भारत के इतिहास में सुवर्ण-अक्षरों से लिखी जायगी। इसी दिन महात्मा गाँधी ने डाँडी के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की थी। ६ठीं अप्रैल नमक-क़ानून भङ्ग करने के लिए निश्चित की गई थी। वास्तव में भारत के वर्तमान विराट आन्दोलन का श्रीगणेश उसी दिन हुआ था। उस दिन से भारत में राजनैतिक असन्तोष की जो भयङ्कर लहर आई, उसे गवर्नमेण्ट न दबा सकी। उसने भारत के साठ हज़ार से ऊपर नर-नारियों को जेलों में ठूँस कर उसे दबाने का प्रयत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सकी। पण्डित मोतीलाल भी इसी संग्राम में जेल भेजे गए थे। और बीमार होकर उन्होंने जो चारपाई वहाँ पकड़ी उसे वे मृत्यु के पहले न छोड़ सके। लोगों का कहना है, कि यदि वे जेल न जाते तो शायद उनकी मृत्यु इतनी जल्दी न होती।

पण्डित मोतीलाल सिद्धान्तवादी न थे; वे एक दक्ष, दूरदर्शी और व्यवहार-चतुर राजनीतिज्ञ थे; और उनकी इस व्यावहारिक प्रतिभा का आभास 'नेहरू कमिटी रिपोर्ट' से मिलता है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के वे बड़े पक्षपाती थे; और यदि वे दोनों को ऐक्य-सूत्र में बाँधने में सफल नहीं हुए तो उसका दोष उन्हें नहीं दिया जा सकता। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम भाग में देश की स्वतन्त्रता पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। देश के लिए उन्होंने अपने राजाओं के से सुख-भोग और हज़ारों रुपए माहवार की आमदनी पर लात मार दी। वे एक प्रतिभाशाली वकील, अनन्य देशभक्त, जबर्दस्त सङ्गठनकर्ता और कुशल राजनीतिज्ञ थे। उनकी मृत्यु से इस सङ्कटापन्न समय में देश को जो भयानक क्षति पहुँची है, उसकी पूर्ति निकट-भविष्य में असम्भव है। वह सर्व-शक्तिमान परम-पिता उनकी आत्मा को अक्षय शान्ति और परिवार के लोगों को धैर्य प्रदान करें—'भविष्य' परिवार की ओर से यही हमारी प्रार्थना है।

* * *

साम्यवादी रूस और पूँजीवादी यूरोप

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

आज हम लोगों में से बहुत कम यह जानते हैं कि हमारी वर्तमान सामाजिक तथा राजनैतिक बुराइयों का पूँजीवाद से कितना घनिष्ट सम्बन्ध है। संसार में पूर्ण शान्ति स्थापित करने के लिए यह परमावश्यक है कि संसार से पूँजीवाद का अन्त ही कर दिया जावे। जब तक संसार में प्रजातन्त्र की स्थापना नहीं हुई थी, शान्ति के उपासक यह समझते थे कि संसार के राजनैतिक झगड़ों तथा युद्धों के लिए संसार के राजा या महाराजा ज़िम्मेदार हैं। धीरे-धीरे यूरोप में प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। राजाओं का पुराना वैभव तथा ऐश्वर्य, उनकी पुरानी सत्ता का अन्त हुआ और राज्य के शासन का भार प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में आया। परन्तु इसी काल में पँजीवाद की भी नींव पड़ी। थोड़े दिनों में ही यूरोप के देशों में विशाल कारख़ाने तथा खदानों की स्थापना हुई। देश की अधिकतर जनता बड़े-बड़े पूँजीपतियों के यहाँ मज़दूरी करके अपना भरण-पोषण करने लगी, उनकी स्वच्छन्दता तथा स्वतन्त्रता के दिन जाते रहे।

अब उन्हें जीवन-निर्वाह का केवल एक साधन रह गया और वह था पूँजीपतियों के कारख़ानों में नौकरी करना। देश की सारी जनता मुट्ठी भर पूँजीपतियों की नौकरी करके अपनी उदर-पूर्ति करने लगी। पूँजीपतियों ने अपने आर्थिक प्रभुत्व द्वारा अन्य क्षेत्रों में भी जनता पर अपनी सत्ता क़ायम की। अपने वैभव तथा ऐश्वर्य के कारण समाज में प्रथम गिने जाने लगे। राजनैतिक क्षेत्र में भी सारी सत्ता उन्हीं के हाथ में आ गई। उन्होंने इस सत्ता का उपयोग अपने अधिकारों को बढ़ाने तथा पूँजीवाद को दृढ़ बनाने के लिए किया। अपने देश में उन्होंने हर तरह से जनता को दासता के बन्धन में कसा और अपनी विदेशी नीति में उन्होंने निर्बल तथा छोटे देशों को अपने क़ब्ज़े में किया और उन्हें पराधीनता की शृङ्खला में कसा। यह उनकी उन्नति के लिए अति आवश्यक था। देश के कारख़ानों में कम मज़दूरी पर धड़ाधड़ माल बन रहा था। इस माल की खपत के लिए ग्राहकों की आवश्यकता थी। इस कमी को पूरी करने के उद्देश से उन्होंने निर्बल देशों को अपने वश में किया और अपनी आर्थिक नीति द्वारा उनके उद्योग-धन्धों का नाश करके उन्हें अपने माल का ग्राहक बनाया। कई देश ऐसे थे जो वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग करके अपने देश में कारख़ानों की स्थापना कर रहे थे। पर इन पूँजीवादी बलिष्ठ देशों के पञ्जे में पड़ते ही उनकी अवनति का आरम्भ हुआ। बलिष्ठ विदेशी सरकार द्वारा प्रोत्साहित विदेशी माल ने उनके सारे उद्योग-धन्धों का विनाश किया। केवल यही नहीं, इस विषय में पूँजीवादी देशों में आपस में प्रतिस्पर्धा होने लगी और इन निर्बल देशों को अपने-अपने क़ब्ज़े में करने के उद्देश्य से ये आपस में युद्ध करने लगे। यदि गत महायुद्ध के मूल कारणों पर ध्यान दिया जावे तो इस मत की सत्यता स्पष्टतया प्रकट हो जावेगी। सन् १७७० के पहिले जर्मनी में वर्तमान उद्योग तथा कला का विकास भी नहीं हुआ था। परन्तु कुछ दिनों बाद ही उसने इस विषय में आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई। जर्मनी में लोहा तथा कोयला बहुतायत से पाया जाता है। वह देशी लोहे से बहुत सस्ता फ़ौलादी तथा अन्य माल तैयार करने लगा। धीरे-धीरे और देश जर्मनी के सस्ते तथा मज़बूत माल को ख़रीदने लगे। इङ्गलैण्ड के पूँजीपति भला यह कब देख सकते थे। उन्होंने जर्मनी के विरुद्ध आन्दोलन उठाना आरम्भ किया। जर्मनी की छोटी-छोटी ग़लतियों को विशाल रूप दिया जाने लगा। धीरे-धीरे एक और पूँजीवादी देश आगे बढ़ा। फ़्रान्स तथा जर्मनी में पुराना बैर चला आता है। उसने इङ्गलैण्ड का साथ दिया। यही गत संसार-व्यापी महायुद्ध का मूल कारण हुआ।

आज यूरोप के पूँजीपतियों ने एक नवीन देश की ओर अपनी आँख फेरी है। साम्यवादी रूस उनका कट्टर शत्रु है। वह संसार के सारे देशों की स्वतन्त्रता का समर्थक है। इसके अतिरिक्त अपनी अपूर्व उन्नति द्वारा वह हर तरह से अपनी उत्पत्ति को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। एक तो यूरोप के पूँजीपति साम्यवादी आन्दोलन से यों ही रुष्ट हैं, फिर रूस की वर्तमान औद्योगिक उन्नति ने उनके जेब को भी कुछ क्षति पहुँचाई है। पूँजीपतियों के लिए यह सब असह्य हो रहा है। इसलिए फ़्रान्स तथा इङ्गलैण्ड के पूँजीपति यह कह रहे हैं
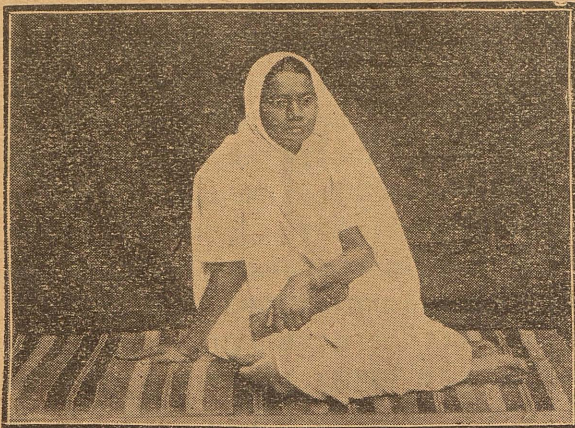
कुमारी पानबाई थेकरसी

जो बेलगाँव की उत्साही कॉङ्ग्रेस प्रचारिका हैं और जिन्हें हाल ही में ६ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

कि रूस अपने देश में उत्पन्न हुए गेहूँ को अन्य देशों में सस्ते भाव से बेच कर हमारे देशी कृषि के उद्योग का नाश करने का प्रयत्न कर रहा है। अभी तक उन्होंने रूस की शासन-प्रणाली की निन्दा की थी। उन्होंने अपने पत्रों में रूस विरोधी लेखों को सर्व-प्रथम स्थान दिया था। उन्होंने अपने देश के मज़दूरों से कहा था, "कि रूस में आज दासता तथा दरिद्रता का राज्य है। थोड़े दिनों में साम्यवादी सरकार का दिवाला निकल जाएगा और रूस को फिर से पूँजीवाद स्वीकार करना पड़ेगा।" परन्तु आज उन्होंने एक नवीन आन्दोलन उठाया है। यह रूस को बदनाम करने की एक नवीन योजना मात्र है। फ़्रान्स कहता है कि रूस अपना गेहूँ सस्ता बेचकर पूँजीवादी देशों के व्यापार का नाश करना चाहता है, परन्तु फ़्रान्स की गेहूँ की ख़रीद देखने से मालूम होता है कि रूसी गेहूँ उसकी सारी ख़रीद का केवल $\frac{१}{१००}$ भाग है। क्या रूसी गेहूँ जो केवल $\frac{१}{१००}$ है, फ़्रान्स के सारे व्यापार को उलट सकता है? फ़्रान्स के बाद इङ्गलैण्ड का नाम आता है। इङ्गलैण्ड के पूँजीपति चिल्ला रहे हैं कि रूसी गेहूँ अवश्य रोका जाना चाहिए। रूस हमारे कृषिकों को बहुत कष्ट पहुँचा रहा है। ये सब बातें केवल एक ढोंग मात्र हैं। यूरोप के पूँजीवादी देश, जिनमें इङ्गलैण्ड तथा फ़्रान्स-सर्व प्रथम हैं, साम्यवादी रूस से बहुत रुष्ट हैं। वे यह जानते हैं कि यदि रूस अपने महान कार्य में सफल हुआ तो साम्यवाद का तूफ़ान सारे संसार में फैल जावेगा और पूँजीवाद का कहीं पता भी न चलेगा। इसलिए वे रूसी सरकार के विरुद्ध हर तरह से आन्दोलन उठा रहे हैं। संसार के गेहूँ के व्यापार में रूस का हिस्सा केवल दो फ़ी सदी है। ऐसी दशा में कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति इसमें विश्वास नहीं कर सकता कि रूस संसार के व्यापार को क्षति पहुँचा सकता है।

वास्तविक बात तो यह है कि गत महायुद्ध से पहिले रूस संसार में सब से ज़्यादा गेहूँ पैदा करता तथा बेचता था। परन्तु साम्यवादी राजक्रान्ति के झगड़ों से उसकी उत्पत्ति बहुत घट गई थी। इस बीच में इस कमी को पूरी करने के लिए और कई देश अधिक गेहूँ पैदा करने लगे थे। अब हाल में जब रूस की उत्पत्ति फिर बढ़ी, तो लोग यह समझने लगे कि रूस अपना गेहूँ दाम घटा कर बेच रहा है और इस तरह उनके व्यापार का नाश कर रहा

परन्तु गेहूँ का तो एक बहाना मात्र है। यूरोप के पूँजीपति आज यह देख रहे हैं कि साम्यवादी शासन में रूस ने अपूर्व उन्नति कर दिखाई है। सारे देश में कारख़ाने बन रहे हैं। रूस में खनिज पदार्थ बहुतायत से पाए जाते हैं। उसकी ज़मीन उपजाऊ है और उसके निवासी भी परिश्रमी हैं। ऐसी दशा में बहुत सम्भव है कि कुछ दिनों में रूस संसार में उद्योग का एक महान केन्द्र हो जावे और अपनी सारी चीज़ें अपने देश में बना सके। रूस संसार के $\frac{१}{६}$ भाग में फैला हुआ है। यूरोप के पूँजीपति यह देख घबरा रहे हैं कि इतनी बड़ी सोने की चिड़िया हाथ से निकली जा रही है। यही नहीं, उन्हें यह डर है कि रूस अपने सस्ते माल को बेच कर एशिया के सारे देशों में इनके व्यापार का नाश कर देगा। किसी समय जर्मनी ने भी यही किया था। उसने विशेष कर भारत तथा चीन में अपना सिक्का पूरा-पूरा जमा लिया था। अङ्गरेज़ी माल की अपेक्षा इन देशों के निवासियों को जर्मनी का माल कहीं ज़्यादा पसन्द था। यह देख कर ब्रिटिश पूँजीपतियों को प्रतिस्पर्धा हुई। उन्होंने किसी तरह जर्मनी के विरुद्ध आन्दोलन उठाया। उसे छेड़ना आरम्भ किया। जर्मनी भी अपने नवीन गौरव से फूला नहीं समाता था। वह अपने को संसार का सब से बलिष्ठ राष्ट्र समझता था। वह इङ्गलैण्ड के जाल में जा फँसा और युद्ध के अन्त में उसे एक ऐसे सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े कि जिससे उसके स्वाभिमान, विश्वव्यापी व्यापार तथा साम्राज्य को अपार हानि पहुँची। कुछ लोग कहते हैं कि यूरोप के पूँजीपति रूस के साथ भी वही चाल चल रहे हैं। वे चाहते हैं, किसी तरह रूस के साथ युद्ध छिड़ जावे। रूस के पास इतना धन नहीं है कि वह युद्ध में सफल हो सकेगा। इस तरह साम्यवादी आन्दोलन का नाश होगा, उसकी वर्तमान सरकार बदनाम होगी और अपने साम्यवादी प्रयत्न में असफल होगी। इसी मतलब को हल करने के उद्देश्य से वे रूस को बार-बार छेड़ रहे हैं। परन्तु रूस और जर्मनी में बहुत अन्तर है। वर्तमान रूस शान्ति का सच्चा उपासक है, प्रजातन्त्र का सच्चा प्रेमी है और साम्राज्यवादी पूँजीपति की कूटनीति को ख़ूब समझता है। उसके महान नेताओं ने एक उच्च आदर्श की वेदी पर अपना जीवन तथा सर्वस्व समर्पण कर दिया है। वे संसार को शान्ति, समता तथा स्वतन्त्रता की ओर खींचने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे पूँजीवादियों की छोटी-छोटी बातों से उत्तेजित न होंगे और न इनकी इस चाल में फँस कर शान्ति के सिद्धान्त को छोड़ेंगे।

देशभक्त
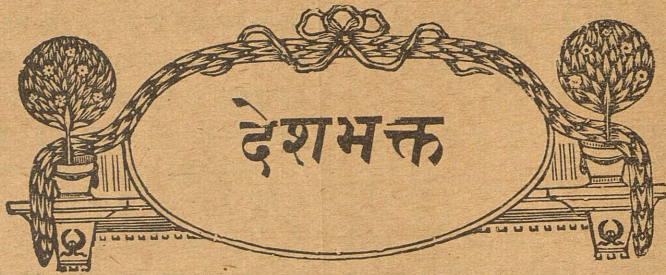
[श्री० जगदीश]

अट्ठारहवीं शताब्दी का अन्त था। पूर्वीय यूरोप तथा मध्य एशिया में ज़ारशाही की तूती बोलती थी। उस समय माताओं को रोते हुए बालकों को डरा कर चुप कराने के लिए केवल ज़ार का नाम लेना ही यथेष्ट था। उस समय रूस का सम्राट था, ज़ार पॉल प्रथम—एक सनकी तथा हृदयहीन पुरुष, जिसको यदि आधा पागल कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी।

सम्राट की सवारी जा रही थी, उसकी आज्ञा थी कि जिस समय सवारी निकले, उस समय कोई पुरुष, स्त्री या बालक कहीं दृष्टि-गोचर न हो और राजपथ के सभी घरों के द्वार तथा खिड़कियाँ बन्द रहें। सम्राट की किसी भी आज्ञा की किञ्चितमात्र अवहेलना का परिणाम था, मृत्यु! इसलिए ज्योंही सम्राट के घुड़सवार उसके आगमन की घोषणा करते हुए निकले, त्योंही सड़कें सूनी हो गईं। चारों ओर के द्वार तथा खिड़कियाँ बन्द हो गईं। परन्तु अभाग्यवश काउण्ट ऑस्टरमैन को, जो अभी तक अपनी लाइब्रेरी में थे, सम्राट के आगमन की सूचना का पता न था। वे कार्यवश अपने ड्राइङ्ग रूम में, जो राजपथ के ऊपर ही था, आए और खिड़की खोल कर बाहर झाँकने लगे। "बैङ्ग!" शब्द हुआ और दूसरे ही क्षण ऑस्टरमैन प्राणों के लिए छटपटाने लगे। यह था, ज़ारशाही की नृशंसता का एक नमूना!

२

राजभवन की सीढ़ियों पर चढ़ कर सम्राट ने सिंहद्वार में प्रवेश किया। वहाँ से सभा-भवन तक सैनिकों की पंक्ति खड़ी थी। प्रत्येक सैनिक को सन्देह-भरी तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए सम्राट ने सभा-भवन में प्रवेश किया। सरदारों ने उठ कर ससम्भ्रम अभिवादन किया। सम्राट राजसिंहासन पर जा विराजे और काउण्ट पैहलिन को याद किया। पैहलिन सम्राट का दाहिना हाथ थे। संसार में यदि वह किसी को अपना मित्र समझता था तो पैहलिन को। यदि उसे किसी का विश्वास था तो पैहलिन का। शेष सारा संसार उसके विचारानुसार उसका शत्रु था।

इस समय काउण्ट पैहलिन सभा-भवन में उपस्थित न थे। इसलिए सम्राट बहुत रुष्ट हुए और कहा—"जब वह आएगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।" पर इस समय क्रोध किस पर उतारा जाए? सम्राट उठा और सभा-भवन के प्रधान द्वार-रक्षक स्टीवेन्सन के समीप पहुँचा। तीक्ष्ण दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देखा। एक पैर आगे उठवा कर ब्रीचेज़ के बटन गिने। एक, दो, तीन चार......बारह! फिर बोला—"मेरी आज्ञा तो शायद १३ बटनों की है?"

"सम्राट की आज्ञा १२ बटनों की है।"—स्टीवेन्सन ने विनम्र भाव से उत्तर दिया। बस, इतना ही यथेष्ट था। सम्राट ने अपनी छड़ी की चाँदी की मूठ से स्टीवेन्सन के मुँह पर अगणित चोटें कीं। जब मुँह तथा दाँतों से निकले हुए रुधिर से उसकी सारी श्वेत वर्दी लाल हो गई तो वह सिंहासन की ओर लौट पड़ा, एक आज्ञा लिखी। इतने में काउण्ट पैहलिन ने सभा-भवन में प्रवेश किया। उसे देख कर सम्राट का रुष्ट वदन प्रफुल्लित हो गया। आज्ञा-पत्र पैहलिन को दिया और स्वयं भीतर चला गया।

पैहलिन ने आज्ञा-पत्र पढ़ा—

"मेरी आज्ञा है कि द्वार-रक्षक स्टीवेन्सन के तेरह दिनों तक प्रति दिन ५० कोड़े लगाए जावें।—पॉल प्रथम।"

पैहलिन ने स्टीवेन्सन को बुलाया और आज्ञापत्र दिखा कर पूछा—"क्या तुम इस अत्याचार के कारण अपने सम्राट से घृणा नहीं करते?"

"मैं ज़ार को घोरतम घृणा की दृष्टि से देखता हूँ।" रुद्ध कण्ठ से स्टीवेन्सन ने उत्तर दिया।

पैहलिन ने आज्ञा-पत्र फाड़ डाला और कहा—"स्टीवेन्सन! आज से तुम मेरे निजी सेवक हुए। द्वार-रक्षक दूसरा नियत होगा।"

३

ज़ार के अत्याचारों से प्रजा की दुर्दशा पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी थी। सारी सेना तथा सामन्त उसके विरुद्ध थे। केवल भुस में चिन्गारी पड़ने भर की देर थी और वह चिन्गारी काउण्ट पैहलिन के वक्षस्थल में छिपी हुई थी। परन्तु अब समय आ गया था कि अग्नि प्रदीप्त कर दी जाए। पैहलिन के नेतृत्व में सामन्तों की गुप्त सभा हो रही थी। काउण्टगण एकमत थे कि साम्राज्य के हित के लिए पॉल प्रथम का अन्त आवश्यक है। प्रजा की भावी आशा थे ज़ार के इकलौते पुत्र युवराज एलेक्ज़ेण्डर। ज़ार जितना हृदयहीन और अत्याचारी था, युवराज उतने ही सहृदय और दयालु थे। पैहलिन का प्रस्ताव था कि ज़ार के अन्त के लिए अगले दिवस की रात के एक बजे का समय उपयुक्त होगा, क्योंकि उस समय राजभवन पर उन्हीं की सेना का पहरा होगा। परन्तु यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि ज़ार के अन्त के पूर्व युवराज की अनुमति ले ली जाए कि वे सम्राट का स्थान ग्रहण करने के लिए तैयार हैं या नहीं। इस काम का भार भी पैहलिन ने अपने ऊपर लिया और सभा विसर्जन के बाद युवराज के महल में पहुँचा। यथारीति अभिवादन के बाद पैहलिन ने कहा—क्या युवराज अपनी प्रजा की पीड़ा से अनभिज्ञ हैं?

युवराज ने उत्तर दिया—"काउण्ट पैहलिन, मैं प्रजा के ऊपर किए गए अत्याचारों से भली भाँति परिचित और दुःखित हूँ।"

"क्या युवराज का यह कर्तव्य नहीं है कि वे अपनी प्रजा का दुःख निवारण करें?"—पैहलिन ने फिर पूछा।

"क्यों नहीं काउण्ट, क्या तुम नहीं जानते कि मैंने रातों जाग-जाग कर इस प्रश्न को हल करना चाहा है? परन्तु मुझे कोई उपाय नहीं दृष्टि-गोचर होता।"

"उपाय तो बिलकुल सरल है युवराज!"

"क्या?"—युवराज ने आशान्वित होकर पूछा!

"अर्थात् युवराज सम्राट का पद ग्रहण कर लें।"—पैहलिन ने गम्भीर भाव से उत्तर दिया।

थोड़ी देर तक तो युवराज इस कथन का अभिप्राय ही नहीं समझ सके। परन्तु ज्यों ही समझ में आया त्यों-ही उनका मुख रोषमय हो गया। उत्तेजित होकर बोले—

"काउण्ट पैहलिन! क्या तुम भी राजद्रोही हो? परन्तु तुम्हें मालूम होना चाहिए कि राजद्रोहियों के लिए मेरे भवन में स्थान नहीं है।" यह कह कर उन्होंने द्वार खोल दिया। परन्तु जब काउण्ट बाहर जाने लगा तो उसी स्वर में युवराज ने फिर कहा—"भविष्य में इसका ध्यान रखना कि तुमने युवराज से क्या कहा है।" और द्वार बन्द कर लिया।

परन्तु पैहलिन अपने निश्चय से विचलित होने वाले न थे। उन्होंने उसी रात में सारी राज्य-सेना तथा सब सामन्तों को सूचना भिजवा दी कि आगामी रात्रि के एक बजे के बाद रूस-साम्राज्य के सम्राट ज़ार एलेक्ज़ेण्डर होंगे।

४

आज सम्राट के महल में प्रातःकाल से ही बड़ी चहल-पहल थी। राजभवन के सिंहद्वार पर कई गाड़ियाँ खड़ी थीं, जिनमें बक्स के ऊपर बक्स लादे जा रहे थे। पैहलिन सम्राट की आज्ञा लेने के लिए जब वहाँ पहुँचे तो द्वार-रक्षक ने उन्हें रोक दिया और कहा—"सम्राट की आज्ञा नहीं है।" जब काउण्ट ने इस चहल-पहल और इस अनोखी आज्ञा का कारण पूछा तो उत्तर मिला—"सम्राट आज अपनी प्रेमिका के साथ भ्रमणार्थ दक्षिण की ओर प्रस्थान करने वाले हैं।"

काउण्ट स्तम्भित रह गए। अपने सारे प्रयत्नों को इस एक ही झटके में सहसा विफल होते देख उनकी आँखों के आगे क्षण-मात्र के लिए अँधेरा छा गया। परन्तु केवल क्षण-मात्र के ही लिए। दूसरे ही क्षण कर्तव्य-वीर काउण्ट फिर अपने निश्चय पर दृढ़ हो गए। द्वार-रक्षक की अनुनय-विनय की परवा न कर वे सीधे सम्राट के कमरे में घुस गए। उस समय सम्राट ओवरकोट पहनने का प्रयत्न कर रहा था। काउण्ट को देख कर उसने ओवरकोट उनके हाथों में दे दिया और पहनाने का इशारा किया। काउण्ट ने ओवरकोट लेकर एक ओर रख दिया तथा राजाज्ञा के लिए बहुत से काग़ज़-पत्र सम्राट के सामने रख कर प्रार्थना की कि यदि सम्राट आज प्रस्थान न करके कल करें तो प्रजा अत्यन्त अनुगृहीत होगी। कुछ पत्रों पर आज ही विचार हो जाना परमावश्यक है।

सम्राट पहले तो सहमत हो गया। परन्तु प्रेमिका की एक फटकार पड़ते ही उसने फिर ओवरकोट उठा लिया। काउण्ट ने बहुतेरा प्रयत्न किया कि आज प्रस्थान न हो, किन्तु सब व्यर्थ। इतने पर भी उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। सम्राट की प्रणयिनी उस समय गाड़ी में पहुँच चुकी थी। सम्राट भी चलने ही वाला था कि उसे अपनी सुँघनी की डिबिया, जो मेज़ पर रक्खी थी, याद आ गई। उसने मेज़ पर रक्खे हुए सारे राजकीय पत्रों को इधर-उधर कर डाले, परन्तु डिबिया न मिली। मिलती भी कैसे? वह तो काउण्ट की भीतरी जेब में पहुँच चुकी थी। सुयोग पाकर काउण्ट ने कहा—"यदि सम्राट चाहें तो मेरी डिबिया ले सकते हैं।"

माँगने पर काउण्ट ने अपनी डिबिया निकाल कर दे दी। सुँघनी सूँघने के पश्चात् सम्राट की दृष्टि डिबिया के ऊपर लगे हुए चित्र पर पड़ी। वह एक अतीव सुन्दर स्त्री का चित्र था। कामलोलुप सम्राट ने पूछा—"यह किस का चित्र है?"

सङ्कोच के साथ काउण्ट ने उत्तर दिया—"सम्राट! यह मेरी प्रेमिका का चित्र है। यदि आज्ञा हो तो आज शाम को हम तीनों साथ ही भोजन करें।"

ज़ार को और क्या चाहिए था? आज्ञा दे दी। प्रस्थान का विचार स्थगित हो गया। गाड़ी में बैठी हुई प्रणयिनी को आज्ञा हुई कि वह अपने महल को चली जाए। काउण्ट का कौशल काम कर गया।

५

काउण्ट पैहलिन अपने कमरे में बैठे हुए अपनी प्रेमिका से वार्तालाप कर रहे थे। उनकी प्रेमिका परलोकगत काउण्ट ऑस्टरमैन की विधवा कॉउटेयस ऑस्टरमैन थी। पैहलिन और कॉउण्टेस में लड़कपन की दोस्ती थी। कुछ समय के लिए पैहलिन को विदेश जाना पड़ा था और इसी बीच में काउण्ट ऑस्टरमैन ने उनकी प्रणयिनी पर डोरे डाल कर उसे अपना लिया था। परन्तु ऑस्टरमैन की मृत्यु के बाद फिर दोनों पुराने प्रेमी मिल गए। इस समय पैहलिन अपनी प्रेमिका को आज सायङ्काल सम्राट के साथ भोजन करने का निमन्त्रण दे रहे थे, इतने में स्टीवेन्सन ने एक गुप्त पत्र लाकर उन्हें दिया। पैहलिन ने अलग जाकर उसे पढ़ा और फिर अपनी जेब में रख लिया। स्त्री-हृदय स्वभावतः ही कुतूहल-प्रिय होता है। कॉउण्टेस के हृदय में कुतूहल उत्पन्न हुआ। उसने पूछा—"क्या कोई गुप्त पत्र है?"

"हाँ।"—काउण्ट ने केवल एक शब्द में उत्तर दिया।

"इतना गुप्त कि मुझे भी नहीं दिखाया जा सकता?"—काउण्टेस ने फिर आग्रह किया।

"इससे भी अधिक प्रिये!"

काउण्टेस का कुतूहल सन्देह में परिणत हो गया। वह चुप हो गई।

पैहलिन रात भर के जागे हुए थे। थोड़ी देर के बाद कुर्सी पर बैठे-बैठे उनकी आँख लग गई। काउण्टेस ने सुयोग पाकर वह गुप्त पत्र उनकी जेब से निकाल लिया और पढ़ा। उसमें लिखा था—"आपके आज्ञानुसार सेना को खूब समझा दिया गया है। ठीक समय पर राजभवन के चारों ओर पहरा रहेगा। पक्षी निकल नहीं सकता। अन्त आपके अधीन है।"

काउण्टेस समझ गई, कि यह पक्षी पॉल प्रथम के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। उसने यह भी अनुमान कर लिया कि इस षड्यन्त्र का प्रधान नायक उसका प्रेमिक काउण्ट पैहलिन है। काउण्टेस ने पत्र को धीरे से यथास्थान रख दिया।

६

रात के आठ बजे थे। राजभवन में भोज हो रहा था। मेज़ की एक ओर ज़ार और काउण्टेस तथा दूसरी ओर पैहलिन बैठे भोजन कर रहे थे। भोजन कर लेने पर पैहलिन आवश्यक कार्यवश बाहर चले गए, परन्तु काउण्टेस को आज्ञा न मिली। पैहलिन के चले जाने पर ज़ार काउण्टेस को अपना सुसज्जित राजभवन दिखलाने के बहाने अपने शयन-गृह में ले गया और द्वार बन्द कर लिया। काउण्टेस ने अपने को बचाने की खूब चेष्टा की, परन्तु कोई फल न हुआ। अन्त में कोई चारा न देख कर उसने कहा—"सम्राट! काउण्टेस पैहलिन मुझे लेने आते होंगे।"

ज़ार ने उत्तर दिया—"प्रिये! तुम भूलती हो, पैहलिन जान-बूझ कर चला गया है। वह जानता है कि उसे अभी नहीं आना चाहिए। प्रमाण-स्वरूप यह डिबिया देखो और पहचानो कि किसकी है और इस पर किसका चित्र है?"

इस प्रकार काउण्टेस के हृदय में पैहलिन के प्रति घृणा का बीज बोकर ज़ार ने अपनी कुचेष्टाएँ सफल होने की आशा की। परन्तु यद्यपि काउण्टेस को ज़ार की बातों का विश्वास हो गया और फल-स्वरूप पैहलिन से उसे बड़ी घृणा हो गई, तथापि वह ज़ार के पन्जे में न आई। ज़ार मदिरा के नशे में चूर था। अन्त में थक कर सो गया। पापी के हृदय में भी कभी-कभी ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। कोई घण्टे भर बाद आँख खुली तो मदिरा का नशा उतर चुका था। काउण्टेस कठघरे में बन्द भयभीता हरिणी के समान एक कोने में बैठी हुई थी। ज़ार ने उठ कर द्वार खोल दिया और क्षमा माँगते हुए उसे जाने की आज्ञा दे दी। काउण्टेस के द्वार पर पहुँचते ही ज़ार ने कहा—"पैहलिन को अभी मेरे पास भेज दो। आज न जाने क्यों मुझे बड़ा भय लग रहा है।"

"क्या काउण्ट के समीप होने पर सम्राट को भय नहीं लगेगा?"—काउण्टेस ने पूछा।

"नहीं। संसार में केवल वही मेरा मित्र है। उसके निकट रहते मुझे कोई भय नहीं है।"

ज़ार का उत्तर सुन कर काउण्टेस को उस गुप्त पत्र का ध्यान आ गया। उसे यह भी ख़्याल आया कि जिस पर ज़ार का इतना विश्वास है वही पैहलिन राजद्रोहियों का नेता और ज़ार के प्राणों का भूखा है। उसे पैहलिन के कपट-व्यवहार पर भी घृणा हुई। मृत्यु के निकट पहुँचे हुए ज़ार के प्रति दया और पैहलिन के प्रति घृणा ने मिल कर काउण्टेस का मुँह खोल दिया। वह बोली—"सम्राट के हित के लिए यह आवश्यक है कि वे काउण्ट पैहलिन पर विश्वास न करें।"

देश-द्रोहियों के प्रति—

[श्री० "अम्बिकेश" राजकवि, रीवाँ]

जिस पर जन्म ले, पला है जिसकी कि गोद,
जिसके पवन से रगों में भरा दम है।
जिसका नमक, पानी विधा अङ्ग-अङ्ग में है
जिसने दिया है शक्ति, शौर्यता अगम है।
जिसके ही रज से है रञ्जित शरीर सारा,
शीश में उदारता का भार भी न कम है।
होकर कृतघ्न यदि उसको भुलाया फिर
उस-सा न और कोई दूसरा अधम है।

मिट्टी से भी अधिक हुआ है गया बीता वह,
सुन्दर मनुष्य चाहे होवे भी कनक का।
बना अपने को धनवान, शक्तिवान रहे,
मूल्य में छदाम का, न कौड़ी का, तनक का।
पशु भी तो रखते हैं थान ही का ध्यान सदा
कैसे हैं मनुष्य वह अपनी सनक का।
जननी के दूध ही की लाज जो न रक्खा फिर
लग सका उसके ठिकाना क्या जनक का।

"पैहलिन विश्वास न करूँ?" ज़ार हँस पड़ा। काउण्टेस द्वार से दो क़दम आगे पहुँच चुकी थी। ज़ार को इस प्रकार हँसते देख उससे न रहा गया। उसने लौट कर कहा—"मैं निश्चय रूप से जानती हूँ कि जिस काउण्ट के ऊपर सम्राट का इतना विश्वास है वह उनके प्राणों का भूखा है।" इस बार ज़ार को काउण्टेस के कथन पर विश्वास हो गया। वह क्षण भर के लिए स्तम्भित होकर वहीं खड़ा रहा। फिर दौड़ कर आगे बढ़ा और काउण्टेस को भीतर पकड़ लाया। इसके बाद द्वार बन्द करके उसने पूछा—"तुम्हारी बातों का प्रमाण?" काउण्टेस ने उस गुप्त पत्र का सविस्तार हाल ज़ार को सुना दिया और उसके पूछने पर परामर्श दिया कि काउण्ट पैहलिन को शीघ्र बन्दी कर लिया जाय।

७

पैहलिन अपने कमरे में बैठे हुए आवश्यक काग़ज़-पत्र देख रहे थे। इतने में स्टीवेन्सन ने आकर सूचना दी कि सम्राट् की सेना ने मकान घेर लिया है और आपको बन्दी करने के लिए फ़ौजी अफ़सर अन्दर आ रहे हैं। यह सुनते ही पैहलिन अपने गुप्त द्वार से बाहर निकल गया। अफ़सरों ने सारा भवन खोज डाला। अन्त में हताश होकर लौट पड़े। उधर पैहलिन धीर भाव से राजभवन में प्रवेश कर रहा था। ज़ार के शयन-गृह के द्वार पर पहुँच कर उसने द्वार-रक्षक को आज्ञा दी—"सम्राट की आज्ञा है कि युवराज सैनिक वेश में तुरन्त सम्राट के सामने उपस्थित हों।"

इसके बाद उसने अन्दर प्रवेश किया। उसे एकाएक अपने सामने खड़ा देख ज़ार चौंक पड़ा। फिर सँभल कर पूछा—"पैहलिन! क्या यह सत्य है कि तुम राजद्रोहियों के दल में सम्मिलित हो?"

"सत्य है, सम्राट!"—पैहलिन ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया। ज़ार ने पिस्तौल निकाल कर पैहलिन के सीने के सामने कर दिया। अविचल भाव से मुस्कराता हुआ पैहलिन बोला—"सम्राट की रक्षा के लिए यह आवश्यक था कि मैं राजद्रोहियों के दल में सम्मिलित होऊँ।"

ज़ार का पिस्तौल नीचा हो गया। अविश्वास दूर हो गया। वह काउण्ट के पैरों पर गिर कर बच्चों की भाँति रोने लगा।

"पैहलिन! पैहलिन!! मुझे बचाओ! इन राजद्रोहियों से मेरी रक्षा करो।" पैहलिन ने सान्त्वना देते हुए ज़ार को उठाया। काउण्टेस ने, जो अभी तक वहीं थी, पूछा—"पैहलिन! क्या तुम सचमुच सम्राट की रक्षा करोगे?"

काउण्ट ने उत्तर दिया—"मुझे सम्राट का जीवन अपने जीवन से भी अधिक प्रिय है। मैं ईश्वर को साक्षी करके सम्राट के प्राणों के साथ अपने प्राणों को सम्बद्ध करता हूँ। मैं सम्राट की रक्षा के लिए यहाँ हूँ। तुम अब घर जा सकती हो।"

काउण्टेस के चले जाने पर ज़ार ने पूछा—"पैहलिन! राजद्रोहियों का नेता कौन है?"

"युवराज एलेक्ज़ेण्डर।"—पैहलिन ने उत्तर दिया।

"इसका प्रमाण?"

पैहलिन ने उठ कर द्वार खोल दिया। सामने सैनिक वेश में युवराज चले आ रहे थे। भयभीत ज़ार ने स्वयं दौड़ कर द्वार बन्द कर दिया और फिर, पैहलिन के पैरों पर गिर कर बोला—"पैहलिन, भाई पैहलिन! मेरी रक्षा करो।"

पैहलिन ने जेब से दो पत्र निकाल कर ज़ार के सामने रख दिए और कहा—"सम्राट् इन पर हस्ताक्षर कर दें।"

ज़ार ने उन्हें आद्योपान्त पढ़े। कुछ हिचकिचाया। फिर हस्ताक्षर कर दिए। पैहलिन ने दोनों पत्र उठा लिए और कहा—"सम्राट अब निश्चिन्त होकर सोवें।" इसके बाद पैहलिन राजभवन के बाहर निकल गए।

८

रात के ११ बजे चुके थे। पैट्रोग्रेड की हिम से ढकी हुई सड़कें चन्द्रमा के प्रकाश में चमक रही थीं। किन्तु कारागार की कोठरियों के भीतर निविड़ अन्धकार था। ऐसी ही एक कोठरी के एक कोने में भूमि-शय्या पर बैठे हुए, राजाज्ञा से बन्दी किए गए युवराज एलेक्ज़ेण्डर अपनी दशा पर विचार कर रहे थे। अभी आध घण्टा पहले वह रूस के युवराज—संसार के महान साम्राज्य के भावी सम्राट थे और अब एक साधारण क़ैदी हैं। परन्तु उनका अपराध? बस, यहीं युवराज का मस्तिष्क चक्कर खा जाता था। वे इन्हीं विचारों में निमग्न थे कि एकाएक खटके का शब्द हुआ और कोठरी का द्वार खुला। अपना टोप आँखों तक ढके हुए एक व्यक्ति ने अन्दर प्रवेश किया और युवराज को मूक अभिवादन करके एक पत्र उनके हाथ में दे दिया। युवराज ने काँपते हाथों से पत्र ले लिया और आगन्तुक के लाए हुए दीपक के प्रकाश में पढ़ा—

"मेरी आज्ञा है कि बन्दी ज़ारविच एलेक्ज़ेण्डर को २४ घण्टे के भीतर साइबेरिया में जन्म भर के लिए निर्वासित कर दिया जाए।—पॉल प्रथम।"

युवराज पर मानो वज्रपात हुआ। आज्ञा-पत्र हाथों से छूट पड़ा। जिस भयङ्कर हिमाच्छादित स्थान का नाम सुन कर बड़े-बड़े कठोर हृदय भी दहल जाते थे, उस साइबेरिया प्रान्त में कोमल हृदय एलेक्ज़ेण्डर का, पूर्णतया निर्दोष होने पर भी, आजन्म निर्वासन! युवराज अपने को अधिक न सँभाल सके। उनकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया। वे ज़मीन पर गिरने लगे। आगन्तुक ने अपना टोप ऊँचा कर लिया और युवराज को सँभाला। युवराज को जब होश हुआ तो देखा कि वे काउण्ट पैहलिन के हाथों में थे। युवराज काउण्ट की शक्ति से भलीभाँति परिचित थे। बोले—काउण्ट पैहलिन! मैं सर्वथा निर्दोष हूँ। क्या आप मुझे इस भीषण दण्ड से नहीं बचा सकते?

"अवश्य, युवराज! किन्तु एक शर्त पर।"

"बतलाइए।"

"युवराज सम्राट का पद ग्रहण कर लें।"—पैहलिन ने अविचल भाव से उत्तर दिया।

युवराज सोच में पड़ गए। एक ओर था विशाल रूस साम्राज्य और दूसरी ओर साइबेरिया के भीषण जङ्गल। एक ओर था, पितृद्रोह और राजद्रोह तथा दूसरी ओर बीस कोटि प्राणियों के ऊपर अगणित अत्याचार। काउण्ट भी चुप न रहा। उसने युवराज के सामने उन अभागों के कष्टों का वर्णन किया जो प्रति वर्ष कई सहस्र की संख्या में कोड़ों की मार खाते हुए साइबेरिया-यात्रा करते थे। उसने उन बेचारों का ज़िक्र किया जो पैट्रोग्राड के मैदान में प्रति दिन तुच्छ अपराधों के लिए गोलियों का शिकार बना दिए जाते थे। यही नहीं, उसने ज़ारशाही के भयङ्कर अत्याचारों के कितने ही रोमाञ्चकारी उदाहरण युवराज के सामने रक्खे। युवराज ने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। उठ खड़े हुए और बोले—"काउण्ट! मैं पितृद्रोही हो सकता हूँ, परन्तु प्रजाद्रोही नहीं हो सकता। मैं ज़ार बनने को तैयार हूँ।"

काउण्ट ने घुटने टेक कर एलेक्ज़ेण्डर के दाहिने हाथ का यथारीति चुम्बन किया और कहा—"सम्राट आज ही रात को एक बजे के बाद अपने भवन की खिड़की से अपनी प्रजा को दर्शन दें।"

इसके उपरान्त युवराज को कारागार से बाहर निकाल कर उनके भवन तक पहुँचा दिया।

९

टन्-टन्-टन्! उस विचित्र रात का एक बजा। सम्राट के शयन-गृह के द्वार खुल गए। काउण्टों ने प्रवेश किया। आगे-आगे एक हाथ में एक पत्र लिए काउण्ट पैहलिन थे। सम्राट जाग उठे और आँख मल कर बैठ गए। फिर भयभीत होकर चिल्ला उठे—"पैहलिन! तुम मुझे बचाने की शपथ खा चुके हो। मुझे इन लोगों से बचाओ!"

पैहलिन ने शान्त भाव से पत्र खोल कर सम्राट के सामने रख दिया और कहा—"यदि आप इस पर हस्ताक्षर कर दें तो आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता।"

सम्राट ने पत्र को आद्योपान्त पढ़ा। फिर क्षण भर सोचने के बाद उठ खड़ा हुआ। पत्र को टुकड़े-टुकड़े कर डाला और दृढ़ स्वर में कहा—"नहीं, यह कदापि नहीं हो सकता कि मैं जीते जी सिंहासन छोड़ दूँ। मैं रूस का सम्राट हूँ और चाहे आज मरूँ या कुछ वर्ष बाद, पर सम्राट ही रह कर मरूँगा।" इसके बाद वह एक गुप्त-द्वार से बाहर निकल गया। अभी कुछ ही दूर अग्रसर हुआ होगा कि सामने से सैकड़ों सैनिक सङ्गीनों की नोकें आगे किए आगे बढ़ते हुए दिखाई दिए। सम्राट दूसरी ओर मुड़ा, परन्तु उधर भी वही दृश्य! इसी प्रकार वह जिस ओर भागता था, उसी ओर से चन्द्रमा के प्रकाश में चमकती हुई सङ्गीनों की क़तार उसकी ओर बढ़ती दिखाई देती थी। अन्त में वह चारों ओर से घिर गया। पास ही सभा-भवन था। वह दौड़ कर उसमें घुसा और सिंहासन पर बैठ गया। इतने में काउण्ट गण भी पीछा करते हुए आ पहुँचे, परन्तु सिंहासन के समीप पहुँच कर रुक गए। इस समय पैहलिन उनके साथ न थे। ज़ार ने भीषण हँसी हँस कर कहा—"देखूँ अब कौन रूस-साम्राज्य के सिंहासन पर बैठे हुए ज़ार की ओर पिस्तौल उठा सकता है!!"

सचमुच सबके पिस्तौल नीचे हो गए। सब जहाँ के तहाँ खड़े रह गए। इतने में पीछे से काउण्टों को ठेलता हुआ एक सुडौल पुरुष आगे आया। यह वही स्टीवेन्सन था, जिसने ज़ार के प्रति प्रतिहिंसा की प्रबल इच्छा को आज तक दबाए रक्खा था। स्टीवेन्सन सीधा सिंहासन पर पहुँच गया। उसने दोनों हाथों से ज़ार की गर्दन पकड़ ली और सिंहासन से नीचे घसीट लाया। पञ्जे कस गए और कुछ ही क्षण के उपरान्त अत्याचारी पॉल प्रथम का शरीर निर्जीव हो गया। सभा-भवन का द्वार खुला और नङ्गे सिर काउण्ट पैहलिन ने प्रवेश किया। मृत ज़ार के प्रति आदर दिखलाने के लिए सब काउण्टों ने अपने-अपने टोप उतार लिए। सभा-भवन में बिल्कुल सन्नाटा था।

१०

आलोकमयी रजनी की नीरवता को भङ्ग करते हुए शब्द हुआ—"सम्राट एलेक्ज़ेण्डर की जय!" सहस्रों कण्ठ से एक साथ विराट ध्वनि हुई—"सम्राट एलेक्ज़ेण्डर की जय!" महलों की दीवारों से प्रतिध्वनि गूँज उठी—"सम्राट् एलेक्ज़ेण्डर की जय!"

काउण्ट पैहलिन ने अपने कमरे की खिड़की खोल कर देखा, सम्राट एलेक्ज़ेण्डर अपने महल की खिड़की में राजवेश से भूषित खड़े थे और नीचे राजपथ पर एकत्रित थी अगणित जनता। तोप का शब्द हुआ और फिर निस्तब्धता छा गई। सम्राट ने प्रतिज्ञा की—

"मैं, एलेक्ज़ेण्डर आज अपने पूर्वजों के सिंहासन पर आरूढ़ होता हूँ और ईश्वर को साक्षी देकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजन्म अपनी प्रजा के प्रति सच्चा शुभचिन्तक रहूँगा।"

तदनन्तर फिर वही जय-ध्वनि गूँजने लगी। काउण्ट ने खिड़की बन्द कर ली और अपनी कुर्सी पर आ बैठे। सामने दूसरी कुर्सी पर बैठा हुआ था, उनका सेवक स्टीवेन्सन। दोनों के मध्य में एक छोटी मेज़ थी। काउण्ट ने जेब से एक पिस्तौल निकाल कर मेज़ पर रख दिया और सामने टँगी हुई घड़ी की ओर सङ्केत किया। स्टीवेन्सन ने घड़ी की ओर देखा, दो बजने में तीन मिनट शेष थे।

काउण्ट ने कहा—"स्टीवेन्सन! केवल तीन मिनट शेष हैं। अपनी प्रतिज्ञा का पालन करो।" काउण्ट वक्षस्थल खोल कर खड़ा हो गया। स्टीवेन्सन ने काँपते हाथों से पिस्तौल उठा लिया।

उधर काउण्टेस ने अपने कमरे में बैठे-बैठे जयध्वनि सुना था। वह समझ गई कि काउण्ट ने अपने सम्राट के प्रति विश्वासघात किया है। उसने अपना पिस्तौल उठा लिया और अपने प्रेमी पैहलिन का प्राण हरने के लिए उसके कमरे की ओर बढ़ी। परन्तु ज्योंही उसने काउण्ट के कमरे का द्वार खोला, त्योंही घड़ी से शब्द हुआ, "टन्......टन्......!" और उसके साथ ही हुआ पिस्तौल का शब्द। काउण्टेस के हाथ से पिस्तौल छूट कर ज़मीन पर गिर पड़ी। वह गिरते हुए पैहलिन को अपनी भुजाओं पर लेकर बोली—"प्यारे! प्यारे पैहलिन!!!"

मरणासन्न काउण्ट के शुष्क होठों पर मुस्कराहट की एक धीमी रेखा दौड़ गई। काउण्ट पैहलिन के अन्तिम शब्द थे—"प्रिये! मैं जानता हूँ कि मैं विश्वासघाती, मित्र-द्रोही तथा हृदयहीन प्रेमिक हूँ। परन्तु मैंने देशभक्त बनने का प्रयत्न अवश्य किया है! मैं..............!"*

* 'पेट्रियट' नाम के एक अमेरिकन फ़िल्म के आधार पर।

* * *

खीज

"अस्सलाह, लाला जी हैं!"

"जै सियाराम की, बाबू-साब!"

"सब कार-बार ठीक-ठाक चला जा रहा है न?"

"अजी बाबू-साब, कारबार कैसो, जे गान्धी की आँधी ने नास कर दीन्हो! अठे कारबार की कें पूँछे हैं!"

❀

"लाला जी, घबड़ाइए नहीं। महात्मा गाँधी तो छूट गए!"

"अरे बाबू-साब, कें मसकरी करे हे! जे धरणो सुसुरो तो जारी ही हे!!"

"धरना भी उठ जायगा, लाला जी, सरकार ने तो राज़ीनामा करने के लिए कॉङ्ग्रेसी नेताओं को छोड़ा है!"

"अजी बाबू साब, अठे तो प्रान सूख रह्यो है! राजीनामो सुसुरो न जाने कब ताईं होइयो!"

❀

"अब जल्द ही कपड़े का बाज़ार खुल जायगा! म० गान्धी कुछ न कुछ इन्तज़ाम करेंगे ही!"

"इन्तज़ाम का करेंगो! एक गाँठ की निकासी माँग तो २४१) को जुर्मानो लै लीन्हो! अन्धेर तो देखो जे कॉङ्ग्रेस ने मचाय रक्खो है!"

❀

"तो फिर लाला जी, आपने भी तो सील-मोहर हटा कर गाँठ बेच ली थी।"

"तो कॉङ्ग्रेस के बाप को के बेंच लीन्हीं—आपणो ही माल दीन्हो ना!"

"हाँ-हाँ, मगर, पहिले सील-मोहर......!"

"ऐ जी बाबू साब, केसी बात करो हे, म्हारी खुसी सों सील-मोहर कीन्हो थी के?"

❀

"ख़ैर, अब धीरज रखिए, कुछ न कुछ फ़ैसला होने ही वाला है!"

"फ़ैसलो, अठे फ़ैसलो सुसुरो तो हो ही गयो! अब कारबार तो सारो चौपट हे—जैसो फ़ैसलो भयो, वैसो ना भयो!"

"नहीं-नहीं, बाज़ार खुलेगा ज़रूर!"

"खुल के ही का कर लेइगो! बाबा, थारे मुँह के लागने कूँ! येंह तो अठें भी वाह-वाह, उठें भी वाह-वाह!"

❀

"लाला जी, माल खुलते ही सब मुश्किलें आसान हो जायँगी!"

"अरे बाबा जा अठे से, रार काईं करे हे! आसान सुसुरो केकर जाइयो! कॉङ्ग्रेसवालो बङ्क की हुण्डी भर जाइयो के!"

❀

"लाला जी, एक ख़ुश-ख़बरी सुनाता हूँ!"

"माफ़ करो जी बाबू-साब, आपणे को बदख़बरी से तीं बचाइयो—खुस-खबरी सुसुरी के कर जायगी!"

❀

"लाला जी, स्वराज्य मिलने ही वाला है!"

"जे कॉङ्ग्रेस वालो सूराज तो सौ जनम ना होइ, तेंई भलो! कॉङ्ग्रेस तो अपणो ही घर भरणो जाने हे! मुलक कूँ कङ्गाल बनाय दीन्हो—अब सूराज कूँ का ओढ़ेगो या बिछाएगो! जा बाबा, अपनी राह जा!!

—"मनसुखा"

* * *

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

अजमेर की पर्दा-नशीन महिलाओं का वह ग्रूप, जिसने पर्दे की कुप्रथा के मस्तक पर पाद-प्रहार करके जगन्नियन्ता की रहस्यपूर्ण सृष्टि का अवलोकन करने की प्रतिज्ञा कर ली है। महिलाओं का यह ग्रूप उस समय का है, जब ये सारी देवियाँ—अजमेर के विख्यात राजनैतिक कार्यकर्ता—पं० गौरीशङ्कर भार्गव की धर्मपत्नी श्रीमती गोमती देवी भार्गव और उनकी पुत्री कुमारी प्रेमलता देवी का स्वागत करने के लिए एकत्र हुई थीं, जो हाल ही में जेल से मुक्त होकर आई थीं। इन देवियों ने इन माँ-बेटियों को एक चाँदी की तकली भेंट की थी। बीच में माला पहिने माँ-बेटियाँ बैठी हैं।

बरौंदा (आगरा) के उन किसानों का परिवार, जिन्होंने टैक्स न देकर घर-बार का त्याग कर दिया है और जो जङ्गलों में निवास कर रहे हैं।

पटना के डिप्टी-कलेक्टर और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट रायसाहब देवीदयाल के पुत्र-रत्न—श्री० सत्यपाल धवले, जिन्होंने देश-सेवा का व्रत लिया है और इसी अपराध के लिए परिवार से सर्वथा त्यक्त कर दिए गए हैं। आप ४ मास का कठिन-कारावास दण्ड भोग कर हाल ही में आए हैं।

बरौंदा (आगरा) के किसानों का ग्रूप—जिन्होंने पुलिस के दुर्व्यवहारों से खीज कर घर-बार त्याग कर जङ्गलों में रहने की ठान ली है।
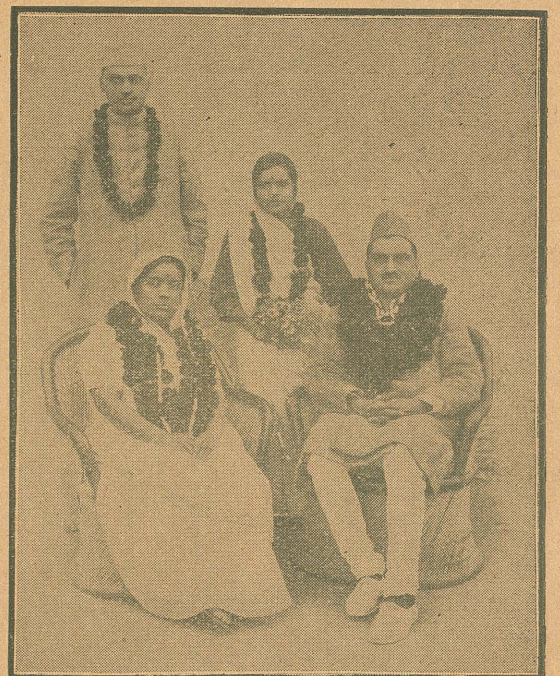
अपने परिवार सहित अजमेर के सुविख्यात राष्ट्रीय कार्यकर्ता—पं० गौरीशङ्कर भार्गव। आप, आपकी स्त्री, कन्या और भाई सभी—हाल ही में जेल से मुक्त हुए हैं।

इस उन्नति और विकास के युग में भारतीय महिलाएँ क्या समुचित लाभ नहीं उठा रही हैं ?

लाहौर में होने वाले अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ्रेन्स की कार्यकारिणी समिति का ग्रूप। बीच में कॉन्फ्रेन्स की सभानेत्री—मद्रास व्यवस्थापिका सभा की भूतपूर्व उप-प्रधाना—श्रीमती मूथू लक्ष्मी रेड्डी बैठी हैं।

अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ्रेन्स में सम्मिलित होने वाली विभिन्न प्रान्तों की प्रतिनिधियों का ग्रूप

(प्रतिनिधियों का दूसरा ग्रूप अन्यत्र प्रकाशित हुआ है)

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ
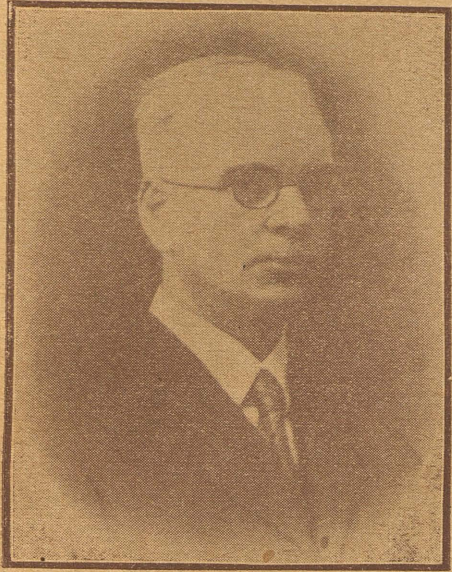
नागपुर विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर—रेवरेण्ड डॉक्टर जे० एफ़० मेकफ़ाइडन।

मद्रास के सङ्गीत-परिषद (Madras Musical Acadamy) से वॉयलिन बजाने में प्रथम पुरस्कार पाने वाली ११ वर्षीय बालिका—कुमारी वी० एन० तुलसी।

कलकत्ते के नए शेरिफ़—श्री० प्रफुल्लनाथ टैगोर—जो हाल ही में सन् १९३१ के लिए निर्वाचित हुए हैं।
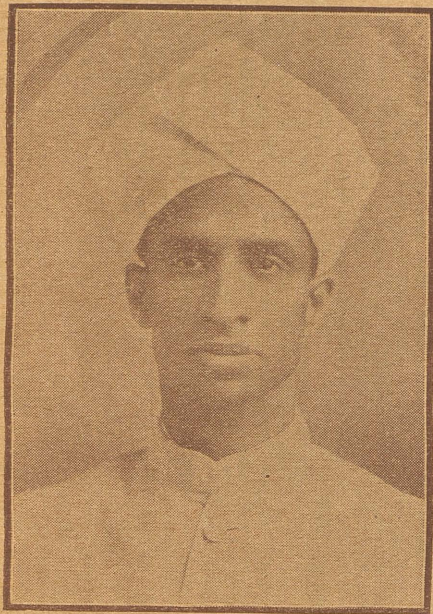
कलकत्ते में होने वाली अखिल भारतवर्षीय शिक्षा-सम्मेलन (All-India Educational Conference) के सभापति—प्रोफ़ेसर राधाकृष्णन
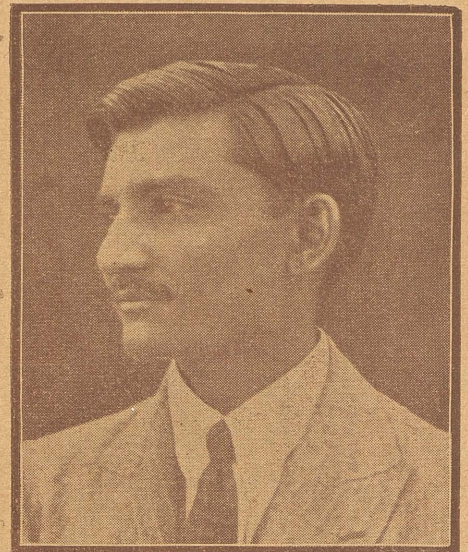
कलकत्ते के भारतीय व्यापार-सङ्घ (Indian Chambers of Commerce) के मन्त्री—श्री० एम० पी० गाँधी, एम० ए०। आप जनेवा में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-परिषद के सलाहकार भी चुने गए हैं।

अखिल भारतवर्षीय महिला कॉन्फ़्रेन्स में सम्मिलित होने वाली विभिन्न प्रान्तों की प्रतिनिधियों का ग्रूप (दूसरा ग्रूप अन्यत्र देखिए)

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ
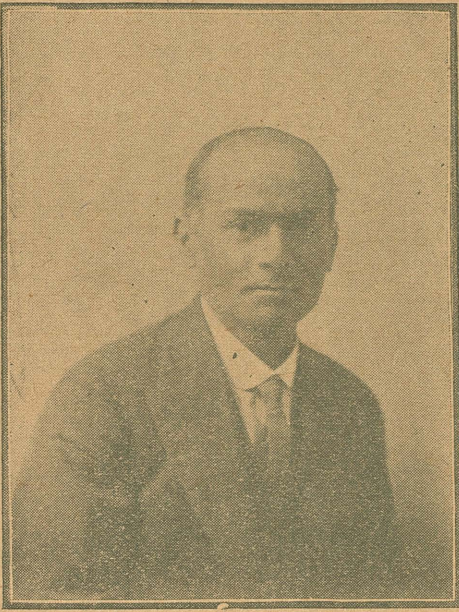
संयुक्त प्रान्तीय एङ्गलो-इण्डियन एसोसिएशन के प्रधान—श्री० एच० सी० देसाँगे—जो एङ्गलो-इण्डियनों की ओर से व्यवस्थापिका सभा (यू० पी०) के प्रतिनिधि चुने गए हैं।

कलकत्ता कॉरपोरेशन के स्पेशल ऑफ़िसर—श्री० बी० एन० दे।

लखनऊ अवध चीफ़ कोर्ट के जज—श्री० माननीय जस्टिस पुलन, आई० सी० एस०—जो इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज नियुक्त किए गए हैं।

भारत-सरकार के प्रधान इञ्जीनियर—श्री० ए० एम० राऊज़।
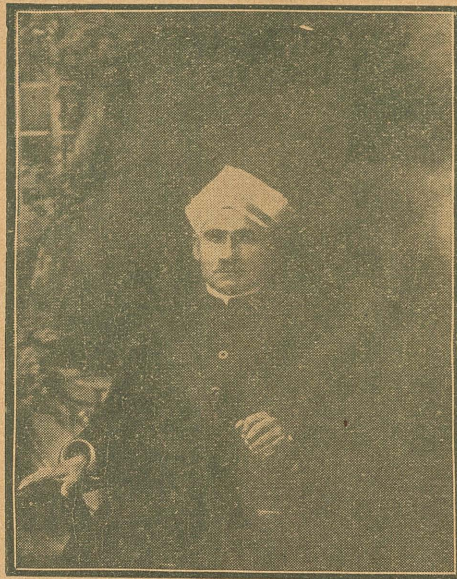
मैसूर-स्टेट के चीफ़ जज—दीवान बहादुर श्री० राजा धर्म-प्रवीण—जिन्होंने हाल ही में अपनी स्त्री की स्मृति में बङ्गलोर के नए शिशु-रक्षिणी समिति के अस्पताल को २०,००० रुपयों का दान दिया है। आपकी धर्मपत्नी बङ्गलोर सेवा-समाज की संस्थापिका थीं।

मैसूर-स्टेट के चीफ़ इञ्जीनियर—श्री० के० श्रीनिवास अयङ्गर—जिन्होंने हाल ही में पेन्शन ली है।
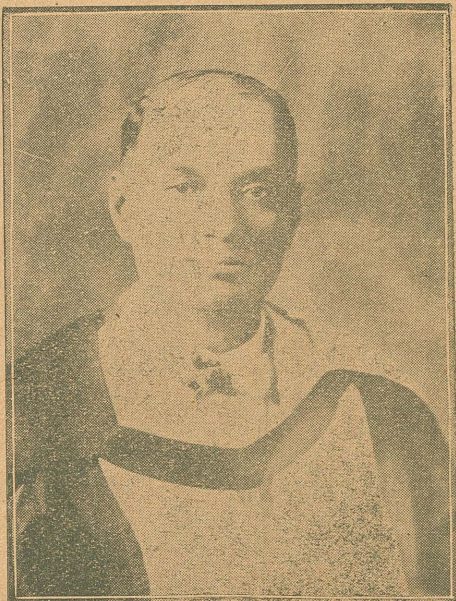
कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर—लेफ़्टेनेण्ट-कर्नल सुहरावर्दी—जिनकी 'देशभक्ति-पूर्ण' सेवाओं से प्रसन्न होकर बङ्गाल-गवर्नर ने आपको 'क़ैसरे-हिन्द' का पदक प्रदान किया है।

हाल ही में ट्रावङ्कोर (मद्रास) की बड़ी व्यवस्थापिका सभा की सदस्या नियुक्त होने वाली—कुमारी पेनीरी मोञ्जेज़

भोपाल के सुप्रसिद्ध राजभक्त—श्री० राय बहादुर राजा अवधनारायण बिसरिया—जो नवाब-साहब की अनुपस्थिति में 'राज्य-सञ्चालन केबिनेट' के सदस्य चुने गए थे।

गले में तौक़, दोनों पाँव में ज़ंजीर देखेंगे,
वह मेरे आलमे-वहशत की जब तस्वीर देखेंगे !!
मैं कहता हूँ, कि सीना चाक करने से नतीजा क्या ?
वह कहते हैं, कि सीने में तेरे हम तीर देखेंगे !

यह तोहफ़ा कौन सा भेजा गया है, अहले[१] ज़िन्दाँ को,
उलट जाएगा दिल, जब आपकी तस्वीर देखेंगे ।
अभी समझे हैं वीराँ[२], तबक़ए[३] गोरे[४] ग़रीबाँ को,
यही हर चौखटे में, एक नई तस्वीर देखेंगे ।

—"अज़ीज़" लखनवी

यही है हुस्न का जादू, यही है हुस्न का अफ़सूँ[५],
जिसे भी आप देखेंगे, उसे तस्वीर देखेंगे ।

—"अरमान" कानपुरी

असर आहों का, और नालों की, हम तासीर देखेंगे,
वह चुप कब तक रहेंगे, सूरते-तस्वीर देखेंगे ।

—"आज़ाद" देहलवी

न जा मसजिद में, क्या रक्खा है, चल ऐ शेख़ मन्दिर में,
वहाँ गर कुछ नहीं तो, यार की तस्वीर देखेंगे ।

—"इक़बाल" मेरठी

मेरे नालों की, वर बैठे वह यह तासीर देखेंगे,
नज़र में घूमती-फिरती, मेरी तस्वीर देखेंगे ।
कहीं जो सामने अपने, वह ख़ुश होकर चले आएँ,
तो हम हैरत से, उनकी चाँद-सी तस्वीर देखेंगे ।

—"जौहर" मथरावी

गेरबाँ[६] गीर देखेंगे, न दामन[७] गीर देखेंगे,
कि हम महशर[८] में, उनको सूरते तस्वीर देखेंगे ।

—"जोया" बरेलवी

न ख़ुद आएगा तू ज़ालिम ! न तस्वीर अपनी भेजेगा,
तो हम आइनए-दिल में, तेरी तस्वीर देखेंगे ।

—"शाकिर" ग्वालियारी

करेंगे तेज़गामी[९] से, जो तै राहे तरक़्क़ी को,
तो मुस्तक़बिल[१०] को वह पेशे नज़र तस्वीर देखेंगे ।

—"शाकिर" रोहतकी

सरे बालीने[११] बीमारे अजल,[१२] वह आके यों बोले,
हम इस नाकाम की, मिटती हुई तस्वीर देखेंगे ।

—"शैदा" अमरोही

हथेली पर जिगर[१३], और पाँव में ज़ंजीर देखेंगे,
वह फ़स्ले[१४] गुल में, यों खिंचते मेरी तस्वीर देखेंगे !
यह क़ैदी कह रहे हैं, वह अगर ज़िन्दाँ में आएगा,
कभी उसको, कभी उस बुत की, हम तस्वीर देखेंगे ।

—"मज़हर" जारचोई

क़फ़स[१५] वाले भी, तेरे मुन्तज़िर हैं क़तरए शबनम !
चमन के नौ शिगुफ़्ता[१६] फूल की तस्वीर देखेंगे ।

—"जमाल" इटावी

हमें यह देखना है, फ़र्क़ अस्लो नक़्ल में क्या है,
तुझे देखेंगे पहले, फिर तेरी तस्वीर देखेंगे ।

—"नश्तर" मेरठी

नहीं है ताबे-नज़्ज़ारा[१७] हमारी चश्मे[१८] उरियाँ को,
कलेजा हाथ में लेकर, तेरी तस्वीर देखेंगे ।

—"रौशन" पानीपती

ज़माना जानता है, यह कि नाकामे तमन्ना हैं,
भला हम, और हँसती-बोलती तस्वीर देखेंगे ।
सुकूँ[१९] हो जायगा दिल को, क़रार आ जायगा दिलको,
शबे[२०] फ़ुरक़त तेरी, जब चाँद सी तस्वीर देखेंगे ।
दिखाएगी तमाशा, दीदए[२१] हक़बीं हमें "ज़ाहिद",
कि हर ज़र्रे में, क़ुदरत[२२] की नई तस्वीर देखेंगे ।

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

गले में तौक़[२३], दोनों पाँव में ज़ंजीर देखेंगे,
वह मेरे आलमे[२४] वहशत की, जब तस्वीर देखेंगे ।
नज़र करते हैं, मेरे दिल की जानिब तो यह मतलब है,
मुहब्बत की, वह जीती-जागती तस्वीर देखेंगे ।
शबीहे[२५] हज़रते यूसुफ़[२६] की, शोहरत है ज़माने में,
मिला कर हम तेरी तस्वीर से, तस्वीर देखेंगे ।
मँगा ली उसने अब, तस्वीर अपनी हज़रते "बिस्मिल"
जो दिल घबराएगा, तो कौन सी तस्वीर देखेंगे ।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

बहुत दुशवार[२७] होगा, गोश्त से नाख़ुन जुदा करना,
हम अपने दिल को देखेंगे, कि उनका तीर देखेंगे ।

—"अज़ीज़" लखनवी

अगर कुछ जज़्ब[२८] है दिल में, कशिश है कुछ अगर दिल में,
कहाँ जाते हैं बच-बच कर तुम्हारे तीर देखेंगे ।
किसी दिन चीर कर जब वह दिले नख़्चीर[२९] देखेंगे,
तो पिनहाँ[३०] इसमें, एक टूटा हुआ सा तीर देखेंगे ।

—"आज़ाद" देहलवी

दिले-बेताब को है, हाजते सामाने[३१] आराइश,
तेरी गुलकारियाँ,[३२] हम आज नोके तीर देखेंगे ।

—"कामिल" मारवाड़ी

मैं कहता हूँ, कि सीना चाक करने से नतीजा क्या ?
वह कहते हैं, कि सीने में तेरे हम तीर देखेंगे !

—"नश्तर" मेरठी

निगाहें फेर कर, जब जानिबे नख़्चीर देखेंगे,
मेरे पहलू में, एक टूटा हुआ वह तीर देखेंगे ।

—"रौशन" पानीपती

दिले-उश्शाक़[३३] में, ले दे के है भरमार तीरों की,
हज़ारों तीर हैं, अब आप कितने तीर देखेंगे ?

बनाए घर जो चल फिर कर, जिगर में, दिल में, पहलू में,
न ऐसा तीर देखा है, न ऐसा तीर देखेंगे ।

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

उन्हें चुन-चुन के रक्खेंगे, जिगर में, दिल में, पहलू में,
जो अच्छे सब से तरकश में, तुम्हारे तीर देखेंगे !
तेरे तरकश से, एक दिन लड़ते आज़ार[३४] की ख़ातिर,
चुभो कर, हम भी अपने दिल में कोई तीर देखेंगे ।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

किसी की चारासाज़ी[३५] से, मुक़द्दर[३६] बन नहीं सकता,
जो क़िस्मत में लिखा है, वह बहर तक़दीर देखेंगे !

—"अज़ीज़" लखनवी

सताएगा कहाँ तक, आस्माने पीर देखेंगे,
यूँ ही कब तक रहेगी, गरदिशे तक़दीर देखेंगे,

—"शाकिर" गवालियारी

उड़ाया सहने गुलशन से, छुड़ाया आशियाँ[३७] मेरा !
तेरा अञ्जाम हम भी, शूमिए[३८] तक़दीर देखेंगे ।

—"गुमनाम" सिकन्दराबादी

गले पर उनका ख़ञ्जर, या जिगर में तीर देखेंगे,
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे तक़दीर देखेंगे !

—"मज़हर" जारचई

अबस[३९] है शिकवए ज़ुल्मो सितम, जौरो जफ़ाए दिल !
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे, तक़दीर देखेंगे !

—"शाफ़िल" अकबराबादी

परे परवाज़[४०] टूटे, आशियाँ उजड़ा, चमन छूटा,
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे तक़दीर देखेंगे !

—"शैदा" अमरोही

भला हो, या बुरा हो, नेक हो, या बद हो ऐ "आजिज़"
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे तक़दीर देखेंगे ।

—"आजिज़" देहलवी

तेरे दर से, तेरे कूचे से, उठना ग़ैर मुमकिन है,
दिखाएगी हमें, जो गरदिशे-तक़दीर देखेंगे ।
यही तो दोस्तों का, मशग़लाए चारागर होगा,
तेरी तदबीर देखेंगे, मेरी तक़दीर देखेंगे ।
किसी तदबीर से, हम जान देकर राहे उलफ़त में,
लिखा तक़दीर का, ए कातिबे[४१] तक़दीर देखेंगे ।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—क़ैदी, २—उजड़ा हुआ, ३—टुकड़ा, ४—क़ब्रिस्तान ५—जादू, ६—गरीबाँ पकड़ने वाला, ७—दामन पकड़ने वाला, ८—प्रलय, ९—तेज़ चलना, १०—भविष्य, ११—सिरहाना, १२—मौत, १३—कलेजा, १४—बहार का ज़माना, १५—पिंजड़ा, १६—खिला हुआ, १७—देखने की ताक़त, १८—आँखें, १९—चैन, २०—विरह की रात, २१—ज्ञान-चक्षु, २२—प्रकृति २३—हँसुली, २४—दीवानगी, २५—तस्वीर, २६—पैग़म्बर का नाम है जो बहुत ख़ूबसूरत थे, २७—कठिन, २८—शिकार, २९—आकर्षण, ३०—छुपा हुआ, ३१—बनाव-सिंगार, ३२—रङ्ग लाना, ३३—प्रेमियों, ३४—कष्ट ३५—तदबीरें, ३६—भाग्य, ३७—घोंसला, ३८—ख़राब, ३९—बेकार, ४०—उड़ना, ४१—भाग्य-लेखक ।

इटली में प्रजातन्त्रवाद

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

Italia ! by the passion of the pain
That bent and rent thy chain
Italia ! by the breaking of the bonds,
The shaking of the lands ;
Beloved, O men's mother, O men's Queen,
Arise, appear, be seen

—*Swinberne*

फ़्रान्स की राजक्रान्ति के अग्नि-कुण्ड में प्राचीन रूढ़ियाँ धायँ-धायँ कर जल रही थीं और उन्हीं के साथ जल रहे थे 'एक तन्त्रवाद' और उसकी सहचरी स्वेच्छाचारिता। इस महायज्ञ से निकली हुई चिनगारियाँ यूरोप के सभी देशों में पहुँच गई थीं और वहाँ के शासक प्रजासत्ता के इस रौद्र रूप को देख कर काँप रहे थे। बाहुबल की शक्ति बाहुबल को रोक सकती है, परन्तु बाहुबल विचार-धारा को रोकने में सदा असमर्थ रहा है। जब-जब संसार में विचारों की उत्ताल तरङ्गें उठी हैं, तब-तब बाहुबल को पराजित कर अपने विजय का डङ्का बजाने में समर्थ हुई हैं। बुद्ध का अहिंसावाद उठा और उसने एशिया को भिन्न रूप में परिवर्तित करके यूरोप तक अपना डङ्का बजाया, ईसा के 'प्रेम और भक्ति' ने फिर संसार को और ही रङ्ग में रँग दिया। और इसके बाद धार्मिक 'जहाद' की मतवाली मुस्लिम तलवारों ने संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों का मद चूर्ण कर उन्हें अपने सामने मस्तिष्क झुकाने के लिए विवश किया। वह धार्मिक युग था। उस समय राजनीति धर्म का एक अङ्ग मात्र थी, पर फिर लोगों का ध्यान एक अज्ञात ध्येय के अतिरिक्त प्रत्यक्ष ध्येय की ओर अधिक आकर्षित होने लगा। प्रति दिन की आवश्यक समस्याएँ उनके मस्तिष्क में अधिक घर करने लगीं। अब की बार विचार-धारा का बाँध राजनीतिक क्षेत्र में टूटा। अमेरिका और फ़्रान्स में शासन सम्बन्धी नए सिद्धान्तों का जन्म हुआ और शीघ्र ही उन सिद्धान्तों ने सारे संसार का रूप ही बदल दिया।

किसी समय यूरोप में रोम साम्राज्य की तूती बोलती थी, वह धूल से उठ कर उच्चतम पर्वत की श्रेणी तक पहुँच गया। परन्तु अन्त में जहाँ से उठा था फिर वहीं आकर विलीन हो गया। यदि उसका कुछ अंश बाक़ी रह गया तो महान सभ्यता, उच्च धर्म, विशाल राज्य-व्यवस्था, पूर्ण विकसित विद्या और कला की स्मृतियाँ मात्र। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में रोम के भग्नावशेषों के आधार पर ही वर्तमान यूरोप के क़ानून, सङ्गठन, व्यवस्था, धर्म आदि के बड़े-बड़े महल स्थापित किए गए, परन्तु इन शताब्दियों में स्वयं रोम-साम्राज्य की हालत बहुत ख़राब थी। वह अनेक रियासतों में खण्ड-खण्ड होकर यूरोप की शक्तियों का क्रीत-दास बन गया था। उत्तर टस्कनी, परमा, मोडेना आदि प्रदेशों में ऑस्ट्रिया का शासन था, दक्षिण नेपिल्स और सिसली में बोर्बन वंश का, और कुछ प्रदेश पोप के अधिकार में थे। उस समय पारस्परिक कलहाग्नि में इटली जल रहा था, और विदेशी इससे पूरा लाभ उठा रहे थे। ऑस्ट्रियन गवर्नर मेटरनिच ने इटली के विषय में लिखा था—"इटली में प्रान्त प्रान्त के, नगर नगर के, कुटुम्ब कुटुम्ब के तथा मनुष्य मनुष्य के विरुद्ध है।"

नेपोलियन ने ऑस्ट्रियन और बोर्बन वंशियों को इटली से निकाल कर तथा पोप का राज्य छीन कर, अपने अधीन एक व्यवस्था में सङ्गठित कर लिया। नेपोलियन के सेण्ट हेलेना में क़ैद होते ही उसके साम्राज्य का भी अन्त हो गया और इटली फिर पूर्ववत् कई टुकड़ों में विभक्त कर दिया गया। परन्तु इस क्षणिक प्रकाश से इटली के देशभक्तों की आँखें खुल गई थीं, वे फिर संयुक्त इटली का स्वप्न देखने लगे। वे इस बात का प्रचार करने लगे कि भिन्न-भिन्न रियासतों को मिला कर फिर स्वतन्त्र इटली की स्थापना होनी चाहिए।

ऑस्ट्रिया ने इटली के नवीन भावों को बुरी तरह कुचलना चाहा। अत्याचार और दमन के समाचार प्रति दिन आने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वतन्त्रता के भाव तो नहीं दबे, पर उलटे अब जनता में कुछ क्रियात्मक कार्य करने की व्याकुलता पैदा हो गई। सारे देश में षड्यन्त्र होने लगे और गुप्त समितियों की स्थापना हुई, इनमें 'कारबोनारी संस्था' मुख्य थी।

सन् १८२० में वीर और शक्तिशाली रोमागनोली जाति ने शासकों के प्रति नेपिल्स में विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। इस पर वहाँ के शासकों ने ऑस्ट्रिया से सहायता माँगी और विद्रोह दबा दिया गया। ऑस्ट्रियनों की शक्ति और भी बढ़ गई। सैकड़ों देशभक्त पकड़-पकड़ कर स्पीलबर्ग के नरक में बन्द कर दिए गए।

इटली की स्वाधीनता में मेज़िनी का विशेष स्थान है। इसका जन्म २२ जून, १८०५ को जिनोआ में हुआ। इसके पिता डॉक्टर जिआकोमो मेज़िनी युनिवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर थे। जब मेज़िनी सोलह ही वर्ष का था, तभी उसके विचारों में क्रान्ति का जन्म हो गया। जिनोआ में १८२१ वाले विद्रोह में भाग लेने वाले निर्वासितों की भीड़ जब वह देखता और उनकी यातना और कष्ट का विचार करता तो उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता था और उसमें विदेशियों के लिए घृणा के भाव उत्पन्न होने लगते थे। सन् १८२७ में उसने वकालत पास की और फिर इटली के उद्धार के कार्य में लग गया। वह शीघ्र ही निर्वासित कर मार्सलीज़ में भेजा गया। उस समय मार्सलीज़ और स्वीटज़रलैण्ड में हज़ारों निर्वासित देशभक्त इकट्ठे हो गए थे। मेज़िनी ने यहाँ 'तरुण इटली' नामक संस्था की स्थापना की। 'तरुण इटली' के सदस्य तेज़ी से बढ़ने लगे और शीघ्र ही उनकी संख्या हज़ारों पर पहुँच गई। मेज़िनी शीघ्र ही सर्वप्रिय नेता हो गया। उसने युवकों का सङ्गठन किया। क्योंकि उसे विश्वास था कि देश के नवयुवक ही उसकी शृङ्खलाएँ तोड़ने में समर्थ हो सकते हैं। मेज़िनी की इच्छा इटली में 'प्रजातन्त्र' स्थापित करने की थी। क्योंकि वह किसी भी निरङ्कुश शासन का विरोधी था। मेज़िनी ही पहला व्यक्ति था, जिसने लोगों के हृदय में इटली को संयुक्त-राष्ट्र बनाने के भावों को सब से आगे लाकर रख दिया था। उसने कहा—"जब तक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नैतिक शक्ति लगाने का तुम्हारे लिए मार्ग खुला है, तब तक बल-प्रयोग मत करो, परन्तु जब नैतिक शक्ति व्यर्थ हो जाय, जब अत्याचार इतना उग्र रूप धारण कर ले कि तुम अपनी उचित माँगों को प्रकट भी न कर सको, जब शस्त्र-बल तुम्हारे विचारों को दबाने की चेष्टा करे तो उस समय तुम अपने हाथ बाँध लो और जेलख़ाने या फाँसी पर जाकर अपनी सत्यता प्रकट करो। जब तक तुम्हारी संख्या कम हो और तुम्हें अपनी विजय की आशा न हो, तब तक यही करो। परन्तु जब तुम्हारी संख्या यथेष्ट हो जाय तो बल-प्रयोग से अत्याचार का अन्त कर दो।" मेज़िनी का दल शुद्ध राष्ट्रवादियों का दल था। उसके सिद्धान्त उच्च थे और उसकी संस्था के अधिकांश सदस्य नवयुवक थे।

इनके अतिरिक्त दो और दल थे। एक पोप के अनुयायियों का और दूसरा सार्डिनिया के राज्य-वंश के पक्षपातियों का। सन् १८०६ में पियोनोनो पोप हुआ। वह उदार हृदय था और ऑस्ट्रियनों को इटली से निकालना चाहता था। उसने राजनीतिक अपराधियों को छोड़ दिया और कौन्सिल और चुङ्गियों की स्थापना की। उसके इन उदार कार्यों से उसका एक दल बन गया, जो इटली की सब रियासतें संयुक्त करके पोप के अधीन एक सङ्घ बनाना चाहता था।

दूसरा दल पिडमोण्ट के राजा के नेतृत्व में इटली में वैध शासन की स्थापना करना चाहता था। सन् १८३१ में चार्ल्स एलबर्ट गद्दी पर बैठा। वह बड़ा देशभक्त था और इटली को ऑस्ट्रियनों की परतन्त्रता से छुड़ाने के लिए व्यग्र था। इसलिए बहुत से देशभक्त उसके भी पक्ष में हो गए थे।

मेज़िनी और उसका 'तरुण इटली' दल एक महान विप्लव की तैयारी कर रहा था। अप्रैल, १८३३ तक इस योजना में पूर्ण सफलता आती हुई मालूम हुई। इटली के बन्दरगाहों में होकर अस्त्र-शस्त्र गुप्त रीति से इकट्ठे किए गए और प्रत्येक प्रान्त में भावी विप्लव के लिए सङ्गठन आरम्भ हुआ। 'इटली एक आज़ाद और स्वतन्त्र' विप्लववादियों का नारा निश्चित हुआ। विप्लव का पहला उद्देश्य तो यह था कि देश में से ऑस्ट्रिया के शासन का अन्त किया जाय, और दूसरा देश में प्रजातन्त्र शासन स्थापित किया जाय। राजा चार्ल्स एलबर्ट को इस आन्दोलन का नेता बनाया जाय और यदि वह स्वीकार न करे तो उसे सीमा प्रान्त में ले जाकर देश से बाहर निकाल दिया जाय।

इस विप्लव के सङ्गठन और साधन को देखते हुए इसमें सन्देह नहीं कि उसके सफल होने की पर्याप्त सम्भावना थी। परन्तु जिनोआ में मार्सलीज़ से भेजा हुआ एक बक्स पकड़ा गया। इसमें गुप्त पत्र-व्यवहार करने का कोड और उसकी कुञ्जी थी। पीडमोण्ट की पुलिस ने उसकी नक़ल कर ली और शीघ्र ही चार्ल्स एलबर्ट को इस षड्यन्त्र का भेद मालूम हो गया। वह क्रोध से पागल हो उठा।

दूसरे दिन विप्लव का प्रारम्भ था, परन्तु रात को पीडमोण्ट के तमाम प्रान्तों में सैकड़ों देशभक्त गिरफ़्तार कर लिए गए। २२ मई से २२ जुलाई तक बारह नवयुवकों को सब भेद बतलाने के लिए असह्य यन्त्रणाएँ दी गईं, परन्तु उन वीरों ने कुछ भी बतलाना स्वीकार न किया। इसी अपराध में वे गोली से उड़ा दिए गए। पर चार्ल्स एलबर्ट की आत्मा इतने से सन्तुष्ट नहीं हुई। उसने लेफ़्टीनेण्ट ऐफ़ीसोटोला को, जिसके पास केवल

'विद्रोहात्मक' पुस्तक पाई गई, गोली से उड़वा दिया। जेल और क़िले क़ैदियों से भर गए। सारे देश के वायुमण्डल को भय और निराशा के भावों ने आच्छादित कर लिया।

जब इटली में इस तरह गिरफ़्तारियाँ प्रारम्भ हुईं तो विप्लववादियों के एक नेता जेकोयो सफ्रियानी ने चारों ओर सन्देश भेजे कि सब विप्लववादी फ़्रान्स या स्विट्ज़रलैण्ड में जाकर शरण लें। उसके आदेश पर बहुत से देशभक्त इटली से बाहर हो गए, परन्तु स्वयं सफ्रियानी नहीं भागा। उसने कहा कि "मुझे, जिसके हाथ में क्रान्ति की पताका है, उसे ऊँचे रखना चाहिए अथवा उसको पकड़े हुए ही मर जाना चाहिए।" मई में सफ्रियानी गिरफ़्तार कर लिया गया और उसे क्रान्ति का सारा भेद खोलने के लिए यन्त्रणा दी जाने लगी। परन्तु जब शासकों को इसमें सफलता न मिली, तो उन्होंने मेज़िनी के हस्ताक्षरों की एक नक़ली चिट्ठी दिखाई, जिसमें उन बहुत से देशभक्तों के नाम लिखे हुए थे, जिन पर अभी तक कोई सन्देह नहीं किया जाता था। सफ्रियानी ने समझा कि उसके प्रिय मित्र मेज़िनी ने भी उसे धोखा दिया। उसने जवाब दिया—"इसका उत्तर मैं कल दूँगा।" दूसरे दिन जेल में सफ्रियानी की लाश ख़ून में तरबतर पाई गई और दीवार पर ख़ून से लिखा था—'यही मेरा उत्तर है!'

मार्सलीज़ में जिन देशभक्तों ने आश्रय लिया था, उन्हें फ़्रान्स-सरकार ने अपनी सीमा से बाहर निकाल दिया। अनेक देशभक्तों ने तब अमेरिका में शरण ली। और मेज़िनी लन्दन चला गया। इस तरह सन् १८३३ की क्रान्ति की योजना का अन्त हुआ।

क्रान्तिवादियों का सङ्गठन छिन्न-भिन्न हो गया था, हज़ारों जेल में पड़े थे और हज़ारों ही विदेशों में आर्थिक कठिनाइयों और मानसिक पीड़ाओं से टक्कर ले रहे थे। परन्तु फिर भी मेज़िनी और उसका 'तरुण इटली' अपने सङ्गठन के ताने-बाने को बटोरने में जुटे थे। सन् १८३३ के भयङ्कर दमन ने 'तरुण इटली' की कमर तोड़ दी थी, परन्तु उसके रक्त ने इटली की ज़मीन में स्वतन्त्रता का बीज वपन कर दिया था और नवीन सन्तति के मस्तिष्क में "संयुक्त और स्वतन्त्र" इटली के भाव अच्छी तरह भर गए थे। सिसली और केलवेरिया के प्रान्तों में क्रान्ति और आन्दोलन उग्र रूप धारण कर रहे थे और शासकों को शान्ति स्थापित रखने के लिए बार-बार फ़ौज और सैनिकों के उपयोग की आवश्यकता पड़ती थी।

ऐटीलो बेण्डियरा और ऐमीलो बेण्डियरा, दोनों भाई थे। उनका पिता ऑस्ट्रिया के जहाज़ी-विभाग का एक उच्च अफ़सर था, और उसके प्रभाव के कारण वे भी उसी विभाग में अच्छे पद पर नियुक्त हो गए थे। परन्तु उनका तरुण हृदय 'संयुक्त इटली' के भावों से पूरित हो चुका था और देशभक्तों की यन्त्रणा और कष्ट देख कर उनमें भीतर ही भीतर एक ज्वाला धधका करती थी। उन्होंने लन्दन में मेज़िनी से पत्र-व्यवहार करना प्रारम्भ किया। इसमें ऐड्रिरो जहाज़ का नवयुवक अफ़सर मोरो भी सम्मिलित हो गया।

इस समय सारा मध्य इटली क्रान्ति के भावों से ओत-प्रोत हो रहा था और ऑस्ट्रियनों को देश से बाहर करके अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहता था। मेज़िनी की सम्मति से निकोला फ़ेब्रिज़ी नामक एक देशभक्त अस्त्र-शस्त्र इकट्ठा कर रहा था। बेण्डियरा बन्धु फ़ेब्रिज़ी से मिले और रोमाङ्गना और केलावरिया प्रान्तों में सशस्त्र विप्लव की योजना करने का निश्चय हुआ। परन्तु आर्थिक और अन्य दूसरी कठिनाइयों ने उनके मार्ग में अनेक बाधाएँ उत्पन्न कर दीं। इसके अतिरिक्त उनसे बार-बार 'फूँक-फूँक' कर पैर बढ़ाने के लिए आदेश किया जाता था, इसलिए निश्चित क्रान्ति की घड़ी बहुत दिनों तक नहीं आई।

इस समय सारा इटली ख़ुफ़िया-विभाग के कर्मचारियों से पटा पड़ा था और यह विश्वास किया जाता था कि शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें एक ख़ुफ़िया-विभाग का आदमी न हो। इसलिए उस समय भाई भाई से भी शङ्काशील रहता था। एक अन्य जहाज़ के कर्मचारी को ऐमीलो ने स्वयं क्रान्तिकारी दल का सदस्य बनाया और उसे उसमें इतना विश्वास था कि सारी योजना उसके सामने प्रकट कर दी। इस कर्मचारी ने ऐमीलो के साथ विश्वासघात किया। और स्मरना और क़ुस्तुन्तुनिया में ऑस्ट्रियन अफ़सरों को सारा भेद बता दिया। परन्तु बेण्डियरा-बन्धुओं को इसका पता लग गया और वे इटली से भाग गए।

इधर लन्दन में मेज़िनी की डाक बराबर गुप्त रूप से खोली जाती थी और आवश्यक बातों की सूचना लन्दन-स्थित ऑस्ट्रियन दूत को दे दी जाती थी। आगे चल कर मेज़िनी की डाक में हस्तक्षेप करने की बात सर जेम्स ग्राहम ने भी स्वीकार की। इस विश्वासघात ने मेज़िनी के हृदय में अङ्गरेज़ सरकार के प्रति भावों में बिलकुल परिवर्तन कर दिया और जनता सर ग्राहम पोल को 'इटली के देशभक्तों का हत्यारा' कहने लगी।

बेण्डियरा-बन्धु सीरिया में बड़े आर्थिक कष्ट में जीवन व्यतीत कर रहे थे, परन्तु क्रान्ति की आग से अब भी उनका हृदय जल रहा था। इटली में बढ़ते हुए असन्तोष के समाचार जब उन्हें मिले तो वे एक महान क्रान्ति को कार्य-रूप में लाने के लिए व्यग्र हो उठे। वे अनेक क्रान्तिकारी नेताओं के 'फूँक-फूँक कर पैर' रखने और समय टालने की नीति के विरुद्ध थे। और इस सम्बन्ध में उन्होंने मेज़िनी को भी कड़ी भाषा में पत्र लिखे, परन्तु मेज़िनी ने अब भी उपर्युक्त अवसर आने का आदेश किया और इसलिए 'केलावरिया' सम्बन्धी योजना कुछ दिन तक योंही पड़ी रही।

बेण्डियरा-बन्धु इस ढीली नीति से दुखी थे कि इसी समय कर्फ़ू सागर में एक जहाज़ रुपया, शस्त्र और बारूद लादे हुए आया और उसके कप्तानों ने कहा कि कोसेञ्जा, सिगलियानो और सेन्ग्यूवानी के पहाड़ों में अनगिनती सशस्त्र क्रान्तिकारी इकट्ठा हो गए हैं और उनके पास पर्याप्त रसद भी है। सब कुछ निश्चित हो चुका है। अब केवल आवश्यकता कुछ प्रभावशाली मनुष्यों की है, जो उनका नेतृत्व कर सकें। बेण्डियरा-बन्धु युवक थे। उनका हृदय क्रान्ति के लिए व्याकुल हो रहा था। उन्होंने इन बातों पर विश्वास कर लिया और ११ जून को अपने अट्ठारह साथियों के साथ केलेवेरिया प्रान्त में कोट्रोन नामक स्थान पर उतरे और इटली की भूमि को चूमते हुए कहा—"तूने हमें जीवन दिया है, हम अपना जीवन तुझे देते हैं।" इन देशभक्तों में ऑस्ट्रिया सरकार का एक गुप्त दूत बाशेम्पाई भी था। उसने इसके आगमन की सूचना कोट्रेण्टो के गवर्नर को दे दी।

बेण्डियरा-बन्धुओं को सूचना के अनुसार कोई भी सशस्त्र क्रान्तिकारी दल न मिला, इसलिए वे फिर जहाज़ में चढ़ने के लिए समुद्र के किनारे आए। पर जहाज़ पहले ही चला जा चुका था। इधर सेना की एक टुकड़ी ने उन पर आक्रमण किया। देशभक्त आत्म-रक्षा के लिए जान पर खेल कर लड़े, परन्तु अन्त में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनका मुक़दमा फ़ौजी न्यायालय के सामने पेश हुआ। बेण्डियरा-बन्धुओं ने वीरता से अपनी रक्षा के लिए वकील नियत करना अस्वीकार किया।

अट्ठारहों वीर देशभक्तों को मौत की सज़ा दी गई। २५ जुलाई, १८४४ को ऐमीलो बेण्डियरा अपने सात साथियों सहित काले बुर्क़ों से ढक कर खुले मैदान में लाया गया, वे ज़ोर-ज़ोर से कहते जाते थे *chi per la patria muoro vissuto ha assai* (स्वदेश के लिए शहीद होने वाला अमर है।) जब उनके मरने का समय आया तो उन्होंने एक-दूसरे को बड़े प्रेम से चुम्बन किया। जो सैनिक गोली दाग़ने के लिए नियुक्त थे, उनकी आँखों से अनवरत अश्रु की लड़ियाँ निकल रही थीं। चारों ओर इकट्ठी जनता साक्षात् करुणा की मूर्ति बनी खड़ी थी और सरकार को खुल्लमखुल्ला कोस रही थी। सैनिकों ने गोली छोड़ी, पर उनके हृदय ने हाथों का साथ नहीं दिया, गोलियाँ निशाने पर न लगीं। देशभक्तों में से एक ने चिल्ला कर कहा—"साहस करो! अपना कर्त्तव्य पालन करो, हम भी सैनिक हैं।" गोलियों की दूसरी बाढ़ छूटी! अनेक देशभक्त पृथ्वी पर गिर कर समाप्त हो गए! ऐटीलो बेण्डियरा घायल होकर पृथ्वी पर तड़प रहा था। परन्तु मरते-मरते भी उनमें से हर एक मुँह से निकला—*Viva l'Italia!* 'इटली अमर हो!' ऐमीलो ने फ़ेब्रिज़ी को अपने एक पत्र में लिखा था—"यदि हम मारे जायँ तो क्या चिन्ता है? इटली तब तक कभी जीवित नहीं रह सकता, जब तक इटलीवासी मरना न सीख लें।" इस तरह अपने साथियों सहित वीर बेण्डियरा-बन्धुओं ने अपने देश के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण दे दिए। इस घटना के सोलह वर्ष बाद नेपिल्स और सिसली को आज़ाद करके गेरीबाल्डी अपने सैनिकों सहित यहाँ आया और सेण्ट अगस्टनो के गिर्जे में घुटने टेक कर मृत आत्माओं के लिए शान्ति की प्रार्थना की।

इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में मेज़िनी की डाक में हस्तक्षेप करने की निन्दा करते हुए डनकोम्ब ने कहा कि जब इटली स्वतन्त्र होगा और वहाँ बेण्डियरा-बन्धु और उनके सहयोगियों की यादगार बनाई जायगी, तो उसके नीचे लिखा होगा—"वे उस समय की ब्रिटिश सरकार के धोखा देने के कारण अपने देश के लिए मर गए!"

१६ जून, १८४६ को कारडिनल मस्ताई फेरेटी नवें पायस के नाम से गद्दी पर बैठा। इसने गद्दी पर बैठने के समय इटली के आन्दोलन के साथ बड़ी सहानुभूति प्रकट की और गद्दी पर बैठने के समय *Dio benedici l'Italia* "हे ईश्वर! अपनी इटली पर कृपा-दृष्टि डाल!" शब्दों का उच्चारण किया। उसने प्रजा को उसके स्वत्व देने की प्रतिज्ञा की, इससे शीघ्र ही इटली के सब जगहों में उसकी धाक जम गई।

Viva l'Italia 'इटली अमर हो' *morte all' Austria* 'ऑस्ट्रिया का क्षय हो' *Viva i Bandiera* 'बेण्डियरा-बन्धुओं की जय हो' 'सम्राट मर जावें' आदि नारे चारों तरफ़ सुनाई पड़ते थे। धर-पकड़ की भरमार थी। नेपिल्स का राजा बड़ा निर्दयी था, और रूस और ऑस्ट्रिया से उसकी घनिष्ठता थी। उसने अपने जेलख़ाने देशभक्तों से भर दिए और आन्दोलन को दबाने के लिए ऑस्ट्रिया से सेना की सहायता माँगी, जिसने आकर प्रजा पर मनमाने अत्याचार किए। ऑस्ट्रिया की नीति ही यह थी कि इटली के जो प्रदेश उसके अधिकार में थे, उनमें वह अपनी उदारता दिखाने के लिए स्वयं इतनी अधिक कड़ाई से काम नहीं लेता था, जितना कि अन्य पड़ोसी राजाओं को उकसा कर कराता था, और अवसर आने पर वहाँ आन्दोलन को कुचलने के लिए स्वयं अपनी सेनाएँ भेज देता था। इन सब राजाओं में पीडमोण्ट का राजा कुछ देशभक्त था, और अपने देश में अधिक कड़ाई से काम नहीं लेता था। इसलिए इटली के लोगों की आँखें पोप और पीडमोण्ट-नरेश की ओर थीं, कि यदि वे मिल जावें तो देश का बहुत-कुछ उपकार कर सकते हैं।

सन् १८४७ में मिलन के निवासियों ने 'अमेरिका की क्रान्ति' के 'चाय-बहिष्कार' नीति का अनुकरण करते हुए तम्बाकू और स्टेट लॉटरी का बहिष्कार कर दिया।

ऑस्ट्रिया को तम्बाकू से ८० लाख लीरा*और लॉटरी से इससे भी अधिक आय होती थी। और इस बहिष्कार से उसे बहुत बड़ा धक्का पहुँचने की सम्भावना थी। इटली के लोग सिगार पीने के बड़े शौक़ीन थे, और उन्हें एकदम इस आदत को छोड़ने में बहुत कष्ट मालूम हुआ, परन्तु देश के लिए वे बड़े से बड़े आराम को छोड़ने के लिए तैयार थे। इस पर सरकार का क्रोध बहुत बढ़ गया। उसने जेल से बहुत से बदमाशों को छोड़ दिया और उन्हें तथा फ़ौजी सिपाहियों को बहुत से सिगार बाँट दिए। वे सड़कों पर उनका धुआँ उड़ाते फिरते थे, और किसी इटलीय महिला को देखने पर अपने मुँह का धुँआ उसके मुँह पर छोड़ देते थे। इस तरह बड़े-बड़े घरों की महिलाओं को अपमानित किया जाता था। कभी-कभी तो ऊँची श्रेणी के सरकारी कर्मचारी भी वह असभ्य व्यवहार करते देखे जाते थे। इस व्यवहार से इटली-निवासियों के हृदय जल रहे थे, और वे इसका बदला लेने का कोई बहाना ढूँढ़ रहे थे। दूसरी जनवरी सन् १८४८ को ऑस्ट्रियन घुड़सवारों ने निहत्थी जनता पर आक्रमण किया, जिससे ६७ मनुष्य मारे गए और बहुत से घायल हुए। इस घटना से लोगों में आग लग गई।

इस समय सिसली की जनता बड़े कष्ट में थी, सरकार की आर्थिक नीति ने उन्हें बिल्कुल कङ्गाल कर दिया था, टैक्स की भरमारों से वे पिसे जाते थे। इस पर भी उन्हें घूँस और भेंटों के रूप में बहुत-कुछ देना पड़ता था। क़िले और जेल राजनीतिक क़ैदियों और सन्देह में गिरफ़्तार लोगों से भर गए थे। सन् १८४७ के विद्रोह के दब जाने के बाद स्वयं राजा फ़र्डीनेण्ड ने अपने सामने सैंतालीस देशभक्तों को बेड़ियाँ डलवा कर मरवा डाला!

दूसरी जनवरी को, जब यह हत्याकाण्ड हुआ तो पलेरमो के नागरिकों ने राजा फ़र्डीनेण्ड को अल्टीमेटम दिया कि १२ तारीख़ तक उन्हें वही सार्वजनिक अधिकार दे दिए जायँ, जो उन्हें १८१७ में प्राप्त थे। १२ जनवरी को पलेरमो की स्त्रियाँ काली पोशाक में राजा के पास इसका उत्तर लेने गईं। अन्त में राजा के नाहीं करते ही विद्रोह की घोषणा कर दी गई। उस रात को एक भी आदमी भी न सोया। पुरुष और स्त्रियाँ तिरङ्गे झण्डे और अस्त्र-शस्त्र बनाने और ठीक करने में व्यस्त थीं।

दूसरे दिन राजा के जन्म-दिवस के उपलक्ष में केस्टलमारे से ज्योंही तोप छूटी, त्योंही उसका जवाब देने के लिए गिर्जों में घण्टे बजने लगे। जनता पत्थर, हँसिया और फावड़े लेकर गश्त करने वाले सैनिकों पर टूट पड़ी और उन्हें भगा दिया। दूसरे दिन हज़ारों गाँवों के लोग इकट्ठा हो गए और सरकारी सैनिकों पर आक्रमण करके २०,००० ड्यूकट†, जो सैनिकों के वेतन के लिए जा रहा था, छीन लिया।

तीसरे दिन राजा के भाई की अध्यक्षता में एक ज़बर्दस्त जङ्गी बेड़ा और पाँच हज़ार सैनिक भेजे गए। जहाज़ों से पलेरमो को उड़ा देने के लिए गोलाबारी की गई और सैनिकों ने ऐसे-ऐसे अत्याचार किए कि वहाँ की जनता ईश्वर से मौत देने की प्रार्थना करने लगी। अङ्गरेज़ कप्तान लियोनल, जिसने यह सब अत्याचार देखे थे, लॉर्ड नेवियर को लिखा कि "ग़रीब और अमीर, रईस और फ़क़ीर, कारीगर और किसान, सबने घोषणा की है कि ऐसी सरकार के शासन में रहने से मरना अच्छा है और पलेरमो अगर ख़ाक में भी मिल जाय तो भी वे इस सरकार के सामने पराजय स्वीकार करने के स्थान में उसमें ही दफ़न हो जायँगे।‡"

इस आन्दोलन में महिलाओं ने अनुकरणीय वीरता और साहस का प्रदर्शन किया। रणक्षेत्र और अस्पताल, दोनों में उनकी सेवाएँ महान थीं। जब राजा फ़र्डीनेण्ड ने आन्दोलन को किसी तरह दबते न देखा, तो सुधार देने की घोषणा की, पर क्रान्तिकारियों ने कहा—"सिसली अपनी सार्वजनिक पार्लामेण्ट द्वारा समय के अनुसार आवश्यक शासन-प्रणाली का निश्चय कर लेगी।" अन्त में गवर्नर डी मेजो भागा, जनता ने उसके महल पर क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ज़ाने के बीस लाख लीरा लूट लिए, परन्तु घायल सरकारी सैनिकों को, जिन्हें मेजो असहाय अवस्था में छोड़ गया था, जनता ने कोई कष्ट नहीं दिया।

अन्त में सरकार ने क्रान्तिकारियों को दबाने के लिए जेल के फाटक खोल कर पाँच-छः हज़ार डाकू और लुटेरों को जनता पर छोड़ दिया। इस तरह अट्ठारह दिनों तक सिसली में महाक्रान्ति का अग्निकुण्ड धधकता रहा। अन्त में क्रान्तिकारियों की विजय हुई और बोर्बन राजवंश का सदा के लिए अन्त हो गया।

मेज़िनी ने जब यह समाचार सुना, तो उसे अत्यन्त हर्ष हुआ। परन्तु भय उसे यह था कि सिसली की विजय कहीं प्रान्तिकता में परिवर्तित न हो जाय और लोग 'संयुक्त इटली' की बात भूल जावें। उसने सिसली-वासियों को बधाई देते हुए लिखा :—

"You have taught us the power of will; teach us that union is strength; teach us the religion of unity which alone can restore to Italy her glory, her initiative and her mission for the third time in Europe."

मेज़िनी की आँखें प्रारम्भ से ही संयुक्त और प्रजातन्त्र इटली की ओर लगी हुई थीं। वह सदैव इटली की भिन्न-भिन्न रियासतों के लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहता था कि इटली के सभी महान पुरुषों—अर्नाल्ड से लेकर मकियावेली तक तथा डाँटे से लेकर नेपोलियन तक—का ध्येय इटली की राजनीतिक ऐक्यता की ओर रहा है। इसलिए हमें भी ढाई करोड़ इटलीवासियों के संयुक्त और सङ्गठित राष्ट्र के निर्माण करने का ध्येय अपने सामने रखना चाहिए।

१८ मार्च, १८४८ को मिलन-वासियों ने ऑस्ट्रिया सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। निहत्थी जनता ने सरकार पर आक्रमण किया। इस समय यहाँ ऑस्ट्रियन सेनापति रेडेट्ज़की के अधीन १८,००० हज़ार सैनिक थे और उनके पास बहुत सी तोपें और गोला-बारूद था, पर राष्ट्रीयता के भावों से प्रेरित जनता की वीरता और साहस ने ऑस्ट्रियन सैनिकों को बाज़ार से निकाल बाहर किया और बहुत से अस्त्र-शस्त्र भी छीन लिए। फिर तो जनता की शक्ति और साहस और भी बढ़ गया और शीघ्र ही उन्होंने महलों, पुलिस की चौकियों और क़िले में से सिपाहियों को भगा कर अपना क़ब्ज़ा कर लिया। ऑस्ट्रियन सेनापति जान छुड़ा कर भागा। जनता ने यह सब कुछ अपने बल पर केवल पाँच ही दिन में कर दिखाया। मिलन में जनता की प्रॉविज़नल सरकार क़ायम हो गई।

पोप और पीडमोण्ट का राजा ऑस्ट्रियनों से जलते थे और हृदय से उन्हें देश से बाहर निकाल देना चाहते थे। वे इटली में प्रजातन्त्र स्थापित होने के उतने ही विरोधी थे, जितने ऑस्ट्रियन शासक। परन्तु वे जनता के ऑस्ट्रिया-विरोधी भावों का उपयोग करने का अवसर भी नहीं जाने देना चाहते थे। क्योंकि उनकी सहायता से ही वे ऑस्ट्रिया को निकालने और अपना प्रभुत्व जमाने में समर्थ हो सकते थे। जब मिलन से ऑस्ट्रियन सैनिक निकाले जा चुके तब, २६ मार्च को, चार्ल्स एलबर्ट ने मिलन-वासियों के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाते हुए घोषणा की कि वह मिलन की सेना का नेतृत्व करने और उन्हें हर तरह से सहायता पहुँचाने को तैयार हैं।

इस समय मेज़िनी भी अपनी मातृभूमि में लौट आया था। मिलन में उसका बड़े ही उत्साह से स्वागत किया गया। नागरिकों की बड़ी-बड़ी टोलियाँ तिरङ्गे झण्डे लिए हुए, जिन पर लिखा था, 'राष्ट्र गिरपी मेज़िनी के लिए' उसके स्वागत के लिए गईं। मेज़िनी ने उन्हें इस विजय के लिए बधाई दी और जब तक कुल इटली देश से विदेशी न निकाल न दिए जायँ, ऐक्यता के साथ लड़ते रहने का परामर्श दिया।

देश से बाहर जितने निर्वासित देशभक्त थे, उनको शीघ्र ही स्वतन्त्रता की लड़ाई में आकर भाग लेने के लिए लिखा गया। मेज़िनी एक राष्ट्रीय सेना का निर्माण करना चाहता था। परन्तु प्रॉविज़नल सरकार में अधिकांश धनी श्रेणी के लोग थे, जिन्होंने सन् १८१४ में ऑस्ट्रिया का इस देश में आने पर स्वाग किया था। हज़ारों वीर इटली सैनिकों ने, जो फ़्रान्स और अमेरिका में प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए लड़ चुके थे, अपनी सेवाएँ अपनी मातृभूमि के लिए देना चाहीं। परन्तु प्रॉविज़नल सरकार ने निश्चय किया की ऑस्ट्रियनों को देश से निकालने के लिए चार्ल्स एलबर्ट और उसकी सैनिक शक्ति ही पर्याप्त है और नए सैनिक भरती करने से इन्कार कर दिया। इस नीति का मूल कारण यह भी था कि रईस और ऊँचे घराने के लोग इन सैनिकों के उग्र प्रजातन्त्र भावों से डरते थे और उनको कोई प्रोत्साहन नहीं देना चाहते थे। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह हुआ कि प्रॉविज़नल सरकार में, जिसका केन्द्र लम्बार्डी में था, पीडमोण्ट सरकार का प्रभुत्व बढ़ने लगा और थोड़े ही दिनों में जनता में दो दल हो गए; एक रईस और सरदार घराने के लोगों का जो लम्बार्डी को पीडमोण्ट राज्य में मिला देना चाहते थे, और दूसरा मध्य-श्रेणी के लोगों का, जो प्रजातन्त्र स्थापित करना चाहते थे।

२९ मार्च को टिकिनो नदी को पार करके मोण्टे चिमारो में चार्ल्स एलबर्ट ने ऑस्ट्रियनों पर आक्रमण करके उन्हें भगा दिया। इस समय पीडमोण्ट सेनाओं को ऑस्ट्रियन सैनिकों के स्वरक्षित स्थान में पहुँचने से पहले ही कुछ करना चाहिए था। परन्तु वे अपने मेण्टुआ और वेरोनी के क़िलों में पहुँच गए और चार्ल्स एलबर्ट उनके मार्ग में बाधा डालने के लिए कुछ भी न कर सका। इससे लम्बार्डी की जनता में बहुत असन्तोष फैला।

अब तक की सफलताओं से प्रॉविज़नल सरकार निश्चिन्त हो गई थी और उसने सैनिक सङ्गठन का काम बहुत ढीला कर दिया था। सब लोगों में यह विश्वास जम गया था कि ऑस्ट्रिया की शक्ति अब टूट गई। उसकी सेना अब उनके प्रदेश में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकती और उत्तरीय इटली में पीडमोण्ट, जिनोआ, लम्बार्डी, वेनिस, पर्मा और मोडेना प्रान्तों की एक संयुक्त सरकार का स्थापित होना अब एक निश्चयात्मक बात है। मेज़िनी ने चेतावनी की कि यह प्रवृत्ति राष्ट्र के लिए अत्यन्त हानिकर है और दुश्मन का सामना करने के लिए हमें अपनी सारी शक्ति सङ्गठन में लगा देनी चाहिए। परन्तु उनकी सम्मति की अवहेलना की गई।

उधर रेडेट्ज़की पराजित होकर अपनी बिखरी शक्तियों का सङ्गठन करने और अस्त्र-शस्त्र जुटाने में लगा हुआ था, इधर चार्ल्स एलबर्ट और उसके सहयोगी जीते हुए प्रदेशों को अपने राज्य में सम्मिलित करने की धुन में लगे हुए थे। इसी समय एक घटना और हुई, जिससे राष्ट्रवादियों को बहुत धक्का पहुँचा। अब तक पोप को देश की आकांक्षाओं का समर्थक समझा जाता

(शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

* ऑस्ट्रिया का सिक्का।

† *Ducats* सिक्का

‡ *The birth of modern Italy, pp. 141.*

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूटनीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं ; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं ; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं। किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥=) मात्र !

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में बस एक है लम्बी दाढ़ी॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥=) मात्र।

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम हास्यरस-पूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १) ; स्थायी ग्राहकों से ॥।); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

सोवियट रूस की नवीन शिक्षा-प्रणाली

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०; रिसर्च स्कॉलर]

नवीन रूस संसार के लिए एक अनोखी वस्तु है। सारे संसार की आँखें आज उसकी ओर लगी हुई हैं। बड़े-बड़े विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। विशेषज्ञों का कहना है कि दस-बीस वर्षों के अन्दर ही रूस संसार का नेता बनेगा। सोवियट रूस की चर्चा शिक्षित समाज में प्रतिदिन होती है। उसके राजनैतिक तथा आर्थिक प्रश्नों पर हम बहुधा लिखा-पढ़ा करते हैं। पर आज मैं 'भविष्य' के पाठकों के सामने उसके एक उस पहलू को रखना चाहता हूँ, जिसके बारे में हम लोग बहुत कम जानते हैं। वह है, रूस की नवीन शिक्षा-प्रणाली। संसार ने रूस से बहुत सी बातें सीखी हैं। पर सब से आवश्यक बात जो हमें आज उससे सीखना है, वह उसकी शिक्षा-प्रणाली ही है।

यह शिक्षा-प्रणाली रूस के लिए भी अभी बिलकुल नई वस्तु है। इसका श्रीगणेश १९२१ या १९२२ से होता है। दो ही वर्षों में रूस ने इसमें इतनी उन्नति कर ली थी कि १९२४ में ही 'ब्रिटिश ट्रेड यूनियन डेलीगेशन' ने अपने रिपोर्ट के १३८ वें पन्ने में लिखा है, कि किसी भी विषय में, विचारों में इतनी क्रान्ति नहीं हुई है, जितनी कि सोवियट रूस की नवीन शिक्षा-प्रणाली में। इसके भी पूर्व, १९२१ में, ब्रेल्सफ़र्ड ने लिखा था कि सोवियट यूनियन अपने शिक्षा के महान उद्योग द्वारा रूस की तमाम जनता को शक्तिशाली तथा ज़िम्मेदार बना रहा है।

पर इस नवीन शिक्षा-प्रणाली का दिग्दर्शन करने से पहले, आइए हम रूस की पुरानी शिक्षा-प्रणाली को भी देख लें। बीसवीं सदी के आरम्भ में, जहाँ तक शिक्षा का सम्बन्ध था, रूस यूरोप के और देशों से बहुत पीछे था। रूस के बहुत थोड़े पुरुष लिख-पढ़ सकते थे। यदि हम यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों की सेनाओं के रँगरूटों की शिक्षा की तुलना करें, तो हमें उस समय के रूस की शिक्षा का पता लग जावे। बेलजियम की सेना में सौ पीछे ९२ रँगरूट पढ़े-लिखे थे, फ़ान्स की सेना में सौ पीछे ९६ लिख पढ़-सकते थे, इङ्गलैण्ड की सेना में ९९ प्रति सैकड़ा शिक्षित थे और जर्मनी की सेना में २,००० रँगरूट पीछे १,९९९ रँगरूट पढ़े-लिखे थे, पर रूस के रँगरूटों में सौ पीछे केवल ९२ शिक्षित थे।

जनता को अशिक्षित रखना रूस के ज़ारों की नीति थी। उन्हें शिक्षित बनाने का उद्योग करने की कौन कहे ज़ारों की सरकारें उल्टा शिक्षा के मार्ग में रोड़े अटकाती थीं। केवल अमीरों के लड़के शिक्षा पा सकते थे। किसान और मज़दूरों के लड़के यदि ऊँची शिक्षा पाना चाहते थे, तो उन्हें महान कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। ज़ार अलेक्ज़ण्डर के चौथे शिक्षा-मन्त्री शिशकोव (Shishkov) ने शिक्षा और नमक की तुलना करते हुए कहा था कि जैसे नमक जब थोड़ा खाया जाता है तब फ़ायदा पहुँचाता है, वैसे ही शिक्षा भी थोड़ी ही लाभजनक होती है, और जैसे अधिक नमक का प्रयोग हानि पहुँचाता है, वैसे ही अधिक शिक्षा भी हानि पहुँचाती है। अतएव तमाम जनता को शिक्षित बनाने से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी।

उस समय रूस के मदरसों में बहुत थोड़े लड़के पढ़ते थे। निम्नाङ्कित विवरण से पता चलता है कि १९०४ में किस देश में कुल आबादी का प्रतिशत कितना हिस्सा मदरसों में पढ़ता था—

देश का नाम	कुल आबादी का प्रतिशत
अमेरिका	२३
जर्मन साम्राज्य ...	१९
इङ्गलैण्ड	१६
फ़ान्स	१५
रूस	३.३

रूस की सरकार ने इन स्कूलों पर पूरा अधिकार जमाया था। वही तय करती थी कि मदरसों में क्या-क्या पढ़ाया जावे। सरकारी निरीक्षक अध्यापकों पर अपनी लगाम कसे थे। शिक्षकों का वेतन भी बहुत थोड़ा था। जो थोड़े से विद्यार्थी ऊँची शिक्षा प्राप्त करते थे, उन्हें 'डिसिप्लिन' के कड़े नियमों का पालन करना पड़ता था। उनकी प्रत्येक बात पर नियम लगा दिए गए थे। वे लोग किसी को मानपत्र न दे सकते थे। और न अपना डेपुटेशन कहीं भेज सकते थे। विश्व-विद्यालय में या उनके हाते के अन्दर ऐसी कोई भी बात न कर सकते थे, जिसका शिक्षा से सम्बन्ध न हो। उन्हें कोई सभा आदि करने का अधिकार न था और जनता में व्याख्यान न दे सकते थे। विश्व-विद्यालय के विद्यार्थियों ने इन कठोर नियमों के विरुद्ध अनेक बार आन्दोलन किया, परन्तु कोई फल न हुआ।

अन्त में ज़ारशाही का अन्त हुआ। रूस में भीषण क्रान्ति हुई। पुरानी रूढ़ियों का अन्त हुआ। रूस ने नवीन उत्साह से नए मार्ग पर क़दम रक्खा। प्रत्येक क्षेत्र में उत्साह से धैर्यपूर्वक परिवर्तन किया गया। पुरानी अशिक्षा को दूर करने के लिए तथा जनता को शिक्षित बनाने के लिए लोगों ने जी-तोड़ परिश्रम किया।

१९१८ में अखिल रूस का शिक्षा-सम्मेलन मास्को में हुआ। रूस के नेताओं ने जनता में शिक्षा का प्रचार करने के लिए योजनाएँ बनाईं। पर उन योजनाओं को सफल बनाने के लिए साधनों की कमी थी। सब से बड़ी अड़चन धन का अभाव था। १९२१ में सोवियट रूस ने अपनी आर्थिक नींव दृढ़ की और धन का अभाव दूर किया। तभी से रूस में शिक्षा के नवीन युग का श्रीगणेश हुआ।

रूस की नवीन सरकार ने सब से पहिले धार्मिक शिक्षालयों का प्रश्न अपने हाथ में लिया। शिक्षालय गिरजाघरों से अलग कर दिए गए। धर्म का शिक्षा से कोई सम्बन्ध न रह गया। सरकारी पाठशालाओं से धार्मिक विषयों का अध्ययन उठा दिया गया।

सोवियट-यूनियन में शिक्षा का प्रश्न प्रत्येक प्रजातन्त्र को सौंप दिया गया है। प्रत्येक प्रजातन्त्र तथा प्रत्येक शहर में एक शिक्षा-विभाग है। प्रत्येक शहर, प्रत्येक ज़िला तथा प्रत्येक प्रान्त में शिक्षा-विभाग है और वहाँ के निवासी अपने शिक्षा-विषयक प्रश्न को अपने ढङ्ग से हल करते हैं। पर इसका अर्थ यह न समझना चाहिए कि 'अपनी-अपनी डफ़ली और अपना-अपना राग' की कहावत चरितार्थ हो रही है। देश भर के शिक्षा का प्रश्न एक सूत्र में बँधा हुआ है और सबका एक ही ध्येय तथा उद्देश्य है। ट्रेड-यूनियन, कम्यूनिस्ट पार्टी आदि देश-व्यापी संस्थाओं ने शिक्षा की समस्या को एक बना रक्खा है। हाँ, एक ही स्थान से देश भर की शिक्षा का सञ्चालन नहीं होता।

सोवियट यूनियन में चार बड़े-बड़े प्रजातन्त्र हैं। जिनके नाम हैं—रसन प्रजातन्त्र, अकरेन, व्हाइट रसा तथा ट्रान्सकाकेशिया। प्रत्येक प्रजातन्त्र में एक शिक्षा-मन्त्री तथा एक शिक्षा-विभाग होता है। शिक्षा-विभाग के और भी कई उपविभाग होते हैं। रूस के एक प्रजातन्त्र के शिक्षा-विभाग की निम्नाङ्कित शाखाएँ हैं :—

(१) सङ्गठन-विभाग, (२) सामाजिक शिक्षा-विभाग, (३) औद्योगिक शिक्षा-विभाग, (४) राजनैतिक शिक्षा, कमिटी (इस कमिटी में ट्रेड-यूनियन, कम्यूनिस्ट पार्टी आदि के प्रतिनिधि शामिल हैं), (५) वैज्ञानिक शिक्षा-विभाग, (६) साहित्य तथा सम्पादन-कला-निरीक्षण विभाग और (७) वैज्ञानिक स्टेट कौन्सिल।

शिक्षा-विभाग के निरीक्षण में निम्न-लिखित काम किए जाते हैं :—

१—सरकारी प्रकाशन
२—सरकारी सिनेमा
३—सरकारी थिएटर

प्रजातन्त्र के सभी शिक्षा-विभागों का सञ्चालन उपर्युक्त ढङ्ग से किया जाता है। प्रजातन्त्र के प्रत्येक छोटे से बड़े हिस्से में स्थानीय शिक्षा-विभाग है, जिसमें उसे पूरी स्वतन्त्रता है। परन्तु प्रजातन्त्र के दो शहरों—मास्को तथा लेनिनग्राड—में शिक्षा का ढङ्ग अलग-अलग है। सिद्धान्त एक है, केवल कार्य-शैली भिन्न है।

रूस के सामने मुख्य दो प्रश्न हैं। एक तो तमाम नई पीढ़ी के लोगों को पढ़ाना और दूसरा उन बड़े-बूढ़ों को पढ़ाना, जो ज़ार के काल में पढ़ न पाए थे और तब से अशिक्षित चले आ रहे हैं। इस तरह मानो ज़ार के पापों का प्रायश्चित्त रूस को अब करना पड़ रहा है।

रूस में शिक्षा का विस्तृत जाल फैला है। जैसे ही बालक तीन वर्ष का होता है, उसके भावी शिक्षा की नींव रख दी जाती है। तीन वर्ष से छोटे बालक 'स्वास्थ्य बोर्ड' के अधीन रहते हैं। वही उनकी देख-भाल करता है। जब बालक आठ वर्ष का होता है। तो उसे पढ़ने के लिए बाध्य किया जाता है। पर तीन वर्ष से लेकर आठ वर्ष के बीच के पाँच वर्ष भी व्यर्थ नहीं जाते। उसे इन वर्षों में सरल मनोरञ्जन के साथ उपयोगी बातें सिखाई जाती हैं। खेलना, क़िस्से-कहानी कहना, क़रीब के स्थानों की सैर करना आदि बातें बालकों को सिखाई जाती हैं, और उन्हें भविष्य के लिए तैयार किया जाता है। आठ वर्ष से १५ वर्ष तक प्रत्येक बालक को मदरसा जाना पड़ता है। इन सात वर्षों में उसे शिक्षित किया जाता है। इस शिक्षा-काल के दो हिस्से हैं। पहिला हिस्सा आठ वर्ष से १२ वर्ष तक है। १२वें वर्ष इस शिक्षा की पहिली मञ्ज़िल समाप्त हो जाती है। दूसरी मञ्ज़िल १२वें वर्ष से १५वें वर्ष तक है और कहीं-कहीं तक १७वें वर्ष तक। यह शिक्षा अधिकतर गाँवों में दी जाती है। १९२४ के जनवरी महीने में रूस भर में ऐसे ९२,८५७ मदरसे थे। इनमें से ८१,३०६ यानी ८१.५ प्रति सैकड़ा गाँवों में थे।

जब एक बालक १५ वर्ष का हो जाता है, तब उसे

(२९वें पृष्ठ का शेषांश)

था और मिलन-क्रान्ति के सुप्रसिद्ध 'पाँच दिनों में' *Viva Pio IX e la liberta* 'स्वातन्त्र्य के उपासक पोप की जय हो' के नारे प्रति क्षण सुनाई देते थे और ऑस्ट्रिया-वासी भी उसे विद्रोहियों का प्रबल समर्थक समझते थे, परन्तु स्थिति शीघ्र ही बदल गई। पोप ने घोषणा की कि ऑस्ट्रिया से विद्रोह करना पाप है और अपनी प्रजा को आज्ञा दी कि कोई विद्रोह में भाग न ले। अनेक सैनिक रणक्षेत्र से पृथक हो गए और केवल वे ही रह गए, जिनके हृदय की प्रबल देशभक्ति की आग धार्मिक छींटों से नहीं बुझ सकती थी।

(अगले अङ्क में समाप्त)

* * *

उद्योग-धन्धे की शिक्षा दी जाती है। जो १८ या १६ वर्ष तक जारी रहती है। ऐसे मदरसे तीन भाँति के हैं—(१) किसानों के मदरसे, जो देहातों तथा गाँवों में हैं। इन मदरसों में देहाती उद्योग-धन्धों की शिक्षा दी जाती है। (२) शहर के शिक्षालय, जिनमें तिजारत, व्यापार आदि की शिक्षा दी जाती है। (३) फ़ैक्टरी-स्कूल—ये मदरसे किसी उद्योग-धन्धे से सम्बन्ध रखते हैं। जो लोग उस धन्धे में पहले-पहल आते हैं, वे इन्हीं शिक्षालयों में पढ़ते हैं। प्रतिदिन चार घण्टे फ़ैक्टरी में काम करते हैं तथा चार घण्टे उसी फ़ैक्टरी-स्कूल में पढ़ते हैं। १६२४ के जनवरी माह में ३,१७,८४२ लड़के इन मदरसों में पढ़ते थे।

जब बालक १६ वर्ष का हो जाता है और प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करके आगे पढ़ने की योग्यता तथा इच्छा रखता है, तो उसके लिए ऊँची शिक्षा का प्रबन्ध है। १६२४ में ऊँची शिक्षा देने वाले ६१२ शिक्षालय थे, जिनमें १,५६,१७६ विद्यार्थी शिक्षा पा रहे थे। ऐसे शिक्षालय ६ भाँति के हैं—१६२४ में दवाई के ६६, कृषि के १५२, उद्योग-धन्धे के २१६, अर्थशास्त्र के ५३, सङ्गीत-विद्या के ६२ शिक्षालय थे।

नोट कर लीजिए !

पत्र-व्यवहार करते समय जो ग्राहक अपना ग्राहक-नम्बर नहीं लिखेंगे, उनके पत्रों अथवा आदेशों पर ध्यान नहीं दिया जायगा; और उनकी आज्ञा-पालन में देरी होने के लिए संस्था ज़िम्मेदार न होगी। पाठक स्वयं समझ सकते हैं, इतनी विशाल ग्राहक-संख्या में किसी व्यक्ति-विशेष का पता लगाना तब तक कठिन है, जब तक उनका ग्राहक-नम्बर पत्र में लिखा न हो। ग्राहक-नम्बर प्रत्येक लिफ़ाफ़े अथवा रैपर पर लिखा होता है। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए Regd. No. A. 1154 अथवा A. 2085 पत्रों के नम्बर हैं, ग्राहकों के नहीं। ग्राहक-नम्बर नाम के पहिले छपा अथवा लिखा होता है, इसे नोट कर लीजिए। इसके द्वारा आपको तथा हमारी—दोनों की परेशानियाँ कम हो सकती हैं।

—व्यवस्थापक

सोवियट यूनियन में विश्वविद्यालय भी हैं। मास्को के प्रथम विश्वविद्यालय में ६,००० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। इन विद्यार्थियों में से ४५ प्रति सैकड़ा विद्यार्थी आर्थिक सहायता पाते हैं। मास्को में एक और विश्वविद्यालय है, जिसमें कम्यूनिस्ट पार्टी का काम करने के लिए लोग तैयार किए जाते हैं।

अन्त में, रूस के आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक नेताओं के सुभीते के लिए, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के अध्यापकों के शिक्षा के लिए तथा नई-नई खोज तथा आविष्कार के लिए अनेक संस्थाओं का प्रबन्ध है।

रूस की उपर्युक्त शिक्षा-प्रणाली मनन करने योग्य है। जिस ढङ्ग से रूस शिक्षा के प्रश्न को हल कर रहा है, उससे तो यही मालूम पड़ता है कि भविष्य में संसार के विद्यार्थी अपनी शिक्षा के लिए इङ्गलैण्ड आदि न जाकर रूस आया करेंगे, और रूस संसार की शिक्षा का केन्द्र बन जावेगा।

* * *

भारतीय बहिष्कार का भयंकर प्रभाव

दूसरे देशों में व्यापार फैलाने का अनवरत प्रयत्न

भारत, चीन और मिश्र में ब्रिटिश माल का बहिष्कार हो जाने के कारण, उसकी खपत का कोई साधन नहीं रह गया है, क्योंकि केवल ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत अन्य देशों में इतने माल की खपत होना मुश्किल है। अङ्गरेज़ अपने दूसरे अधीन देशों में किस प्रकार माल खपाने की कोशिश कर रहे हैं, इसके कुछ नमूने यहाँ दिए जाते हैं।

मोटर के, कपड़े के तथा अन्य माल के ब्रिटिश व्यापारी, ब्रिटिश ट्रिनिडाड तथा वेस्ट इण्डीज़ में अपने माल की खपत के लिए जो प्रयत्न कर रहे हैं, 'ब्रिटिश एक्सपोर्ट गज़ट' ने उसका बड़ा ही मनोरञ्जक वृत्तान्त प्रकाशित किया है। ब्रिटिश ट्रिनिडाड की जन-संख्या सन् १६२१ में ३,८५,०६१ थी, जिसमें ३३ प्रतिशत ईस्ट इण्डियन थे। वहाँ बाहर से प्रति वर्ष ५० लाख पौण्ड का माल आता है, जिसमें ब्रिटेन का भाग २८ प्रतिशत और अमेरिका का भाग २२ प्रतिशत है। ट्रिनिडाड अपनी झीलों के लिए प्रसिद्ध है। व्यापार की महत्वपूर्ण चीज़ें वहाँ चीनी, नारियल, शराब, गुड़ और लकड़ी आदि हैं। इन चीज़ों को वह अमेरिका और यूरोप के देशों में भेजता है। पहले यह द्वीप स्पेन के अधीन था, किन्तु एमिएँ की सन्धि के अनुसार १८०२ में यह अङ्गरेज़ों को मिल गया।

अधिकारियों का दबाव

ट्रिनिडाड की सरकार ने वहाँ के सरकारी नौकरों को मोटरें ख़रीदने के लिए उधार रुपए देना इस शर्त पर स्वीकार किया है कि वे केवल इङ्गलैण्ड की बनी मोटरें ख़रीदें। इसका महत्व उससे कहीं अधिक है, जितना कि समझा जाता है। इससे यह आशा की जाती है कि ब्रिटिश माल की बिक्री बढ़ जायगी, क्योंकि वे लोग भी, जिन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं है, सरकार की आन्तरिक किन्तु अप्रकट इच्छा को जान कर इन चीज़ों को ख़रीदेंगे। इसका प्रभाव ब्रिटिश वस्तुओं की बिक्री पर क्या होगा, यह विचारणीय है। आज प्रतियोगिता के ज़माने में भी, यह सर्वथा सिद्ध हो चुका है कि ट्रिनिडाड और वेस्ट इण्डीज़ के निवासी भी केवल उन्हीं चीज़ों को ख़रीदेंगे जो टिकाऊ और देखने में सुन्दर होंगी। पोर्ट ऑफ़ स्पेन (यहाँ की राजधानी) के उत्साही व्यापारियों को वहाँ की सरकार और सरकारी ऑफ़िसरों की पूरी सहानुभूति प्राप्त होगी और इस प्रकार जनता पर भी वे अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे। तब वहाँ की जनता का ध्यान विदेशी वस्त्रों तथा अन्य माल की ओर आकर्षित करने का अच्छा साधन मिल जायगा। इन चीज़ों का व्यापार यहाँ घटता जा रहा है, पर इन उपायों से फिर वृद्धि की आशा है। उपर्युक्त विवेचन से हमारा तात्पर्य यह है कि इस नीति के अवलम्बन होने से १६२६ में ब्रिटिश व्यापार को जो ३ प्रतिशत का घाटा उठाना पड़ा है, उसकी इस वृद्धि से पूर्ति हो जायगी।

फ़िज़ी द्वीपों में भी, जहाँ की जन-संख्या १,७७,००० है, ब्रिटिश वस्त्रों की खपत के लिए इन्हीं उपायों से काम लिया जा रहा है। इन फ़िज़ी-निवासियों में ४० प्रतिशत हमारे ही देशवासी हैं। वहाँ की सामाजिक रीतियों को ऐसा बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है, जिसमें विलायती कपड़ों की माँग बढ़े। इस विषय में 'गज़ट' लिखता है कि नर्म वस्त्रों की माँग बढ़ने की आशा की जा सकती है। सुवा (एक मुख्य व्यापारिक केन्द्र) के व्यापारियों को यह याद रखना चाहिए कि वहाँ के निवासी पाश्चात्य ढङ्ग के वस्त्र अधिक पसन्द करने लगे हैं। फ़िज़ी-निवासी सस्ता और थोड़ा कपड़ा इस्तेमाल करते हैं। और यह सम्भव है कि वे अपनी पोशाक को न बदलें। परन्तु ईस्ट इण्डियनों से यह आशा की जाती है कि वे अधिक परिमाण में वस्त्र ख़रीदेंगे। व्यापार की दूसरी चीज़ें—बर्त्तन, कल, हल, लोहे का अन्य सामान, भोज्य पदार्थ, तम्बाकू और सिगरेट आदि हैं। ब्रिटिश माल को वहाँ उच्च स्थान दिया जाता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि फ़िज़ी में १६२६ में ८७·७१ प्रतिशत माल ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत देशों से आया है।

पत्र में ईथोपिया के साथ व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ने की चर्चा भी की गई है—"वहाँ के सम्राट अपने देश को पाश्चात्य सभ्यता के रङ्ग में रँगना चाहते हैं। इस सभ्यता की उन्नति के साथ वहाँ यूरोपीय वस्तुओं की माँग भी बढ़ेगी। इस बात का पता तब लगता है, जब हमें इस बात का ज्ञान होता है कि सन् १६२८ के पहले छः महीनों में वहाँ ब्रिटेन का केवल ६,४६५ पौण्ड का माल गया था, परन्तु सन् १६२६ के उन्हीं महीनों में वहाँ १०,७८४ पौण्ड का, और सन् १६३० में जनवरी से जून तक १४,०६६ पौण्ड का माल भेजा गया।"

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटिश अख़बारों ने ईथोपिया के बादशाह रासतफ़ारी के सिंहासनासीन होते समय अपना प्रेम किस लिए जताया था। गज़ट आगे लिखता है कि—"वह समय बहुत दूर नहीं है, जब वहाँ ब्रिटिश माल का आयात इससे १० गुना अधिक हो जाय; और जब विलायती समाचार-पत्र रासतफ़ारी के सिंहासनासीन होने के अवसर के वैभव के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करें, उस समय उनके देश के साथ विलायती व्यापार का सम्बन्ध जोड़ने के विषय में भी कुछ विचार प्रकट करें।"

दूसरे देशों में

इसी प्रकार के दूसरे उदाहरण ब्रिटिश सोमालीलैण्ड, पनामा और जञ्जीबार हैं।

सोमालीलैण्ड में विलायती कपड़े और चीनी का प्रचार बड़ी तेज़ी से किया जा रहा है। वहाँ से तेल, कोयला और अभरक विलायत को भेजा जाता है। पनामा के विषय में पत्र लिखता है कि "यहाँ 'पनामा कार्पोरेशन' के द्वारा विलायत की भलाई की आशा की जाती है। यहाँ केना और बाराक्स (Baraquas) में खान की खुदाई का काम होता है। कॉफ़ी की उत्पत्ति का काम भी उन्नति कर रहा है। यहाँ की लकड़ियों की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। लकड़ियों के यहाँ बड़े-बड़े जङ्गल हैं, जिनमें महगेनी तथा अन्य मूल्यवान लकड़ी बहुत पाई जाती है। इन व्यापारों के सिवा ऐसे अनेक नए व्यापार हैं, जिनमें पूँजी लगाई जा सकती है। मछली और फल का भी अच्छा व्यापार हो सकता है।"

* * *

ब्रिटिश नेताओं की आँखें खुल गईं !

पार्लामेण्ट में भारत-सम्बन्धी वाद-विवाद

"यदि हमने भारत को राजनैतिक अधिकार न दिए तो उसका क्या परिणाम होगा ? फिर तो केवल दमन के अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय शेष न रहेगा। और यह दमन भी साधारण दमन नहीं है, यह एक ऐसा दमन है, जिससे हमारी आत्मा को ख़ुद ही कष्ट होता है। यह ऐसा दमन है, जिससे हमें न सफलता प्राप्त होगी, न नेकनामी ही हासिल होगी। इसमें हमें भारत की सारी जनता का दमन करना पड़ेगा, जिसमें स्त्रियाँ तथा बच्चे भी शामिल होंगे। इसमें हमें केवल किसी सङ्गठन-विशेष या सङ्घ-विशेष का दमन नहीं, वरन भारत के समस्त जन-समुदाय का दमन करना पड़ेगा। हम भारत को अधिकार देना चाहते हैं, यदि आप भारत में हिमालय से कन्याकुमारी तक अपनी सेनाएँ घुमाने के लिए तैयार हैं, तो हमारे कार्य में बाधा डालिए; यदि आप अपने पशुबल द्वारा केवल मनुष्यों का नहीं, वरन सामयिक मनोवृत्तियों का भी दमन करना चाहते हैं तो हमें आगे बढ़ने से रोकिए।" —रैमज़े मैकडॉनल्ड

भारत को राजनैतिक अधिकार देने के सम्बन्ध में ब्रिटिश पार्लामेण्ट में जो वाद-विवाद हुआ था, उसका कुछ भाग हम पाठकों के लाभार्थ नीचे देते हैं। भारत-सम्बन्धी प्रश्नोत्तरों के बाद प्रधान-मन्त्री ने गोलमेज़ परिषद् के सम्बन्ध में वाद-विवाद आरम्भ किया। उन्होंने कहा :—

"मैं सब से पहिले इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि भारत को अधिकार देने की बात कोई नई नहीं है। भारत को कई बार थोड़े-थोड़े अधिकार दिए जा चुके हैं और इस तरह उसकी शासन-प्रणाली आज इस दशा को पहुँची है। २ नवम्बर, सन् १६०८ के दरबार में भारत के वाइसराय ने सम्राट की घोषणा पढ़ी थी। उसमें निम्न-लिखित वाक्य थे। हम चाहते हैं कि ब्रिटिश पार्लामेण्ट ने भारत को जो स्वराज्य देने का वचन दिया है, वह शीघ्र ही कार्य-रूप धारण करे और भारत को भी अन्य उपनिवेशों की सूची में स्थान दिया जावे।" इस तरह प्रधान-मन्त्री ने और कई घोषणाओं का स्मरण दिलाया, जिसमें इङ्गलैण्ड ने भारत को स्वराज्य देने का वचन दिया था। उसके बाद वे बोले—

"ब्रिटिश सरकार ने जो भारत को अधिकार देने के वचन दिए थे, उन्हीं के अनुसार गोलमेज़ परिषद् की बैठक हुई। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ विशेष कारणों से हमें परिषद् के कार्यक्रम में परिवर्तन करना पड़ा। परन्तु इस परिषद् की सफलता के लिए ये अति आवश्यक थे। इस परिषद् के सम्बन्ध में हमने जो बातें निश्चय कीं, उनके परिवर्तन करने के कई कारण थे। भारत में ऐसा आन्दोलन उठ रहा था और उसकी राजनैतिक दशा में इतना परिवर्तन हो रहा था कि हमें अपना कार्यक्रम भी बदलना पड़ा।

"आगे बढ़ने के पहिले मैं यह कहना चाहूँगा कि आज इङ्गलैण्ड के सब दलों के नेता भारत के उन स्त्री तथा पुरुषों के आभारी हैं, जो कि परिषद् के कार्य में भाग लेने के लिए आए थे। इस परिषद् की बैठक भारत की भावी शासन-प्रणाली के मूल सिद्धान्तों का निर्णय करने के उद्देश्य से की गई थी। और इस थोड़े से समय में हमने लगभग सारी बातें तय कर ली हैं। इस परिषद् में हमें सब से पहिले केन्द्रीय शासन में अधिकार देने की समस्या का सामना करना पड़ा। परिषद् की पहली ही बैठक के बाद मैं समझ गया कि यदि भारत की रियासतें भी भारत का साथ छोड़ दें, तब भी हमें केन्द्रीय शासन में भारतीयों को अधिकार देने पड़ेंगे। इसके बिना कोई भी काम सिद्ध नहीं हो सकता था। और इसी-लिए हम लोगों ने इस विषय में कुछ अधिकार देना निश्चय किया है।

* * *

"हम लोगों ने (इस परिषद् में) मूल सिद्धान्त निश्चित कर लिए हैं और इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप लोगों की स्वीकृति से मैं इन सिद्धान्तों पर भारत की भावी शासन-प्रणाली का निर्माण करूँ।

"यदि हमने भारत को राजनैतिक अधिकार न दिए, तो उसका क्या परिणाम होगा। फिर तो दमन के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय शेष न रहेगा। और यह दमन भी साधारण दमन नहीं है। यह एक ऐसा दमन है, जिससे हमारी आत्मा को ख़ुद ही कष्ट होता है। यह ऐसा है, जिससे हमें न सफलता प्राप्त होगी, न नेकनामी ही हासिल होगी। इसमें हमें भारत की सारी जनता पर दमन करना पड़ेगा, जिसमें स्त्रियाँ और बच्चे भी शामिल होंगे। हम भारत को अधिकार देना चाहते हैं। यदि आप भारत में हिमालय से कन्याकुमारी तक अपनी सेनाए घुमाने के लिए तैयार हैं, तो हमारे कार्य में बाधा डालिए, यदि आप अपने पशुबल द्वारा केवल मनुष्यों का नहीं, वरन सामयिक मनोवृत्तियों का भी दमन करना चाहते हैं, तो हमें आगे बढ़ने से रोकिए।"

इसके बाद और दल के नेताओं ने इस वाद-विवाद में भाग लिया। लिबरल दल की ओर से मिस्टर आइज़क फ़ूट ने तथा कन्ज़रवेटिव दल की ओर से मिस्टर बाल्डविन ने अपने वक्तव्य दिए, जिसमें उन्होंने गोलमेज़ परिषद् के कार्य की सहायता करने का वचन दिया। इसी बीच में भारतीय स्वराज्य की माँग के कट्टर शत्रु मिस्टर विन्स्टन चर्चिल ने अपना भाषण दिया। उसमें उन्होंने कहा कि गत १८ महीनों में भारत के सम्बन्ध में जो सुलह की नीति का अनुसरण किया गया है, उसके लिए इङ्गलैण्ड को बाद में बहुत पछताना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मज़दूर सरकार ने साइमन रिपोर्ट ताक में रखदी और भारत के विद्रोहियों को ख़ुश करने की आशा से साइमन कमीशन के सदस्यों को गोलमेज़ परिषद् में सम्मिलित नहीं किया। इसके बाद गोलमेज़ परिषद् की बैठक हुई, जिसमें उन्होंने ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया जिसकी साल भर पहिले हम सबने कभी कल्पना भी न की थी।

इसके उत्तर में भारत-मन्त्री मिस्टर वेजवुड बेन ने अपना भाषण दिया। उन्होंने कहा :—

"मैंने मि० चर्चिल के भाषण को बहुत दत्त-चित्त होकर सुना और उत्तर देने के उद्देश्य से नोट भी लिए हैं। उनके आज के भाषण का सार यह है। वे कहते हैं कि भारत की भावी शासन-प्रणाली में हिन्दुस्तानियों को केन्द्रीय शासन का अधिकार न दिया जावे। इसके विरुद्ध में सब से पहिली युक्ति तो यह है कि यदि हम भारतवासियों को यह अधिकार न देंगे, तो अपने बार-बार दिए हुए वचनों को तोड़ेंगे। भारतीयों को केन्द्रीय शासन का अधिकार देने का दूसरा कारण यह है कि इस साल भारत में जो आन्दोलन उठा है, उसमें पशुबल से काम नहीं लिया गया है। पशुबल या सत्ता का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। सत्ता तथा शक्ति की हमारे पास कभी कमी नहीं थी। हमारे पास पुलिस तथा सेना हैं। भारतीय आन्दोलन का उद्देश्य भारत की जनता की सहानुभूति को अपनी ओर खींचने का है। जनता की सहानुभूति के बिना कोई भी सत्ता क़ायम नहीं रह सकती। सैनिक शक्ति से तो उलटा ही असर पड़ता है। जनता की इच्छा के विरुद्ध जितना ही पशुबल लगाया जावेगा, उतनी ही सरकार के प्रति घृणा पैदा होगी। इसके विरोध में मिस्टर चर्चिल कहेंगे कि भारत की अधिकतर जनता राजभक्त तथा सन्तुष्ट है। इस आन्दोलन में केवल मुट्ठी भर शिक्षित हिन्दुस्तानी सम्मिलित हैं। यह कहाँ तक सच है ? ५० वर्ष पूर्व यह सच हो सकता था। परन्तु आज क्या हम इस आन्दोलन का तिरस्कार कर सकते हैं ? क्या हम यह भूल सकते हैं कि वह प्रतिदिन प्रचण्ड रूप धारण कर रहा है ? जो मनुष्य भारत के विषय में ज़रा भी ज्ञान रखते हैं, वे जानते हैं कि भारत के युवकों की राष्ट्रीय आन्दोलन से बहुत सहानुभूति है। भारत की भावी जनता की माताएँ इस आन्दोलन की सहायता कर रही हैं। जो राजनीतिज्ञ इस भावी सन्तान की ख़्याल नहीं करता है, वह बहुत बड़ी अदूरदर्शिता का परिचय देता है। इस आन्दोलन में एक और ख़ास बात यह है कि भारत के व्यापारी तथा धनपति इसमें बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं। सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि भारत की महिलाएँ भारत के इस आन्दोलन में बहुत बड़ा भाग ले रही हैं। इनमें से बहुत सी तो आज जेल में हैं। भारत में रहने वाली यूरोपियन जनता का भी यह मत है कि यह केवल मुट्ठी भर बाग़ियों का आन्दोलन नहीं है। इस आन्दोलन ने अपनी विशाल लहर से भारत की सारी जातियों को ढँक दिया है। भारत का आन्दोलन आज बहुत आश्चर्यजनक गति से बढ़ रहा है। यहाँ तक कि गोलमेज़-परिषद् का प्रत्येक सदस्य यह कहता था कि "हमें हिन्दुस्तान छोड़े १० सप्ताह हो गए हैं और इस समय हम यह ठीक नहीं कह सकते कि भारत की वास्तविक दशा क्या है।

"इसलिए हमें भविष्य में दो बातों का ख़्याल रखना चाहिए। इनमें से एक तो सचाई है और दूसरी शीघ्रता। गोलमेज़ द्वारा हमने भारत तथा इङ्गलैण्ड के बीच में विश्वास तथा प्रेम का बीज बोया है। गोलमेज़-परिषद् के कार्य को सफल बना कर हम इस नवाङ्कुरित पौधे को सुदृढ़ बनावेंगे। इसके लिए शीघ्रता की आवश्यकता है। देर करने से क्या लाभ हो सकता है ? यदि हमें भारत को स्वराज्य देने के योग्य बनाना है, तो यह कार्य जितनी शीघ्रता से हो, पूर्ण करना चाहिए। देर करके ही गए वर्षों में हमने बहुत हानि उठाई है। ३० वर्ष पहिले जो व्यक्ति हमारे सबसे बड़े मित्र, थे वही आज हमारे सबसे बड़े विरोधियों में हैं। दक्षिण अफ़्रिका के युद्ध में गाँधी ने घायलों की सेवा की थी और धन तथा मनुष्यों द्वारा हमें सहायता पहुँचाई थी। परन्तु देर करके हम लोगों को आज कितनी हानि उठानी पड़ रही है। इसलिए इस विषय में सचाई के अतिरिक्त शीघ्रता की आवश्यकता है।"

भारत-मन्त्री के भाषण के बाद वाद-विवाद का अन्त हुआ।

* * *

कमला के पत्र

यह पुस्तक 'कमला' नामक एक शिक्षित मद्रासी महिला के द्वारा अपने पति के पास लिखे हुए पत्रों का हिन्दी-अनुवाद है। इन गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण एवं अमूल्य पत्रों का मराठी, बँगला तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत पहले अनुवाद हो चुका है। पर आज तक हिन्दी-संसार को इन पत्रों के पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला था।

इन पत्रों में कुछ को छोड़, प्रायः सभी पत्र सामाजिक प्रथाओं एवं साधारण घरेलू चर्चाओं से परिपूर्ण हैं। उन पर साधारण चर्चाओं में भी जिस मार्मिक ढङ्ग से रमणी-हृदय का अनन्त प्रणय, उसकी विश्व-व्यापी महानता, उसका उज्ज्वल पति-भाव और प्रणय-पथ में उसकी अक्षय साधना की पुनीत प्रतिमा चित्रित की गई है, उसे पढ़ते ही आँखें भर जाती हैं और हृदय-वीणा के अत्यन्त कोमल तार एक अनियन्त्रित गति से बज उठते हैं। अनुवाद बहुत सुन्दर किया गया है। मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों के लिए २।) मात्र !

घरेलू चिकित्सा

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में बड़े-बड़े नामी डॉक्टरों, वैद्यों और अनुभवी बड़े-बूढ़ों द्वारा लिखे गए हज़ारों अनमोल नुस्ख़े प्रकाशित हुए हैं, जिनसे सर्व-साधारण का बहुत-कुछ मङ्गल हुआ है, और जनता ने इन नुस्ख़ों की सचाई तथा उनके प्रयोग से होने वाले लाभ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। सब से बड़ी बात इन नुस्ख़ों में यह है कि पैसे-पाई अथवा घर के मसालों द्वारा बड़ी आसानी से तैयार होकर अजीब गुण दिखलाते हैं। इनके द्वारा आए-दिन डॉक्टरों की भेंट किए जाने वाले सैकड़ों रुपए बचाए जा सकते हैं। इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ को अपने यहाँ रखनी चाहिए। स्त्रियों के लिए तो यह पुस्तक बहुत ही काम की वस्तु है। एक बार इसका अवलोकन अवश्य कीजिए। छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम और सुन्दर। मोटे चिकने काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य लागतमात्र केवल ॥) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से ।-) मात्र !

शैलकुमारी

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ़० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं, और किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से घृणा हो जाती है ! मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इसे एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। मूल्य केवल १॥)

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉलस्टॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी-अनुवाद है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्पकाल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूरों में सम्मिलित होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एक मात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित्त भी करना चाहिए—ये सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। मूल्य ४) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

उमासुन्दरी

इस पुस्तक में पुरुष-समाज की विषय-वासना, अन्याय तथा भारतीय रमणियों के स्वार्थ-त्याग और पतिव्रत का ऐसा सुन्दर और मनोहर वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। सुन्दरी सुशीला का अपने पति सतीश पर अगाध प्रेम एवं विश्वास, उसके विपरीत सतीश बाबू का उमासुन्दरी नामक युवती पर मुग्ध हो जाना, उमासुन्दरी का अनुचित सम्बन्ध होते हुए भी सतीश को कुमार्ग से बचाना और उपदेश देकर उसे सन्मार्ग पर लाना आदि सुन्दर और शिक्षाप्रद घटनाओं को पढ़ कर हृदय उमड़ पड़ता है। इतना ही नहीं, इसमें हिन्दू-समाज की स्वार्थपरता, बर्बरता, काम-लोलुपता, विषय-वासना तथा रूढ़ियों से भरी अनेक कुरीतियों का हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पुस्तक समाज-सुधार के लिए पथ-प्रदर्शक है। छपाई-सफ़ाई सब सुन्दर है। मूल्य केवल ॥) आने स्थायी ग्राहकों के लिए ।-)॥ पुस्तक दूसरी बार छप कर तैयार है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

कहिए, कैसे मिज़ाज हैं ? आख़िर ज़मानत देनी ही पड़ी न ? और न लिखो मुख्य लेख और टिप्पणियाँ ! आप समझते थे कि इनका बॉयकॉट कर देने से ज़मानत आपसे असहयोग किए रहेगी । परन्तु यह पता नहीं था कि ज़मानत माँगने वाले आपके भी उस्ताद हैं । ज़मानत के लिए वह बीस तरह के स्वाँग ला सकते हैं । लोग तो रुपए आठ आने के लिए पचासों तरह के स्वाँग लाते हैं, फिर जहाँ सैकड़ों का मामला हो वहाँ कौन चूक सकता है ? और कुछ नहीं मिला तो सत्याग्रहियों के फ़ोटो ही की बात ढूँढ़ निकाली । क़ुर्बान जाऊँ इस सूझ के ! वाक़ई ख़ूब सूझी ! सत्याग्रहियों के फ़ोटो छापना और सनसनीदार शीर्षक देना तो बहुत ही बड़ी भारी बुरी बात है ! इससे लोगों में स्पर्धा का भाव कुम्भकर्ण की भाँति जाग्रत हो उठता है । सत्याग्रहियों के फ़ोटो देख कर कई बार अपने राम के भी जी में आया कि यदि हम भी कोई ऐसा ही काम करते तो हमारा भी फ़ोटो छपता । यह इच्छा इतनी प्रबल हो उठी थी कि एक दिन रात को यह निश्चय कर लिया था कि कल सबेरे से कोई न कोई उत्पात अवश्य आरम्भ करेंगे—बला से परिणाम चाहे जो हो, परन्तु फ़ोटो तो छप जायगा । ग़नीमत इतनी ही हुई कि निश्चय विजया भवानी की गोद में लेट कर किया था, इससे सबेरा होते ही रात की सब बातें भूल गईं—अन्यथा भगवान जाने क्या कर बैठते ! सो जनाब, अपने राम की तरह सब लोग विजया के उपासक नहीं हैं, जो सबेरा होते ही रात की बातें भूल जायँ । अतएव अधिकांश लोग तो फ़ोटो छपाने के लिए सब कुछ करने को तैयार हो सकते हैं । इसलिए फ़ोटो छापना मानो बग़ावत फैलाना है व लोगों को इस बात का निमन्त्रण देना है कि—"भाइयो, तुम भी कुछ ऐसा ही काम करो तो तुम्हारा भी फ़ोटो छापा जाय ।" ओफ़ ! ओह ! कितना बड़ा प्रलोभन है । उस पर सनसनीपूर्ण शीर्षक तो और भी ग़ज़ब ढाते हैं । उनके पढ़ने से पाठकों को यह भ्रम होता है कि देश भर में आग लगी हुई है । हालाँकि कि कहीं कुछ नहीं है । सब ओर शान्ति का साम्राज्य है ।

सम्पादक जी, मेरी सलाह तो यह है कि आप सत्याग्रह, गिरफ़्तारी, गोली तथा लाठी-काण्ड के समाचार छापना ही बन्द कर दीजिए । आप जब छापिए तब यही छापिए कि—"अमुकों ने माफ़ी माँग ली, अमुक स्थान पर लोगों ने विदेशी वस्त्र बेचना आरम्भ कर दिया, अमुक स्थान के लोग स्वराज्य नहीं माँग रहे हैं—जो माँग भी रहे हैं, वे बेवक़ूफ़ हैं, अमुक स्थान पर पुलिस ने बड़ी सभ्यता की, हालाँकि गोली चलाना आवश्यक था, परन्तु उसने केवल लाठी चलाई ।" यदि आप ऐसा करने लगें तो थोड़े ही दिनों में "ज़मानत प्रूफ़" हो जाएँगे । सरकार के विरुद्ध जो बात हो, उस पर कभी विश्वास ही न कीजिए । अपनी आँखों से भी देख लीजिए, तब भी विश्वास न कीजिए ! क्योंकि वह सब माया का खेल है, उसमें कुछ भी सार नहीं है । अनित्य और असार वस्तु पर विश्वास करना अज्ञानियों का काम है । नित्य तथा सारयुक्त केवल वे बातें हैं, जो सरकार के लाभ की हैं । उन पर बिना सोचे-समझे, आँखें बन्द करके विश्वास कर लीजिए । क्यों, है न सलाह की बात ? जो माया में फँसता है, वही दुख उठाता है । इस बात को मत भूलिए—यह ज्ञानियों का वाक्य है ।

अच्छा ख़ैर, जो हुआ सो हुआ ; अब यह बताइए कि प्रधान-मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड की स्पीच की बाबत आपकी क्या राय है ? भई, कोई चाहे माने या न माने, परन्तु अपने राम तो बिना यह कहे नहीं रह सकते कि प्रधान-मन्त्री साहब हैं बड़े बुद्धिमान ! वल्लाह, क्या आसानी से मामले को सुलझाया है । वह जो

आर्यमित्र

पिछले तीन महीनों से 'भविष्य' नामक सचित्र साप्ताहिक समाचार-पत्र बड़ी उत्तमता से प्रकाशित हो रहा है । इसमें प्रति सप्ताह लगभग २० चित्र और कितने ही गद्य-पद्यात्मक लेख रहते हैं । कथा-कहानी और विनोद की मात्रा भी उचित मात्रा में दी जाती है । देश-विदेश के प्रायः समस्त समाचारों का सुन्दर और सुव्यवस्थित संग्रह देख कर तबियत ख़ुश हो जाती है । 'भविष्य' की प्रत्येक प्रति सिली और कटी हुई होती है । छपाई और काग़ज़ भी अच्छे हैं । हिन्दी में 'भविष्य' अपने ढङ्ग का निराला है । ऐसा अच्छा पत्र प्रकाशित करने पर सहगल साहब हिन्दी-जगत् के बधाई-पात्र हैं । 'भविष्य' में उर्दू कविता को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है, उर्दू कवियों के चित्र भी ख़ूब दिए जाते हैं, यह अच्छी बात है, हिन्दी पाठकों को उर्दू शायरों से भी वाक़फ़ियत हो जायगी । परन्तु उर्दू के आवेश में हिन्दी कविता और हिन्दी कवियों को गौण स्थान देने की आवश्यकता नहीं है, इस पर सम्पादक जी का पूरा ध्यान रहना चाहिए । 'भविष्य' का वार्षिक चन्दा ५) कुछ अधिक नहीं है, क्योंकि इसको उपयोगी और अच्छा बनाने में व्यय भी बहुत करना पड़ता है । हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि 'भविष्य' का भविष्य उज्ज्वल हो और वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जाय ।

कहावत है कि—"भइया घर-द्वार तुम्हारा, परन्तु कोठी-कोठले को हाथ मत लगाना ।" आख़िर प्रधान-मन्त्री ठहरे—ऐसे न होते तो प्रधान-मन्त्रित्व कैसे प्राप्त होता ! अब गोलमेज़ के प्रतिनिधि वहाँ से पुकारते हुए चले आ रहे हैं कि "भाइयो, अभी कोई राय क़ायम न करना, पहले हमें आ जाने दो, हमसे भली-भाँति समझ-बूझ लो तब कुछ कहना ।" वह जो समझावेंगे वह अपने राम पहले ही समझे बैठे हैं । वह यही कहेंगे कि "जो कुछ मिलता हो ले लो, आगे चल कर देखा जायगा । इतना भी बड़ी मुसीबतों से मिला है । बड़ा परिश्रम पड़ा है । बड़ी बहसें कीं, बड़ा प्रोपेगेण्डा किया, तब जाकर इतने पर मामला तय हो रहा है । अतएव अब हमारा परिश्रम व्यर्थ न करो ।" अपने राम की भी यही राय है, कि इन लोगों का परिश्रम बिल्कुल भी व्यर्थ न किया जाय, जो कुछ बेचारे माँग-जाँच और रो-धोकर लाए हैं, उसे स्वीकार कर लिया जाय । यद्यपि ऐसा होना कठिन दिखलाई पड़ रहा है ; क्योंकि बिना महात्मा जी की ग्यारह शर्तें पूरी हुए, समझौता होना कठिन है । उधर नौकरशाही भी इस बात की सरतोड़ चेष्टा कर रही है कि यह मामला लीडरों की लपझपी तक ही परिमित रहे—आगे न बढ़े । यदि ऐसी बात न होती तो जनाब, यह कदापि न होता कि एक ओर तो प्रधान-मन्त्री महोदय मेल-मिलाप की बातें करें और दूसरी ओर नौकरशाही गिरफ़्तारियों और लाठीकाण्ड की मशीन चलाती रहे । बेचारे लॉर्ड इर्विन भी परेशान होंगे कि अच्छी छीछालेदर में फँसे । न जाने किस पाप-ग्रह की दशा लगी हुई है । किसी तरह इससे शीघ्र छुटकारा मिले । सो जनाब, उनकी ग्रह-दशा तो समाप्त हो रही है—अब यह देखना है कि नए वायसराय महोदय क्या रङ्ग लाते हैं । हालाँकि मशहूर तो ऐसा है कि नौकरशाही नमक की खान है—इसमें जो आता है, नमक ही बन जाता है । बेचारे लॉर्ड इर्विन इतने सीधे, इतने सज्जन हैं कि जब मुँह खोलते हैं, तो हिन्दुस्तान की भलाई का ही स्वर निकलता है, परन्तु नौकरशाही ने उन्हें भी ऐसा ख़राद पर चढ़ाया कि उनके हृदय और कार्य में छत्तीस का योग पड़ गया । हृदय कुछ कहता है, परन्तु करना कुछ पड़ता है । ख़ैर जी, पहुँचने तो दो ज़रा होम में, सारी कसर निकालेंगे । हालाँकि नौकरशाही वह मस्त हाथी है कि कोई कुछ बके, कुछ भूँके, परन्तु यह अपनी मस्तानी चाल नहीं छोड़ती । किसी ने ख़ूब कहा है कि "Viceroys may come and Viceroys may go, but beaurocracy goes on for ever." इस नौकरशाही से छुटकारा मिले तभी असली स्वराज्य स्थापित हो सकता है । सम्पादक जी, आप चाहे मानें या न मानें, परन्तु अपने राम का तो यह विश्वास है कि जहाँ तक हो सकेगा, नौकरशाही यही कोशिश करेगी कि कोई समझौता न हो । इङ्गलैण्ड में तो मि० चर्चिल की मिट्टी पलीद हो ही गई । वह भी बहुत रोड़े अटका रहे थे । फ़र्माते थे कि हिन्दुस्तान को कुछ न दिया जाय, परन्तु वह तो टायँ-टायँ फ़िश हो गए । आपस ही में मतभेद हो गया । पता नहीं, यह मतभेद सच्चा है या यह भी कोई मिली-भक्ति की पॉलिसी है । हालाँकि पॉलिसी होने का कोई स्पष्ट चिन्ह नहीं है, परन्तु मायावियों से डर ही लगता है, न जाने कब काशी-करवट ले जायँ । फ़िलहाल तो दयालु से हो रहे हैं । मि० बाल्डविन भी हिन्दुस्तान की जय मना रहे हैं—मि० मैकडॉनल्ड भी नेकनीयती दिखला रहे हैं । मि० बेन भी हिन्दुस्तान के लिए लड़ मरने को तैयार हैं । परन्तु वर्किङ्ग-कमिटी की शर्तें पेश होने पर भी यह नेकनीयती क़ायम रहे तब तो ठीक है, अन्यथा वही छः टके का बैल रह जायगा । इधर रुपया माँगा जा रहा है, उधर से चवन्नी-छिवन्नी दिखाई जा रही है । ऐसी दशा में मामला तय हो जाना एक सन्देह की बात मालूम होती है । ख़ैर, इतना भी क्या थोड़ा है । दिमाग़ कुछ ठिकाने तो आया । पहले तो पुट्ठे पर हाथ ही नहीं धरने देते थे । जब तबेले में से मि० चर्चिल जैसे लतियल रस्सियाँ तुड़ा कर निकल गए, तो अब बचे हुए थान के टर्रे कहाँ तक दुलत्तियाँ फटकारेंगे—कुछ अगाड़ी-पिछाड़ी का और कुछ अपने रातिब का ध्यान तो होगा ही । ख़ैर—आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

इस्लाम का प्रारम्भिक इतिहास

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

सन् ५७१ ईस्वी की गर्मी के दिनों में शहर बसरा में ऊँटों पर सवार एक क़ाफ़िला आया। वह मक्का से आया था और सुखी अरब के दक्षिण प्रदेश की पैदा हुई वस्तुओं से लदा हुआ था। इस क़ाफ़िले का सरदार अबूतालिब और उसका १२ वर्ष का भतीजा था। बसरे के नेस्टर धर्मावलम्बी मठ की ओर से उनका आतिथ्य किया गया।

मठ के संन्यासियों को जब मालूम हुआ कि उनका १२ वर्ष का बालक अतिथि अरब के प्रसिद्ध पवित्र मन्दिर काबा के रक्षक का भतीजा है, तो उन्होंने अपने धर्म की प्रशंसा और मूर्त्ति-पूजा की निन्दा उस बालक के हृदय में प्रवेश कराई। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि बालक असाधारण बुद्धिमान और नवीन ज्ञान का उत्सुक है। ख़ास कर धर्म-सम्बन्धी विवाद में उसका बहुत मन लगता है।

इस बालक का नाम मुहम्मद था। महामक्का में उस समय एक काला पत्थर पूजा जाता था, जो उल्कोद्भव था। वह काबा में रक्खा हुआ था और उसके साथ ३६० अन्य मूर्त्तियाँ थीं, जो वर्ष भर के दिनों की सूचक थीं। क्योंकि उस समय साल के दिन योंही गिने जाते थे।

यह वह समय था, जब कि ईसाई धार्मिक समूह अपने पादरियों की दुष्टता और ऐश्वर्य-तृष्णा के कारण अराजकता की दशा को पहुँच चुका था। पश्चिमी देशों के पोप लोग धन, विलास और शक्ति के ऐसे प्रलोभन देते थे कि बिशप लोगों के चुनाव में भयङ्कर वध करने पड़ते थे। पूर्वीय देशों में क़ुस्तुन्तुनिया इन धर्मान्ध झगड़ों का केन्द्र था, जहाँ अनेक पन्थ और दल बन गए थे।

ये लोग परस्पर अत्यन्त घृणा-भाव रखते थे। अरब उन दिनों स्वतन्त्रता की अपरिचित भूमि थी, जो भारत-सागर से लेकर शाम देश के मरुस्थल तक फैली हुई थी। यह इन भगोड़ों और झगड़ालू ईसाइयों का आश्रय-स्थल हो रहा था। अरब के मरुस्थल ईसाई संन्यासियों से भर गए थे और वहाँ के बहुतेरे लोगों ने उनके पन्थ को स्वीकार कर लिया था। हबश देश के ईसाई राजे, जो नेस्टर धर्म को मानते थे, अरब के दक्षिणी प्रान्त यमन पर अधिकार रखते थे।

अरब एशिया के दक्षिण-पश्चिम कोण पर एक मरुस्थल है। इसकी लम्बाई १,४०० मील और चौड़ाई ७०० मील है। जन-संख्या ५० लाख के लगभग है। देश भर में पहाड़-पहाड़ी, ऊजड़-जङ्गल और रेत के टीले हैं। जल का भारी अभाव है। खजूर ही इस देश की न्यामत है। अधिकांश अरबवासी, जिन्हें ख़ानाबदोश कहते हैं, किसी पहाड़ी नाले के पास ठहर जाते हैं और जब चारा-पानी का सहारा नहीं रहता तो अन्यत्र चल देते हैं। इस देश में गर्मी इतनी पड़ती है कि दोपहर के समय हिरन अन्धा हो जाता है। आँधियाँ ऐसी आती हैं कि बालू के टीले के टीले इधर से उधर उड़ जाते हैं। यदि यात्रियों का कोई समूह इनके चपेट में आ गया तो उसकी ख़ैर नहीं। कहीं-कहीं सर्दी भी बड़े कड़ाके की पड़ती है। सर्दी में वर्षा भी होती है। यही वर्षा का जल नालों और गड्ढों में सञ्चित करके पिया जाता है।

अरब के घोड़े संसार में प्रख्यात हैं। यह पशु पथरीले स्थान पर बड़ा काम आता है, पर रेतीले भागों के काम की चीज़ तो ऊँट है। यह न केवल सवारी के काम आता है, प्रत्युत इसका मांस और दूध भी बहुतायत से काम में लाया जाता है। लोग खजूर का गूदा स्वयं खाते और गुठली ऊँटों को खिलाते हैं। अधिकांश लोग लूट-मार पर जीवन व्यतीत करते हैं। अब उनकी दशा में कुछ परिवर्तन हो गया है।

बसरा नगर के नेस्टर मठ के महन्त वहीरा ने मुहम्मद को नेस्टर मत के सिद्धान्त सिखाए। इस विद्वान संन्यासी के सदुपदेश से मुहम्मद के मन में मूर्त्ति-पूजा से घोर घृणा हो गई।

जब मुहम्मद मक्का लौटा, तो वह उन्हीं ईसाई संन्यासियों की भाँति जङ्गल में कुटी बना कर रहने को, हीरा नामक पहाड़ी की एक गुफ़ा में, जो मक्का से कुछ मीलों के अन्तर पर थी, चला गया और ध्यान तथा प्रार्थना में लग गया। उस एकान्त विचार से उसने एक सिद्धान्त निकाला, अर्थात् ईश्वर की अद्वैतता। एक खजूर के वृक्ष की पीठ से टिक कर उसने इस विषय के विचार अपने मित्रों और पड़ोसियों को सुनाए और यह भी कह दिया कि इसी सिद्धान्त के प्रचार में मैं अपना सारा जीवन दूँगा। उस समय से मृत्यु तक उसने अपनी उँगली में एक अँगूठी पहनी, जिस पर ख़ुदा था—'मुहम्मद ईश्वर का दूत।' बहुत दिनों तक उपवास और एकान्त-वास करने तथा मानसिक चिन्ता से अवश्य मतिभ्रम हो जाता है। यह वैद्य लोग भली-भाँति जानते हैं। मुहम्मद को प्रायः अन्तरिक्ष वाणियाँ सुनाई पड़ती थीं। फ़िरिश्ते उसके सामने आते थे। एक दिन स्वप्न में जिबराइल नाम का फ़िरिश्ता उसे अपने साथ आकाश पर ले गया, जहाँ मुहम्मद निर्भय उस भयङ्कर घटा में चला गया, जो सदैव सर्व-शक्तिमान ईश्वर को छिपाए रहती है। ईश्वर का ठण्डा हाथ उसके कन्धे पर छू जाने से उसका चित्त काँपा।

शुरू में उसके उपदेश का बहुत विरोध हुआ और उसे कुछ भी सफलता न हुई। मूर्त्ति-पूजकों ने उसे मक्का से निकाल दिया। तब उसने मदीने में, जहाँ बहुत से यहूदी और नेस्टर पन्थ वाले रहते थे, शरण ली। नेस्टर पन्थी तुरन्त उसके मतावलम्बी हो गए। ६ वर्षों में उसने केवल १,५०० चेले बनाए। परन्तु तीन छोटी लड़ाइयों में उसने जान लिया कि उसका अत्यन्त विश्वासप्रद तर्क उसकी तलवार है। यह तीनों छोटी लड़ाइयाँ पीछे से बीडर, ओहूद, और नशाम्स के बड़े युद्ध प्रख्यात किए गए। उसके बाद मुहम्मद बहुधा कहा करता था कि 'बिहिश्त तलवार के साए के नीचे पाया जायगा।'

कई एक उत्तम आक्रमणों द्वारा उसने अपने शत्रुओं को पूर्ण रूप से पराजित किया। अरब की मूर्त्ति-पूजा जड़ से नष्ट हो गई और यह भी मान लिया गया कि वह ईश्वर का दूत है।

जब वह शक्ति और ख्याति की पराकाष्ठा को पहुँचा, तब वह अन्तिम बार मक्का से मदीना की ओर गया। उसके साथ एक लाख, चौदह हज़ार भक्त फूलों और गजरों से सजे हुए ऊँटों पर फहराते झण्डे लिए हुए चले। जब वह नगर के निकट पहुँचा तब उसने यह शब्द कहे—"हे ईश्वर! मैं यहाँ तेरी सेवा के लिए हाज़िर हूँ। तेरे बराबर कोई दूसरा नहीं, केवल तू ही पूजने योग्य है। केवल तू ही सबका राजा है; उसमें तेरा कोई साझी नहीं।"

अपने हाथों से उसने ऊँटों का बलिदान किया, काबा के व्याख्यान-पीठ से उच्च स्वर से कहा—"श्रोतागण, मैं केवल तुम्हारे ही समान एक मनुष्य हूँ।" एक मनुष्य से, जो डरते-डरते उसके पास आया, कहा—"तुम किस बात से डरते हो, मैं कोई अलौकिक नहीं हूँ। मैं एक अरब-निवासी स्त्री का पुत्र हूँ, जो धूप में सुखाया हुआ मांस खाती थी।"

वह मदीने में मरा। मृत्यु-कष्ट के समय उसका सिर आयशा की गोद में था। वह बार-बार पानी के बर्तन में अपने हाथ डुबोता था और अपने चेहरे को तर करता था। अन्त में उसका दम टूटा। उसने आकाश की ओर टकटकी लगाए हुए टूटे-फूटे शब्दों में कहा—"हे ईश्वर, मेरे पाप क्षमा कर। एवमस्तु। मैं आता हूँ।"

मृत्यु के समय उसकी आयु ६३ वर्ष की थी। उसने अपने अन्तिम दस वर्षों में २४ युद्ध स्वयं सेनापतित्व में तथा ५-६ दूसरों की अधीनता में कराए। तथा कुल १ लाख, १४ हज़ार स्त्री-पुरुषों को मुसलमान बनाया। मृत्यु के समय उसके सम्बन्धियों में ४ पुत्रियाँ, ४ पुत्र, ८ बाँदियाँ, १८ स्त्रियाँ, २ दाइयाँ, ५ भाई, २ बहिन, ६ फूफियाँ, १२ चचा, ४० लेखक, ५८ दास, १६ सेविकाएँ, २७ सेवक, ८ द्वारपाल, ८ वकील, १५ बाँगी, ४ कविता करने वाली स्त्रियाँ और १६६ कवि थे।

सम्पत्ति में १ सिंहासन, अनेक लाठियाँ, २ पताकाएँ, ६ धनुष, ४ भाले, ३ ढालें, ३ किरीट, ७ कवच, १० तलवारें, अनेक वस्त्र, ७ भेड़ें, २१ ऊँटनियाँ, ३ गधे, ६ ख़च्चर, २० उम्दा घोड़े, ७ प्याले, १ सिंगार का डब्बा और १ तकिया थी।

मृत्यु के समय वह सीरिया और फ़ारस के विजय की तैयारी कर चुका था। उसके मरने पर आयशा का पिता अबूबकर उसका उत्तराधिकारी चुना गया। वह पहला ख़लीफ़ा स्वीकार किया गया। उसने ख़लीफ़ा होते ही ये आज्ञाएँ प्रचलित कीं :—

"अत्यन्त कृपालु ईश्वर के नाम से प्रारम्भ करता हूँ। अबूबकर शेष सब मुसलमानों को तन्दुरुस्ती और ख़ुशी की दुआ देता है। ईश्वर तुम पर दया करे और तुम्हें आनन्द में रक्खे। मैं ईश्वर की प्रशंसा करता हूँ। इस राजाज्ञा द्वारा तुमको सूचना दी जाती है कि मैं सच्चे मुसलमानों को सीरिया देश में भेजना चाहता हूँ कि वे जाकर उसे काफ़िरों के हाथ से छीन लें, और मैं जानना चाहता हूँ कि धर्म के वास्ते लड़ना मानो ईश्वरीय आज्ञा मानना है।"

सेनापति ख़लीद इब्न ने सीरिया को फ़तह किया। मूर्तिपूजकों के प्रति अति उग्र क्रोध उसके मन में था। वह कहा करता था—"मैं उस ईश्वर-निन्दक मूर्तिपूजकों की खोपड़ी चीर डालूँगा, जो ऐसा कहता है कि अत्यन्त पवित्र सर्व-शक्तिमान ईश्वर ने पुत्र उत्पन्न किया है।"

उसने १० हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर 'हीरा' नगर पर आक्रमण किया और वहाँ के ईसाई बादशाह को मार गिराया। बादशाह के मरने पर नगर-वासियों ने

आगामी अङ्क से—

हास्य-रस के सफल-लेखक श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी० महोदय की "क़ानूनीमल की बहस" शीर्षक हास्य-रस की बड़ी सुन्दर रचना धारावाही रूप से 'भविष्य' में प्रकाशित होगी! पाठकों को शीघ्र ही, या तो ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए अथवा स्थानीय एजेण्ट के पास अपना ऑर्डर नोट करा देना चाहिए, नहीं तो "भविष्य" का मिलना सहज नहीं है। गत सप्ताह पूरे १,५०० ग्राहकों एवं एजेण्टों को हताश होना पड़ा था।

७० हज़ार मुहरें वार्षिक कर मुसलमानों को देना स्वीकार किया। इस नगर पर अधिकार कर, उसने फ़िरात नदी पर छावनी डाली और ईरान के बादशाह को लिखा कि या तो मुहम्मदी कल्मा पढ़ो या 'जज़िया' दो। परन्तु सेनापति यज़ीद ने उसे तत्काल बसरे की चढ़ाई में योग देने को बुला भेजा। क्योंकि शाम देश का बादशाह हैरीक्यूलस ने मुक़ाबिले के लिए भारी सेना का संग्रह किया था। यह फ़ौरन १,५०० चुने हुए सवार लेकर पहुँचा, उधर ख़लीफ़ा ने कई हज़ार योद्धा और भेज दिए; बसरे पर धावा बोल दिया गया।

बसरा उन दिनों रोम साम्राज्य का एक दुर्ग था। इसी नगर के सामने मुसलमानी सेना ने छावनी डाली। क़िला बहुत ही मज़बूत था और रक्षक सेना भी बलवान थी। पर उसका अध्यक्ष रोमेनस विश्वासघात करके मुसलमानों से मिल गया और क़िले का फाटक खोल दिया। एक व्याख्यान में उसने अपने भाइयों से कहा :—

"मैं तुम्हारा साथ छोड़ता हूँ। इस लोक के लिए और परलोक के लिए भी। मैं उसको नहीं मानता, जो सूली पर चढ़ाया गया था और उनको भी नहीं मानता जो उसको पूजते हैं। मैं ईश्वर को अपना मालिक बनाता हूँ और इस्लाम को अपना धर्म, मक्का को अपना धर्म-मन्दिर, मुसलमानों को अपना भाई और मुहम्मद को पैग़म्बर मानता हूँ।"

यह रोमेनस उन हज़ारों विश्वासघातियों में से एक था, जिन्होंने फ़ारिश की विजयों में अपना धर्म खो दिया था !!

बसरा से सीरिया की राजधानी दमिश्क़ ७० मील थी। यह शहर बड़ा धनाढ्य, बड़ा गुलज़ार और व्यापार का केन्द्र था। यहाँ का रेशम और गुलाब का इत्र दुनिया भर में प्रसिद्ध था। ख़लीद अपने १,५०० सवारों को लेकर दमिश्क़ की तरफ़ चला। उसने शरजील तथा अबूअबीदा को, जिन्हें वह फ़रात नदी के निकट छोड़ आया था, चुपचाप लिखा कि वे तत्काल अपनी पूरी फ़ौज लेकर दमिश्क़ को घेर लें। उन्होंने ३,७०० फ़ौज लेकर कूच किया और नगर को घेर लिया। उन्होंने नगर-वासियों को सूचना दी कि तत्काल मुसलमान हो जाओ या धन-दण्ड दो; अन्यथा युद्ध करो। बादशाह हैरीक्यूलस वहाँ से १५० मील दूर एण्टीऑक के महल में था। उसने ख़लीद के १,५०० सवारों का आक्रमण समझ कर ५ हज़ार सेना भेज दी। उसका सरदार जनरल केलूस था। उसका नगर के शासक अज़राईल से मतभेद था। जब उसने ४० हज़ार सेना के प्रचण्ड बल को देखा, तो वह भय-भीत हो गया और विश्वासघात करके ख़लीद से कहला भेजा कि अज़राईल को मारते ही नगर पर क़ब्ज़ा हो जायगा। अज़राईल यद्यपि वृद्ध था, पर मैदान में डट गया और वीरता से लड़ा। पर ख़लीद ने दोनों को पकड़ कर क़ैद कर लिया और मुसलमान होने को कहा। अन्त में इन्कार करने पर उन्हें क़त्ल कर दिया।

इस घटना से नगर में हलचल मच गई। नगर के फाटक बन्द कर लिए गए। बादशाह ने ख़बर पाकर एक लाख सेना भेजी। परन्तु ख़लीद ने मार्ग ही में छल-बल से उसे छिन्न-भिन्न करके परास्त कर दिया और सारी युद्ध-सामग्री छीन ली। इस सेना के दो ईसाई नायक पीटर और पॉल वीरता से लड़े और बहुत से मुहम्मदी सैनिकों को काट डाला। पीछे पॉल गिरफ़्तार कर लिया गया और पीटर भाले से छेद कर मार डाला गया। पॉल से मुसलमान होने को कहा गया तो उसने कहा कि मैं 'लुटेरों और ख़ूनियों के धर्म को स्वीकार न करूँगा।' इस पर उसका सिर काट लिया गया।

बादशाह ने फिर ७० हज़ार फ़ौज भेजी, जो जनरल वार्डन की अधीनता में थी। पर ये सब नए रँगरूट थे। जनरल वार्डन ने ख़लीद के मारने का एक षड्यन्त्र रचा और एक पादरी को सन्धि-चर्चा के लिए भेजा। पादरी ने भण्डाफोड़ कर दिया कि अमुक स्थान पर १० सिपाही तुम्हारे बध के लिए खड़े रहेंगे, जो दरबान के भेष में होंगे। ख़लीद ने कौशल से दसों सिपाहियों को रात ही में चुपचाप मरवा डाला और बेधड़क सन्धि-स्थल पर पहुँच गया। वार्डन को कुछ पता न लगा। उसके निकट जाकर ख़लीद ने वार्डन की गर्दन पकड़ ली और उसी समय उसका सिर काट कर उसकी सेना में फेंक दिया। यह देख कर ईसाई लोग भयभीत हो गए। इसी बीच में मुसलमान सेना ने धावा बोल कर सारी सेना को तहस-नहस कर दिया और उनका सर्वस्व लूट लिया। इस लूट में बेतोल धन मिला और उसके लालच से असंख्य अरबों ने युद्ध में सम्मिलित होने की तैयारी की।

इसके बाद दमिश्क़-वासी टॉमस को सेनापति बना कर लड़ने लगे। यह बड़ा भारी तीरन्दाज़ था। वीर भी था। ख़ूब लड़ा। अब्बास इब्ने ज़ैद उसके तीर से मारा गया। इस पर अब्बास की स्त्री ने मैदान में आकर टॉमस की आँख अपने तीर से फोड़ दी। फिर भी वह लड़ता रहा और ७० दिन तक दमिश्क़ पर क़ब्ज़ा न होने दिया।

अन्त में ७० दिन के बाद उसकी इच्छा के विपरीत नगर के १०० प्रतिष्ठित आदमियों और पादरियों ने ख़लीद से सन्धि कर ली और नगर मुसलमानों को सौंप दिया। यह भी निश्चय हो गया कि जो नागरिक बाहर जाना चाहें, मय अपने सामान के जा सकते हैं, परन्तु जो रहेंगे उन्हें जज़िया देना होगा। एक पादरी विश्वासघात करके मुसलमानों को गुप्त मार्ग से नगर में बुला लाया। उन्होंने फाटक खोल दिए। सारी सेना नगर में घुस आई और क़त्लेआम मच गया। अन्त में ख़लीद ने अपना काले गिद्ध का झण्डा दमिश्क़ के क़िले पर फहरा दिया।

जिन लोगों ने इस्लाम धर्म न स्वीकार किया था, वे नगर छोड़ कर बाहर चले गए। टॉमस उनके साथ था। ख़लीद ने ४ हज़ार सवार उनके पीछे लगा दिए और जब ये बेचारे आफ़त के मारे एक नदी किनारे विश्राम कर रहे थे, स्त्रियाँ भोजन बना रही थीं, बच्चे खेल रहे थे, इन पर वे सैनिक टूट पड़े और उन्हें लूट कर क़त्ल कर डाला। इनमें से सिर्फ़ १ आदमी बच कर भाग सका। बादशाह की पुत्री भी इसी झुण्ड में थी, उसे ख़लीद ने यह कह कर छोड़ दिया कि जा और अपने बाप से कह कि मुसलमानी धर्म ग्रहण करे, वरना मैं शीघ्र ही उसका सिर उतारने आता हूँ।

इस तमाम लूट का पाँचवाँ भाग ख़लीफ़ा के पास भेज कर शेष उसने आपस में बाँट लिया। परन्तु माल पहुँचने के पूर्व ही ख़लीफ़ा की मृत्यु हो गई।

(क्रमशः)

* * *

भारत की दशा

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

आपदा का सिन्धु लहरा रहा जो सामने है,
उसका तो देख पड़ता हो नहीं तीर है,
त्रिंश कोटि पार जाने वाले हैं, जहाज़ नहीं,
किसका हृदय हो रहा नहीं अधीर है ?
छोटी-छोटी नाव इस ओर, उस ओर पड़ीं,
उनमें से एक पर भी न माँझी वीर है,
भूरि भाग्यशाली जो कभी था, उस भारत के
भरता इसी से भव्य नयनों में नीर है।

दुर्दशा स्वदेश की विशेष हो गई है आज,
मानो वह एक पिंजरे में बध्य कीर है,
तन में है श्रान्ति, मन में अशान्ति व्याप्त हुई
उसका तो रोम-रोम हो रहा अधीर है,
टेढ़ा समुद्धार का उपाय, भार जीवन है,
ऐसी बढ़ी घोर परतन्त्रता की पीर है
भूरि भाग्यशाली जो कभी था, उस भारत के
भर रहा आज भव्य नयनों में नीर है।

पेट भर अन्न नहीं पाते बहु कोटि जन,
वस्त्र से न तन ढक सकने की पीर है,
चल रहा उनको कँपाता-तड़पाता हुआ
उस पर घोर अत्याचार का समीर है,
अपने जनों का रिपुओं से मिल जाना हाय !
ऊपर से करता उसे महा अधीर है,
भूरि भाग्यशाली जो कभी था, उस भारत के
बह रहा आज भव्य नयनों से नीर है !
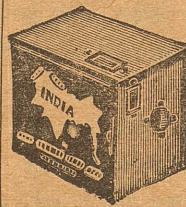
जर्मनी में फ़ेसिज़्म का भय

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्या," एम० ए०, पी० एच-डी०]

जब गत महायुद्ध की भयानक चक्की में यूरोप के सारे राष्ट्र पिस रहे थे, यूरोप के बहुत से लेखक तथा विद्वान एक ऐसी सामाजिक सूचना का आविष्कार करने में लगे हुए थे, जिसमें युद्ध ऐसी भयानक संस्था का नाम न हो। वे यह कहते थे कि हमारे आधुनिक समाज में अवश्य कोई बड़ी भारी भूल है। हमें उसे सुधारना चाहिए। यूरोप की युद्ध-पीड़ित जनता तथा कोमल हृदय युवक इनके अनुयायियों में से थे। वे एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे, जहाँ समता, शान्ति व सुख का राज्य हो। जहाँ संसार की सारी मनुष्य-जाति आपस में भ्रातृ-भाव से रहे। गत युद्ध से जर्मनी ने बहुत हानि उठाई। जर्मनी की सारी आर्थिक तथा शारीरिक शक्ति का इस युद्ध में नाश हो गया। उद्योग तथा व्यापार को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इस सब से जर्मनी की जनता एकदम बेचैन हो उठी। वहाँ पर इस सामाजिक सुधार के आन्दोलन ने बहुत ज़ोर पकड़ा। जर्मनी की प्रजा एक नए सुख-स्वप्न की राह देखने लगी। युद्ध के बाद जर्मनी की अवस्था और भी ख़राब हो गई। वरसाइल की सन्धि के अनुसार उसे बहुत सी ऐसी शर्तों को मानना पड़ा कि जिससे उसके राजनैतिक गौरव तथा आर्थिक अवस्था को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इस सन्धि से जर्मनी को क्रूर आक्रमणकारियों के सामने अपनी गर्दन झुकानी पड़ी। फिर आन्तरिक शासन-प्रणाली में भी सन्तोषदायक परिवर्तन न हुआ। राज्य-तन्त्र अवश्य हट गया और उसके साथ देश के हर एक मनुष्य को वोट का अधिकार भी मिल गया; अपना मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता तथा अन्य सामाजिक सुधार भी हुए; परन्तु तब भी जर्मनी की कई पुरानी संस्थाएँ जो प्रजातन्त्र की विरोधी हैं, ज्यों की त्यों क़ायम रहीं। पुराने क़ानून रद्द नहीं किए गए। क़ैसर के राज्य-काल के न्यायालय तथा राज्य-प्रबन्ध सम्बन्धी अन्य संस्थाओं में भी कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। इन बातों को देखते हुए इस नए प्रजातन्त्र में और उस पुराने राज्य-तन्त्र में बहुत कम भेद मालूम पड़ता है। सेना भी पुराने अधिकारियों के हाथ में रक्खी गई। वीमर के नवीन राष्ट्रीय शासन-विधान के अनुसार जर्मनी एक प्रजातन्त्र राज्य है। परन्तु राष्ट्रीय सभा के प्रेज़िडेण्ट के हाथ में इतना ज़्यादा अधिकार दे दिया गया है, कि वह अवसर पड़ने पर देश की शासन-प्रणाली को रद्द कर सकता है। सेना का सर्व-श्रेष्ठ अधिकारी भी वही है।

इस नवीन शासन-प्रणाली के स्थापित हो जाने के बाद जर्मनी की राष्ट्रीय सभा में दो मुख्य दल हो गए। एक दल वाले युद्ध के बाद स्थापित हुई शासन-प्रणाली के समर्थक थे, दूसरे दल वाले पूर्ण प्रजातन्त्र के समर्थक थे। पहिला दल, जिसमें प्रेज़िडेण्ट स्वतः शामिल था, यह चाहता था कि राज्य की सारी सत्ता केवल थोड़े से अधिकारियों के हाथ में रहे। दूसरा दल राज्य का प्रबन्ध प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में रखना चाहता था, मज़दूर लोगों के कष्टों को दूर करना चाहता था और साम्यवाद के कुछ सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणत करना चाहता था। पर आरम्भ से ही इस दल के अनुयायियों की संख्या कम रही है इससे वह और दलों से मिल कर धीरे-धीरे सुधार करता रहा है। जब कभी देश की रक्षा तथा अन्य ऐसे प्रश्न उठते हैं, तब वह प्रेज़िडेण्ट की अन्यायपूर्ण सत्ता तक का समर्थन करने को तैयार हो जाता है। इस नीति के अनुसरण करने में बहुधा उसे मज़दूरों की भलाई, उनकी शिक्षा तथा आर्थिक सुधार के प्रस्तावों तक को पीछे खींच लेना पड़ता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इतने साल प्रजातन्त्र रहने के बाद भी जर्मनी के मज़दूरों को और देशों की अपेक्षा सब से ज़्यादा टैक्स देना पड़ता है और इसी देश के पूँजीपति तथा धनी लोग राष्ट्र के कई टैक्सों से बचे हुए हैं। इसलिए पूँजीपतियों के अतिरिक्त देश की अन्य जातियों में इस नीति से बहुत असन्तोष फैल गया है। लोग प्रजातन्त्र वाले दल तथा प्रेज़िडेण्ट ब्रनिङ्ग के दल दोनों से घृणा करने लगे हैं। इस अवसर का लाभ एक तीसरे दल ने उठाया है। उसका नेता एडोल्फ़ हिल्टर है। वह दल फेसिज़्म के सिद्धान्तों का अनुयायी है। इस दल की सफलता का मुख्य कारण जनता का असन्तोष है। कहते हैं कि इस दल के चलाने के लिए कुछ बड़े-बड़े पूँजीपति भी रुपया देते हैं। वे प्रजातन्त्र वाले पुराने दल को तोड़ना चाहते हैं, क्योंकि वह हरदम उनकी सत्ता घटाने का प्रयत्न करता रहता है। यह भी कहा जाता है कि भूतपूर्व क़ैसर तथा इटली का सत्ताधारी मुसोलिनी भी इस संस्था को आर्थिक सहायता देता है। वे सब चाहते हैं कि यह दल बलवान हो जावे तथा और दलों को दबा देवे। वे यह भी जानते हैं कि यह दल जनता का कल्याण नहीं कर सकता, इससे शीघ्र ही बदनाम हो जावेगा और राज्यतन्त्र वालों को फिर मौक़ा मिलेगा।

इस नई राज्यक्रान्ति से बचने का अब एकमात्र साधन यह है कि प्रजातन्त्र का समर्थक साम्यवादी दल प्रेज़िडेण्ट के दल का साथ छोड़ दे। परन्तु इस दल के नेता यह देखते हैं कि यदि उन्होंने ऐसा किया तो राज्याधिकार इस नई पार्टी के हाथ में आ जायगा। इसलिए वह दल प्रेज़िडेण्ट की नीति का ही समर्थन कर रहा है। राज्य की सारी सत्ता प्रेज़िडेण्ट ब्रनिङ्ग के हाथ में है। परन्तु वह अपने कार्यों की सारी ज़िम्मेदारी प्रजातन्त्र दल व राष्ट्रीय सभा पर रखता है। जर्मनी के प्रजातन्त्र की स्थिरता में विघ्न डालने वाली यही दो बातें हैं। पहिली प्रेज़िडेण्ट ब्रनिङ्ग की चालाकी, जो कि प्रजातन्त्र दल को बदनाम कर रही है। दूसरा फ़ेसिस्ट दल, जो प्रजातन्त्र दल की बदनामी तथा मज़दूरों व अन्य कई जातियों की असन्तुष्टता का फ़ायदा उठा रहा है। इस समय प्रजातन्त्र दल को चाहिए कि वह और बातों का ध्यान छोड़ कर अपने सिद्धान्तों पर चलने का प्रयत्न करे व प्रेज़िडेण्ट ब्रनिङ्ग का साथ छोड़ कर मज़दूरों की भलाई करने का दृढ़ निश्चय करे। इस तरह वह जन-सामान्य के श्रद्धा तथा विश्वास को फिर से पा सकता है। अन्यथा फ़ेसिस्ट दल थोड़े ही दिनों में जर्मनी की सारी सत्ता को समेट लेगा। युद्ध के समय में लोगों ने जो बातें सोची थीं, उन्हें वे कार्यरूप देना चाहते हैं—अपना सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक सुधार करना चाहते हैं। जो दल यह कार्य करने को तैयार होगा, जनता उसी का साथ देगी। प्रजातन्त्र वाले दल ने इन स्वप्नों को अभी तक कार्यरूप नहीं दिया है। फ़ेसिस्ट दल, जिसका कि नेता एडोल्फ़ हिल्टर है, कहता है कि वह ये सुधार शीघ्र ही कर दिखावेगा। इस आशा से प्रोत्साहित होकर जनता फ़ेसिस्ट दल तथा उसके नेता हिल्टर का साथ देने को तैयार है।

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्त्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

प्रभाती तारे के पीले प्रकाश में मैंने देखा—वाटिका की समस्त विकसित कलिकाओं के मुखों पर आँसू बिखर रहे थे।

❀

हँसो अवश्य; लेकिन कहीं तुम्हारी हँसी दूसरे को रुलावे न।

❀

वासनाओं के पीछे मत दौड़। ये स्वयं तरुण रह कर तुझे बुड्ढा बना देंगी।

❀

जल के कोमल प्रवाह में असीम शक्ति छिपी है। रमणी का कोमल हृदय अपनी गोद में साहस और धैर्य छिपाए है।

❀

सुगन्धित पुष्प की शोभा डाल पर है, न कि माली के हाथों में।

❀

कुल्हाड़ी चन्दन के वृक्ष को काटने की चेष्टा करती है। चन्दन अपनी सुगन्धि कुल्हाड़ी में बसा देता है।

❀

केवल आशीर्वाद से कोई जीवित नहीं रहता।

❀

स्वतन्त्र पक्षी कहता है—पिञ्जरे में तो मैं अपने पङ्खों को भी न फैला सकूँगा।

पिञ्जर-बद्ध कीर कहता है—आकाश में क्षण-मात्र दम लेने को भी आधार नहीं है।

❀

आशा मद है, निराशा मद का उतार।

❀

हे मेरे मित्र, जीवन के अनुभव का दान करके मुझे लज्जित मत कर। मुझे स्वयं अपने जीवन का निर्माता बनने दे।

❀

विपत्ति अनुभव सिखाने का अद्वितीय विद्यालय है।

❀

सांसारिक यातनाएँ मनुष्य को इस असार संसार का भली-भाँति ज्ञान करा देती हैं।

❀

फूल ने फल से पूछा—तुम्हारा वास कहाँ है?

फल ने उत्तर दिया—तुम्हारे हृदय में।

❀

भविष्य की कल्पना करके मैं कभी-कभी आनन्द से विह्वल हो जाता हूँ।

❀

सरिता स्वयं जल नहीं पीती; वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते। सज्जनों की विभूतियाँ परोपकार के लिए ही होती हैं।

❀

मनुष्य जितना त्याग तृष्णा की पूर्ति के लिए करते हैं, उतने त्याग के सदुपयोग से महान पद प्राप्त हो सकता है।

❀

मृत्यु के पश्चात राजा और रङ्क में कोई अन्तर नहीं।

❀

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

आजकल हिज़ होलीनेस श्री० जगद्गुरु को मि० जिन्ना की परेशानी ने विशेष चिन्तित कर दिया है। "अहीर की बिटिया को न नैहरे चैन न ससुरे सुख!" बेचारे ने आल इण्डिया कॉङ्ग्रेस का द्वार खटखटाया, सर्वदल सम्मेलन के सामने ज़ोरदार स्पीचें दीं और अन्त में राउण्डटेबिल के चारों ओर चक्कर मारा! मगर हाय री क़िस्मत! किसी के—

"फूटे मुँह से यह न निकला, लेते जाना शाह जी!"

❀

बड़ी आशा थी कि दादा मुग्धानल देव पसीज जायँगे और पूरी चौदह नहीं तो कम से कम साढ़े तेरह ही शर्तें मन्ज़ूर करके 'भावी इक़बाली हिन्दोस्तान' की बुनियाद क़ायम कर देंगे। इसीलिए 'प्योर नेशनलिस्ट' होने पर आपको थोड़ी देर के लिए साम्प्रदायिकता का बुर्क़ा ओढ़ लेना पड़ा था। मगर दादा ऐसे कन्जूस निकले कि साढ़े तेरह तो क्या पौने तेरह पर भी राज़ी न हुए!

❀

हाय रे, तो क्या 'मुस्लिम भारत' का वह सुख-स्वप्न महज़ स्वप्न ही रह जायगा, अल्लाह मियाँ! या कोई सूरत निकालोगे? नहीं जी, 'ट्राई-ट्राई अगेन!' 'हिम्मते मरदाँ मददे ख़ुदा!' एक बार फिर कॉङ्ग्रेस वालों को घेरना चाहिए। बच्चू जायँगे कहाँ? सर्वदल सम्मेलन ने तो बहुत-कुछ स्वीकार ही कर लिया है। बस, अब 'बात रही थोड़ी, ज़ीन लगाम घोड़ी!' एक बार जहाँ मचले कि काम बना।

❀

इसीसे जिन्ना साहब, साम्प्रदायिकता की बालू की दीवार पर खड़े-खड़े देशवासियों को लन्दन से ही ललकार रहे हैं कि बाबा सावधान! ब्रिटिश पार्लामेण्ट मक्खी-चूसों का अड्डा है। कमबख़्त सख़ावत और दरिया-दिली का नाम तक नहीं जानते; वे कुछ देने-दिलाने वाले नहीं हैं, इसलिए आपस में ही निबट लो। सबसे पहले हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान हो जाना चाहिए, नहीं तो सारा गुड़ गोबर हो जायगा!

❀

मगर अफ़सोस की बात तो यह है कि हईमारी कॉङ्ग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ ही 'नेहरू रिपोर्ट' को भी रावी में डुबो चुकी है, इसलिए श्रीजगद्गुरु की राय है कि अगर दादा मुग्धानल देव की पार्लामेण्टरी स्पीच के कारण जनाब जिन्ना साहब दाम इक़बालहू को 'ब्रिटिश डिप्लोमेसी' का असली रूप दिखाई पड़ गया है तो बहरे ख़ुदा साम्प्रदायिकता को ज़िन्दा दर गोर कर दें या नेहरू रिपोर्ट के पुनरुद्धार के लिए फ़ौरन ग़ोताख़ोरी का अभ्यास आरम्भ कर दें। माशा अल्लाह, दोनों रास्ते साफ़ हैं।

❀

बस, इतना ही लिख पाया था कि एक हज़रत आ धमके और फ़र्राटे के साथ फ़रमाने लगे—"क्यों गुरु जी, साम्प्रदायिक अधिकारों के लिए हमारे 'हिन्दू-मुस्लिम-हितैषियों' ने जैसा बालकोचित अभिनय राउण्ड-टेबिल के सामने लन्दन में किया है, वैसा ही अगर एक बार यहाँ भी हो तो क्या बुरा है? फिर वही पुराना शग़ल शुरू हो, दाढ़ी-चोटी का गँठबन्धन देखने को मिले? क्यों? आपकी क्या राय है?"

❀

"हाँ जी, बुरा क्या है!" श्रीजगद्गुरु बोले—"ख़ासी चहल-पहल रहेगी। भठियारख़ाने का मज़ा मिलेगा। जिन्ना साहब और हिमालय की चोटी पर इस्लामी पताका फहराने की इच्छा रखने वाले उनके साथी मुसलमान और चाहते क्या हैं? कॉङ्ग्रेस को चाहिए कि भारत के जन्म-सिद्ध अधिकारों के लिए ब्रिटिश सरकार से अहिंसात्मक लड़ाई लड़ती रहे और मुसलमानों के लिए आधा हिन्दोस्तान छोड़ दे। आख़िर उन्हें भी तो स्वतन्त्रता चाहिए। अगर सारा हिन्दोस्तान नहीं तो उसकी थोड़ी सी दुम ही सही—'भागे भूत की लँगोटी ही सही!'

❀

मगर दुःख की बात यह है, कि जिन्ना साहब भारत से विरक्त होकर लन्दन में वानप्रस्थ ग्रहण करने वाले हैं। एक फ़िरङ्गी अख़बार को ख़बर मिली है कि अब आप वहीं प्रिवी कौन्सिल में पैरवी करेंगे और ब्रिटिश पार्लामेण्ट में घुस कर अपने चिरवाञ्छित 'चौदह रत्नों' की तलाश करेंगे। क्या करें, बेचारे सन् १९१६ से कह रहे हैं कि बाबा, मुसलमानों की १४ शर्तें स्वीकार कर उन्हें प्रसन्न कर लो। घर के देवता माने रहेंगे तो बाहर के भी मान जायँगे, मगर कोई सुनने ही वाला नहीं है। ऐसी हालत में बेचारे किस भरोसे पर इस देश में रहें?

❀

पञ्जाब की सरकार ने निश्चय किया है कि गत १ली जनवरी से जो कर्मचारी भर्ती किए जायँ, उन्हें तनख़्वाह पन्द्रह फ़ी सदी कम दी जाय। इस पर श्रीजगद्गुरु का यह छोटा-सा इज़ाफ़ा है कि इस १५ फ़ी सदी की कमी से जो बचत हो, वह नई दिल्ली के उद्घाटन-समारोह में ख़र्च की जाय। क्योंकि उस रक़म के सद्व्यय का ऐसा सुन्दर साधन दूसरा नहीं हो सकता।

❀

मगर अफ़सोस की बात है कि नई दिल्ली के उद्घाटन-समारोह का जो प्रोग्राम अख़बारों में छपा है, उसमें न भङ्ग-बूटी की व्यवस्था का ज़िक्र है, न दम लगाने की व्यवस्था का! सप्ताह भर जलसे होंगे, भोज होंगे, तरह-तरह के खेल-तमाशे होंगे, मोटरों की दौड़ होगी और लाखों रुपए स्वाहा होंगे, पर वही फीका-फीका! अमा, बिना नशापानी के भी कोई जलसा अच्छा लगता है? कोई लाट साहब को जाकर याद क्यों नहीं दिला देता कि ऐसे शुभ अवसर बार-बार नहीं आते। जब सब कुछ हो रहा है, तो थोड़ी सी विजया का इन्तज़ाम भी हो जाना चाहिए।

❀

जहाँ लाखों रुपए आतिशबाज़ी और टूर्नामेण्ट वग़ैरह में ख़र्च होंगे, वहाँ सौ दो सौ अगर भङ्ग-बूटी में ख़र्च हो जाते तो क्या बुरा था? शादी-ब्याह और गृह-प्रवेश—यही तो धन सार्थक करने के अवसर हैं। उचित तो था कि इस शुभ अवसर पर श्रीसत्यनारायण की कथा होती। बी लतीफ़न का छुम् छनन्न् होता। "तोरी बाँकी सी चलन तिरछे नैना!" की ध्वनि से महफ़िल गूँज उठती और लोग "वाह वा! मरहबा और सुभान अल्लाह" के नारे लगाते! रुपए का मसला तो 'नमक-कर' की तरह एक 'हवा-कर' लगा देने से ही हल हो जाता

❀

ख़ैर, दिल्ली में भङ्ग-बूटी की व्यवस्था न हुई तो न सही। अल्लाह करे, मेरठ का षड्यन्त्र-केस इसी तरह साल दो साल तक चलता रहे, ताकि बेचारे वकीलों की छनती रहे। मगर आफ़त तो यह है कि एसेम्बली से यह ख़बर आते ही कि अब तक इस अत्यावश्यक मुक़दमे के लिए सरकार को केवल सात लाख, तैंतीस हज़ार ख़र्च करने पड़े हैं, लोगों ने चिल्ल-पों मचा कर आसमान सर पर उठा लिया है! कम्बख़्तों को यह नहीं सूझता कि इस मुक़दमे के कारण सरकार के सर से कितनी बड़ी बला टल गई है!

❀

इसलिए, श्रीमती सुशीला सरकार की सेवा में हिज़ होलीनेस का विनम्र निवेदन है कि मेरठ षड्यन्त्र-केस की दुम में कोई भारी-सा नमदा बाँध दिया जाय, ताकि वह कच्छपी चाल से जन्म-जन्मान्तर तक चलता रहे और बेचारे वकील-बैरिस्टरों के लिए जो 'दान-क्षेत्र' खुला है, वह खुला रहे! ऐसा मशहूर मामला अगर दस-बीस वर्ष भी न चला तो क्या चला? बला से दो-चार करोड़ ख़र्च हो जायँगे। रुपया-पैसा तो हाथ की मैल है, एक तरफ़ से आया और दूसरी तरफ़ से गया! फिर भारत जैसी स्वर्णप्रसू भूमि जब तक हाथ में है, तब तक करोड़-दो करोड़ की चिन्ता ही क्या है? एसेम्बली और कौन्सिलें अपने हाथ में हैं, कोई नया कर लगा कर इन काले-कलूटों से कुछ ऐंठ लेने में कितनी देर लगती है?

❀

उस दिन किशोरगञ्ज (बङ्गाल) के मजिस्टर साहब मोटर पर सवार होकर एक गाँव के पास से जा रहे थे तो एक एम० ए० का विद्यार्थी बड़े ज़ोर से वन्देमातरम् चिल्ला उठा। बस, फिर क्या था, साहब के मान का कँगूरा उर्दू शायरों के 'शीशए-दिल' की तरह चूर-चूर हो गया! मगर ख़ुदा भला करे किशोरगञ्ज के डिप्टी मजिस्टर का कि उन्होंने उक्त छात्र को चार महीने की सख़्त सज़ा (!) देकर मजिस्टर बहादुर के मान की मरम्मत कर दी। नहीं तो साहब की जो दशा होती उसे सोच कर, क़सम ख़ुफ़्तुल हवासी की, अपने राम का दिल हवा का झोंका खाए हुए पीपल के पत्ते की तरह काँप उठता है!

❀

उफ़ रे उफ़! कहाँ साहब के "हुज़ूर, धर्मावतार, सर और योर ऑनर" की मधुर ध्वनि सुनने के आदी कोमल कर्ण-कुहर और कहाँ वह कनखजूरे सा खुर-खुरा 'वन्देमातरम्!' इधर 'कुलिसहु चाहि कठोर यह' और उधर वह 'कोमल कुसुमहु चाहि!' ऐसे गुस्ताख़ लड़के को तो कम से कम सात बार फाँसी की सज़ा देने की आवश्यकता थी। मगर मालूम होता है, पूर्व प्रशंसित डिप्टी साहब न्याय और दया की साक्षात् 'गङ्गा-जमुनी' मूर्ति हैं, इसीसे उन्होंने इतना बड़ा अपराध कर डालने पर भी उक्त विद्यार्थी को महज़ मामूली सज़ा देकर ही छोड़ दिया है!

❀

अरे जनाब, आप विश्वास न करेंगे, परन्तु बिलकुल सच्चा वाक़या है। हमारे चुन्नी-चचा को करैले से चिढ़ थी। एक दिन बाज़ार से घर की ओर जा रहे थे। लड़के पीछे पड़ गए और ताली बजा-बजा कर 'चचा करैला लोगे? 'चचा करैला लोगे?' कहने लगे। चचा ने पहले तो उनकी सात पुश्त की ख़बर ली। ऐसे नालायक़ लड़के पैदा करने के लिए उनके माँ-बाप को बुरा-भला कहा,

फिर रास्ते से कङ्कड़-पत्थर उठा कर उनकी ओर फेंका, और इसके बाद दोनों हाथों से अपना मुँह पीटने लगे ! परन्तु वे शरारत के पुतले कब मानने वाले थे ? उन्होंने और भी ज़ोर-ज़ोर से 'करला-करैला' चिल्लाना शुरू कर दिया। बस, आख़िरी नतीजा यह हुआ जनाब, कि चचा भागने लगे और ठोकर खाकर औंधे मुँह एक गन्दे नाबदान में जा गिरे ! बताइए, हमारे साहब बहादुर की भी अगर यही दशा होती तो क्या होता ?

❀

ठिलिया भर सिंकियाबोर बूटी छान करके घण्टों माथापच्ची करने पर भी श्रीजगद्गुरु की समझ में यह बात न आई कि आख़िर यह गलित धर्म और पलित केश सनातन-धर्म ने सर हरिसिंह गौड़ का क्या बिगाड़ लिया है, कि वे दिन-रात बेचारे के पीछे पड़े रहते हैं ! सुनते हैं, आपने एक "सिविल मैरेज बिल" नाम का महा भयङ्कर और धर्म-ध्वंसी बिल एसेम्बली में पेश कर दिया था। आप चाहते हैं कि कोई एक से अधिक बीबी न करने पाए, पति के मरने पर स्त्रियाँ उसकी जायदाद की मालकिनें बनें, स्त्रियों को पति-त्याग का अधिकार प्राप्त हो जाय, विवाहों की रजिस्ट्री हुआ करें और जो चाहे जिस 'जाति' की लड़की को अपनी बीबी बना ले ! बताइए, यह धर्म और समाज को जीते जी ज़हर देना नहीं तो क्या है ?

❀

मगर जनाब, एसेम्बली के धर्मवीरों ने वह पैंतरेबाज़ी दिखाई, ऐसे वाक्य-बाण प्रहार किए, ऐसी अनूठी युक्तियाँ पेश कीं कि धर्म को इस आफ़ते-नागहानी से बचा कर ही दम लिया। राजा बहादुर कृष्णमाचारियर ने कहा, कि इस बिल को इतनी बड़ी लाठी से मारना चाहिए कि वह सिर न उठा सके। मौ० मुहम्मद याक़ूब साहब ने सर हरिसिंह को देश से निकल जाने की आज्ञा दी। एक कोई मियाँ साहब ने फ़रमाया कि हमारा धर्म बहु-विवाह का समर्थन नहीं करता, परन्तु अवस्था विशेष में, 'अल्लाह के फ़ज़ल से चार बीबी करना फ़र्ज़ है !' भला ऐसी-ऐसी मुँहतोड़ युक्तियों के सामने बिल कैसे ठहर सकता है ? फ़ौरन कटे हुए पेड़की तरह भहरा पड़ा और बेचारे गौड़ महाशय दिल थाम कर कहते रह गए कि "मेरा बिल है, मेरा बिल है !!"

❀

अन्त में, जब राजा बहादुर अपने कथन के उपसंहार पर आए तो फ़रमाया कि 'हमारे पूर्व-पुरुषों ने जो प्रथा प्रचलित कर रक्खी है, वह बहुत ही अच्छी है।' इसमें क्या शक ! बीबी की बीबी मिलती है और उसके साथ ख़ासी रक़म दहेज में मिल जाती है ! बहत्तर साले बूढ़ों को बैतरणी पार कराने के लिए षोडशी मिल जाती है। और क्या ? चाहिए तो मरने के बाद भी दो-चार शादियाँ कर लीजिए। एक बीबी नापसन्द हो तो फ़ौरन दूसरी, तीसरी, चौथी—दर्जन पार कर दीजिए, कोई पूछने वाला नहीं। अल्लाह करे, यह प्रथा युगयुगान्तर तक जारी रहे। आमीन !

❀

और सुनिए, राजा बहादुर की राय है कि वह हिन्दू हिन्दू ही नहीं हो सकता, जो किसी लड़की के बारे में कहे कि मेरा उससे प्रेम हो गया है, इसलिए मैं उससे विवाह करूँगा। शिव ! शिव !! ऐसा लाञ्छन अगर कोई कमबख़्त किसी हिन्दू पर लगाए तो उसे कच्चा ही चबा जाइए। इन बेचारे धर्मात्माओं से प्रेम से क्या वास्ता ! किसी एक से प्रेम हो जाय तो फिर हर साल नई बीबी लाने का मज़ा ही जाता रहे ! और फिर बीबी भी क्या कोई प्रेम करने की चीज़ है ? ऐसे प्रेम के पचड़े में पड़िए तो फिर जूती से भी प्रेम करना पड़े। किसी से प्रेम करना और फिर उसी से शादी भी कर लेना, यह पापियों का काम है, न कि धर्मपरायण हिन्दुओं का।

❀

और फिर, प्रेम, सतीत्व, पतिव्रत और लज्जाशीलता आदि स्त्रियों के लिए हैं या मर्दों के लिए ? उन्हें तो चिता तक पहुँचते-पहुँचते भी दो-चार विवाह कर डालना चाहिए। वह कमबख़्त हिन्दू ही क्या, जो मरने पर दो-चार विधवाएँ न छोड़ जाय। आख़िर कोई नाम को रोने वाला भी चाहिए या नहीं ?

❀

भारत की भूतपूर्व राजधानी कलकत्ता से ख़बर आई है कि गत वर्ष वहाँ मोटरों की ठोकर से १४२ आदमी मर कर सीधे स्वर्ग पहुँचे और २,१४४ ने घायल होकर अस्पतालों की शोभा-वृद्धि की ! हमारी राय है कि कोई क़ानून बना कर इन २,१४४ अस्पतालियों को कठिन कारागार की सज़ा दी जाय, क्योंकि इन्होंने भव-बन्धन से विमुक्त होने का ऐसा सुवर्ण सुयोग छोड़ कर बड़ी भारी ग़लती की है।

❀

हबड़ा के एक बङ्गाली युवक ने श्री० जे० एम० सेन गुप्त के स्वागत में प्राण विसर्जन कर दिया। उसके शोक में एक सभा हुई और कुछ नवयुवक जुलूस बना कर उसमें सम्मिलित होने चले। यह सुनते ही पुलिस के कान खड़े हो गए ! वह 'आज कीन्ह विधि एकहि बारा' कह कर भूखे सम्पाती की तरह जुलूस पर टूट पड़ी और लाठियों की चोट से दर्जनों जुलूसियों की खोपड़ियों का फ़ालतू ख़ून बाहर कर दिया। लोग श्रीमती पुलिस का यह अकाण्ड-ताण्डव देख कर हैरान रह गए ! परन्तु श्री० जगद्गुरु तो बुद्धिमान आदमी ठहरे। काँख-कूँख कर खोपड़ी पर ज़रा ज़ोर देते ही समझ गए कि भी भैंस को इससे क्या मतलब कि वस्त्र रेशमी है या सूती ? उनका तो स्वभाव है रङ्ग देख कर भड़कना। फलतः ब्रिटिश राज्य की पुलिस को भी यह विचार करने की आवश्यकता नहीं कि जुलूस शादी का है या ग़मी का।

❀

इसके सिवा सुनते हैं, की ब्रितानियाँ की नीयत अच्छी है और वह सुलह तथा शान्ति के लिए पथ प्रशस्त करने में जी-जान से जुट गई हैं, फलतः पुलिस का काम है कि वह उस पथ को भारत के नौ-जवानों की खोपड़ियों के उष्ण रक्त से सींच कर ठीक कर दे, ताकि धूल-धक्कड़ और गर्दोग़ुब्बार का कहीं नाम न रह जाय। इसीलिए कुछ नेता छोड़ दिए गए हैं, परन्तु धर-पकड़ भी जारी है। इससे शान्ति भी स्थापित हो जायगी और जेलख़ानों की रौनक़ भी क़ायम रह जायगी। इसलिए 'साँसति करि पुनि करहिं पसाऊ' वाली नीति कुछ बुरी नहीं !

❀

विलायत के प्रसिद्ध विद्वान सर फ़िलिप हार्टोग ने अपने एक व्याख्यान में कहा है कि भारत-सरकार उन स्कूलों को सहायता देना बन्द कर दे, जहाँ दलितों और अछूतों के लड़के नहीं पढ़ने पाते। लाहौल बिलाक़ूवत ! हमारी सुशीला सरकार भला, ऐसा गर्हित कार्य करके अपने परम प्रिय 'छूतों' को क्यों नाराज़ करने लगी ? ऐसा करके क्या वह अपना इहकाल और परकाल बिगड़वाएगी ?

❀

Registered No. A—2085

१,५००) रु० का आदर्श गुप्त दान

१,००० निर्धन स्त्री-पुरुषों को 'चाँद' ६॥) रु० की जगह

५) रु० में साल भर दिया जायगा

५०० निर्धन स्त्री-पुरुषों को 'भविष्य' ९) रु० की जगह

७) रु० में साल भर दिया जायगा

शपथपूर्वक केवल निर्धन स्त्री-पुरुष ही इस रियायत से लाभ उठावें

एक सुप्रसिद्ध दानी सज्जन ने, जिन्हें इस संस्था से अपार प्रेम है, हमारे पास १,५००) रु० इसलिए भेजे हैं, कि इनसे ऐसे व्यक्तियों को 'चाँद' तथा 'भविष्य' रियायती मूल्य पर दिए जावें, जो इच्छा रखते हुए भी, अपनी निर्धनता के कारण पूरा चन्दा नहीं दे सकते। इस दान से प्रोत्साहित होकर संस्था ने भी—केवल प्रचार की दृष्टि से, इस मद में १,०००) रु० की रियायत करना निश्चय किया है, अतएव १,००० निर्धन स्त्री-पुरुषों को ६॥) रु० के स्थान पर ५) रु० में ही साल भर तक (छः मास के लिए 'चाँद' रियायती मूल्य पर जारी नहीं किया जायगा, इसे स्मरण रक्खें) 'चाँद' जारी कर दिया जायगा।

इसी प्रकार ९) रु० के स्थान पर ७) रु० में ही ५०० निर्धन ग्राहकों के नाम साल भर तक 'भविष्य' भी जारी करने का निश्चय किया गया है (जो लोग छः मास के लिए मँगाना चाहें, उन्हें ४) रु० देना होगा, इसे स्मरण रक्खें)

देशवासियों से प्रार्थना है, कि परमात्मा को साक्षी देकर इस दान से केवल ऐसे भाई-बहिन ही लाभ उठावें, जो वास्तव में पूरा चन्दा देने में असमर्थ हों, नहीं तो अनेक निर्धन व्यक्तियों की हक़तलफ़ी होगी, एकमात्र जिनके लिए यह त्याग किया गया है।

रियायती मूल्य में 'चाँद' अथवा 'भविष्य' मँगाने वालों को अपना चन्दा मनीऑर्डर द्वारा भेजना चाहिए

वी० पी० नहीं भेजी जायगी

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad